आधुनिक साहित्य माला—१०

मैं भूल न सकूंगी

लेखिका की पुस्तक This I Remember का संक्षिप्त अनुवाद

एलेनोर रूज़वेल्ट

नई दिल्ली
आधुनिक साहित्य प्रकाशन

मूल्य एक रुपया आठ आने

प्रकाशक
आधुनिक साहित्य प्रकाशन,
पोस्ट बॉक्स नं० ६६४, नई दिल्ली।

मुद्रक
गोपीनाथ सेठ, नवीन प्रेस, दिल्ली।

एक

अगले कुछ वर्षों में मेरे पति और जिन व्यक्तियों के साथ उन्होंने काम किया है उनके सम्बन्ध में बहुत-सी पुस्तकें लिखी जायंगी। अतः जो-कुछ मुझे कहना है, यदि वह मेरे पति के जीवन, उनके चरित्र और उद्देश्यों पर कुछ अतिरिक्त प्रकाश डाल सके तो निश्चय ही उसे उनके व्यक्तिगत जीवन का वृत्तान्त होना चाहिए।

मैं यह दावा नहीं करती कि मैं उनके सम्बन्ध में सम्पूर्णतया बाह्यमुखी होकर लिख सकती हूँ, किन्तु कुछ ऐसी बातें मैं जानती हूँ जिन्हें मेरा विश्वास है अन्य कोई व्यक्ति नहीं जान सकता। दूसरे लोग फ्रैंकलिन के चरित्र के किन्हीं विशेष अंगों या उनके व्यक्तित्व के किसी विशेष स्वरूप को, हो सकता है, मुझसे अच्छी तरह जानते हों लेकिन जो-कुछ मैंने जाना है और जिसे मैं सत्य समझती हूँ यदि उसे मैं लिख सकी तो भावी इतिहासकारों के लिए मैं एक सच्चा चित्र अंकित करने में सहायक सिद्ध होऊँगी।

फ्रैंकलिन मुझे अक्सर अन्य व्यक्तियों के विचारों को प्रतिबिम्बित करने के लिए काम में लाया करते थे, क्योंकि वह जानते थे कि मैंने तरह-तरह के लोगों से मिलना और उनसे बातें करना अपना उसूल बना रखा था। न मेरे लिए दूर-दूर भाषण देने जाना आवश्यक था और न ही मुझे देश के विभिन्न भागों में होते हुए कार्यों का निरीक्षण करने जाना पड़ता था, लेकिन

मेरे पति जानते थे कि सिर्फ सरकार की ओर से मेहमान-नवाजी करके ही मैं सन्तुष्ट न होऊँगी। अक्सर उनकी राय हुआ करती कि मैं किन्हीं खास बातों में दिलचस्पी लूँ जैसे कि घरों को सुधारने से सम्बन्धित कार्य। वह जानते थे कि यदि मैं यह महसूस नहीं करती कि मैं वास्तव में कुछ कर रही हूँ तो मेरा जीवन बहुत नीरस हो जायगा।

अक्सर कई बार ऐसा होता कि जब वह किसी मसले पर अपने सलाहकारों के साथ जुटे होते तो खाना खाने के वक्त उसी सवाल को मेरे सामने पेश करते और मेरी राय जानना चाहते और अपना वह दृष्टिकोण बताते जिससे कि वह जानते थे कि मैं सहमत न होऊँगी। वे सारी दलीलें वह मेरे सामने रखते जो कि उनके सामने पेश की जा चुकी थीं और मै जोर-शोर से उन दलीलो का खण्डन करने की कोशिश करती।

प्रायः यह समझा जाता था कि मेरा अपने पति के ऊपर बहुत बड़ा राजनीतिक प्रभाव है। बार-बार लोग मुझे लिखते, और मेरे पति के किये हुए कार्यों और यहाँ तक कि कई पदों की नियुक्ति तक का श्रेय मुझे दिया जाता। कई बार ऐसी सूचियाँ प्रकाशित होतीं जिनमे उन लोगो का नाम प्रस्तावित किया जाता था जिन्हें सामूहिक अथवा व्यक्तिगत रूप में काम करना है और जब कभी इन सूचियों मे किसी स्त्री का नाम न होता तो मैं अपने पति से यह कह देती कि मैं उनको यह स्मरण कराते-कराते थक चुकी हूँ कि वह अपने मंत्रि-मण्डल और अपने सलाहकारों को यह याद दिला दें कि स्त्रियों का भी अस्तित्व है, कि वे राष्ट्रीय जीवन का एक अंग हैं जिनका क्रमशः राजनीतिक महत्व बढ़ता जा रहा है। वह हमेशा मुस्कराकर कहते : "ठीक है, मेरा खयाल था कि एक स्त्री का नाम सूची में होगा। क्या कोई यह खबर भिजवा देगा कि मेरे विचार में एक स्त्री को भी रखा जाना चाहिए।" फलतः कई बार मुझसे सुझाव पेश करने के लिए कहा जाता और तब मैं दो या तीन नाम बता देती। कई बार ये नाम स्वीकृत होते और कई बार अस्वीकृत।

जहाँ तक मेरे पति का सम्बन्ध है, जिस राजनीतिक प्रभाव का मुझे

श्रेय मिलता था वह नहीं के बराबर था, अधिकतर क्योंकि मैंने उस काम को करने का किंचित्मात्र भी प्रयास नहीं किया जिसको मैं जानती थी कि मैं नहीं कर सकती। अगर मैं किसी बात को बहुत जरूरी समझती थी तो फ्रैंकलिन से कह देती, क्योंकि आखिर किसी काम को करने की ताकत उन्हीं की थी, मेरी नहीं, लेकिन हमेशा वह मुझसे सहमत भी न होते थे।

बाद में मुझे पता चला कि बहुत-से सरकारी अधिकारी मेरे भेजे हुए पत्रों को ऐसा समझते थे मानो वे आज्ञा-पत्र हों, जिनमें लिखा हुआ काम तुरन्त ही हो जाना चाहिए। यह प्रत्यक्ष है कि उनका यह खयाल था कि अगर मेरा बताया हुआ काम न हुआ तो मैं अपने पति से उनकी शिकायत करूँगी। सच तो यह है कि मैं उनसे केवल इतनी ही आशा रखती थी कि जो काम किये जाने चाहिएं उन्हें करने में उन लोगों की दिलचस्पी हो, क्योंकि सरकार का काम जनता के हित की सेवा करना है।

जिन वर्षों में मेरे पति गवर्नर और प्रेसीडेण्ट के पद पर थे, विशेषतः उन दिनों जब कि हम ह्वाइट-हाउस में रहने लगे थे, मुझे कई अवसरों पर उस समस्या पर बहुत गौर से सोचना पड़ा था जिसका कि सामना अमरीकन सार्वजनिक जीवन में भाग लेने वाले व्यक्ति के परिवार को करना पड़ता है। विशेषतः ऐसे व्यक्ति के परिवार को, जो कि वाद-विवाद का विषय बन चुका हो, जिसे कुछ लोग दिली नफरत और दूसरे उतना ही प्रेम करते हों। अतः ऐसे व्यक्ति के प्रति बनी हुई धारणा उसके परिवार के सब सदस्यों पर कुछ-न-कुछ प्रभाव अवश्य डालती है। ऐसे व्यक्ति के परिवार के युवक सदस्यों के लिए स्थिति बहुत कठिन हो जाती है। सब तरह से उन्हें विशेष अधिकार प्रदान किये जाते हैं। यदि उन्हें वे स्वीकार नहीं करते तो उन्हें कृतघ्न एवं गुणागुण-ज्ञान-रहित समझा जाता है। और यदि वे उन्हें स्वीकार कर लेते हैं तो उन पर स्वार्थी, उद्दण्ड और लोलुप होने तथा अपने-आपको दूसरों से अधिक महत्व देने का अभियोग लगाया जाता है। वास्तव में उन पर वे सब अप्रिय बातें थोपी जाती हैं, जिन्हें हम युवक-युवतियों में होना कतई पसन्द नहीं कर सकते।

उदाहरण के लिए मुझे याद है कि मेरा पुत्र फ्रेंकलिन जूनियर, जब कि वह कॉलेज का छात्र था, अलबेनी और बोस्टन के बीच तेज़ रफ़्तार से मोटर चलाने के जुर्म मे गिरफ्तार किया गया। उसके पिता को और मुझे यही आशा थी कि उसके साथ ज्यादा-से-ज्यादा सख्ती से पेश आया जायगा ताकि कानून भंग करने के अनिवार्य परिणाम को वह जान सके, हालाँकि उसका अपराध बहुत गम्भीर न था। सबसे ज्यादा हम यह चाहते थे कि वह यह जान सके कि प्रजातन्त्रवाद में सब, समान रूप से नियम भंग करने से दण्ड के भागी होते हैं। मुझे याद है कि हमें कितनी घोर निराशा हुई जब हमें यह मालूम हुआ कि एक मामूली-सा जुरमाना अदा किये बिना ही वह छूट गया है। हम खूब अच्छी तरह जानते थे कि न तो उस नवयुवक ने सबक सीखा और न ही कोई यह विश्वास करेगा कि हमने अधिकारियों पर प्रभाव डालने का प्रयत्न नहीं किया।

वह परिवार, जिसके पाँचों बच्चे व्यक्तिवादी हों और जिनका पिता सार्वजनिक कार्यों में सम्पूर्णतया निरत हो और जिनकी दादी डेलानो की परम्परानुसार स्वयं को परिवार का प्रधान समझती हो—ऐसे परिवार में मेरा जीवन कभी भी नीरस नहीं हो सकता था।

हमारी मुश्किल सिर्फ यही न थी कि घर के बाहर एक ओर तो लड़कों को बहुत अधिक अधिकार प्रदान किये जाते थे और दूसरी ओर उनकी बहुत अधिक आलोचना की जाती थी, बल्कि एक मुश्किल यह भी थी कि मेरे पति की माँ अपने पोते-पोतियों को अति प्रेम करतीं और उन्हें अपनी ही सन्तान समझती थीं। अक्सर वह मुझसे इस बात पर नाराज होतीं कि मैं बच्चों को भले-बुरे का ज्ञान नहीं कराती थी। ऐसा न करने का कारण यह था कि मैं कभी भी यह अच्छी तरह न जान पाई थी कि मुझे स्वयं भी भले-बुरे का पूरा ज्ञान है।

फ्रेंकलिन जूनियर ने वह छोटी मोटर तोड़ डाली थी जो कि हमने उसे स्कूल पास करने के बाद दी थी, अतः हमने यही तय किया कि उसके लिए यही ठीक होगा कि कुछ समय तक वह बिना मोटर ही काम चलाय। लेकिन

हमें पता भी न चला और उसकी दादी ने उसे कहीं ज्यादा कीमत की एक नई गाड़ी दिला दी। जब हमने आपत्ति की तो उन्होंने बड़े विनीत भाव से कहा कि उन्हें मालूम न था कि यह बात हम नापसन्द करेंगे।

जॉन अपनी चीजों की ज्यादा परवाह करता था और उसकी माँगें भी कम होती थीं, क्योंकि वह शान्ति-प्रिय और अधिक अनुदार बालक था। वह कॉलेज के अपने प्रथम वर्ष में पोलो खेला करता था; लेकिन जब उसने यह महसूस किया कि वह यह खर्च नहीं उठा सकता तो उसने असन्तोष का प्रदर्शन किये बिना ही खेलना बन्द कर दिया। उसने सदैव चरित्र की दृढ़ता, बुद्धिमानी और अर्थ-सम्बन्धी कार्यों में योग्यता दरसाई है।

बच्चों की शिक्षा पूरी हो जाने के बाद उन्हें क्या करना चाहिए इस विषय में मेरे पति के कुछ अत्यन्त दृढ़ विचार थे। शिक्षा पूरी हो जाने से पूर्व उनका पारिवारिक जीवन और घर की चीजों पर अधिकार था, लेकिन मेरे पति का विचार यह था कि जैसे ही बच्चों की शिक्षा पूर्ण हो जाती है उन्हें खुद काम कर जीविका उपार्जन करना चाहिए।

जो रुपया मुझे अपने माता-पिता की सम्पत्ति से प्राप्त हुआ था वह आर्थिक संकट के वर्षों में कम होता गया जिसके परिणामस्वरूप मेरी वार्षिक आय बहुत कम हो चुकी थी; लेकिन १९३३ में न्यूयार्क छोड़ने से काफी पहले ही मैंने शिक्षण, लेखन और रेडियो-कार्य से रुपया कमाना शुरू कर दिया था। मुझे अब भी अपनी वह खुशी याद आती है जब मैं पहले-पहल स्त्रियों की ट्रेड यूनियन लीग को काफी आर्थिक सहायता दे पाई थी जिसके फलस्वरूप ट्रेड यूनियन का रहन रखा हुआ क्लबघर छुड़ाया जा सका और वाल-किल प्रयोग-सम्बन्धी हमारी कुछ योजनाएं कार्यान्वित की जा सकी थीं।

आर्थिक संकट के उन बुरे दिनों में व्यावसायिक रेडियो-कार्य की कमाई हुई पहली रकम से मैंने ऐसे दो स्थानों की स्थापना की जहाँ काम तलाश करने वाली बेकार युवतियाँ दिन का खाना पा सकतीं और आराम कर सकती थी। ऐसा पहला स्थान स्त्रियों की ट्रेड यूनियन लीग के क्लबघर में स्थापित किया गया और दूसरा मेडिसन एवेन्यू पर स्थित गर्ल्स सर्विस लीग के हेड-

क्वार्टर में। हम लड़कियों को दिन में गरम खाना और नाश्ता देते और सीने-पिरोने आदि की उन्हे सुविधाएं प्रदान करते थे। हमारे इस काम में बहुत-से लोगों ने दिलचस्पी लेना और मुझे तरह-तरह की चीज़ें भेजना शुरू किया और कइयों ने तो खाना बनाने, परसने और लड़कियों को सलाह देने तक का जिम्मा अपने ऊपर ले लिया था।

उन बुरे दिनों में लेखन और रेडियो-कार्य से मुझे इतनी अधिक प्राप्ति होती थी कि मेरे लिए न केवल संगठित दान-संस्थाओं की सहायता करना ही सम्भव था बल्कि ऐसे लोगों को भी मैं काम दे पाती थी अथवा उनकी सहायता करती थी जिन्हे मौजूदा तरीको से मदद नही मिल सकती थी। मैं इस बात से इन्कार नहीं करती कि अक्सर मैंने ऐसे व्यक्तियों की भी सहायता की जो कि सहायता पाने के योग्य न थे, लेकिन उन दिनों योग्य व्यक्तियों की सहायता न करने से यह खतरा मोल लेना ज्यादा अच्छा नज़र आता था। एक दो बार अपनी गलती महसूस करके अन्त में मैंने अमरीकन मित्र-सेवा-समिति के साथ ऐसा प्रबन्ध किया कि सारी पूछ-ताछ वे करते और रेडियो-कार्य द्वारा उपार्जित रुपया मैं उन्हें दे देती।

उन दिनों व्हाइट-हाउस में रहते हुए रेडियो-कार्य से अथवा थोड़ा-बहुत लिखकर जो रुपया मैंने कमाया उसे केवल दान में ही व्यय कर देना मैंने उचित न समझा। मैंने महसूस किया कि इस रुपये से मुख्यतः लोगों को अपने पैरों पर खड़ा करने में मदद देनी चाहिए और क्योंकि यही अमरीकन मित्र-सेवा-समिति की नीति थी इसलिए मैंने उन्हीं को अपना रुपया खर्च करने के लिए चुना। इस उपार्जित धन में से मैंने अपने किसी भी बच्चे को एक भी उपहार न दिया। कई मौकों पर मुझे अपने थोड़े-से मूल धन में से भी खर्च कर देना पड़ता था, क्योंकि मेरे द्वारा इतना अधिक दान दिया जा चुका होता कि बिना मूल धन से रुपया निकाले मैं आय-कर न दे सकती थी। उन वर्षों में मैंने एक भी पैसा न बचाया, क्योंकि ऐसा करना मैंने ठीक न समझा, और व्हाइट-हाउस छोड़ते समय मेरे निजी एकाउण्ट में वाशिंगटन जाने के पहले से कहीं कम पैसा था।

मेरे विवाह के समय मेरी वार्षिक आय २५,००० और ४०,००० रुपये के बीच में थी। फ्रैंकलिन यह जानते थे कि रुपये-पैसे रखने का मुझे ज्ञान नहीं है और वह यह भी जानते थे कि अपने बुजुर्गों की सम्पत्ति-सम्बन्धी मौजूदा प्रबन्ध में दखल देने का भी मेरा हक नही है। मेरी सम्पत्ति की देख-भाल मेरे परिवार के मुझसे बड़े लोग करते थे और मुझे सिर्फ एक नियत समय पर रुपया मिल जाता था। मेरी दादी ने मुझे मेरे माता-पिता के देहान्त के बाद पाला था। इक्कीस वर्ष की उम्र तक उन्होंने मुझे इतनी सख्ती से जेब-खर्च दिया कि जो-कुछ मुझे मिलता उसी में अपना निर्वाह करने की मैं आदी हो चुकी थी। मैंने यह कभी न सोचा कि अपनी पूँजी को अधिक लाभदायक कार्यों में लगाकर बढ़ाया जा सकता है। मुझे जो-कुछ मिलता था मैं उसी को स्वीकार करके अपना निर्वाह कर लेती थी।

जैसे-जैसे हमारे घरेलू खर्च बढ़ते गए, फ्रैंकलिन ने घर-खर्च चलाने का अधिकाधिक भार अपने ऊपर ले लिया। फ्रैंकलिन सब बच्चों को स्कूल छोड़ने से पहले तक उचित भत्ता भी देते थे। भत्ता पाने की उम्र से पहले मैं उनके और अपने लिए कपड़े भी खरीदती थी हालाँकि फ्रैंकलिन का विचार था कि भत्ता पाने के बाद से उन्हें खुद अपने कपड़े खरीदने चाहिएं ताकि वे रुपये का उपयोग करना सीख सकें। बीच-बीच में मुझे बच्चों को बनियान, कमीज और मौजे आदि के उपयोगी उपहार देकर उनकी रक्षा करनी पड़ती थी। यह आदत अभी तक चली आई है और अब भी वे मुझे तंग करते है।

हमारी पुत्री अन्ना के विवाह के बाद फ्रैंकलिन और उनकी माँ दोनों ने उसे भत्ते के बतौर कुछ रुपया देना तय किया और मुझसे जब बन पड़ता था, मैं भी छोटे-मोटे उपहार उसे दे देती थी। लेकिन मेरे पति के इस सिद्धान्त के फलस्वरूप कि जैसे ही लड़का शिक्षा पूरी कर ले उसका भत्ता बन्द हो जाना चाहिए, हमारे दोनों बड़े लड़कों जेम्स और एलियोट को शिक्षा समाप्त करते ही भत्ता दिया जाना बन्द कर दिया गया। अतः इन दोनों को तुरन्त ही जीविका-उपार्जन करना आरम्भ करना पड़ा। इससे

उनके जीवन में काफी उलझन पैदा हो गई, क्योंकि उन्हें छोटे पद से ऊपर उठने न दिया जाकर एक-साथ ऐसे काम में लगाया गया कि जहाँ से उन्हें रुपया बहुत ज्यादा मिलता था। और वे कम उम्र के अनुभवहीन लड़के थे, जो यह न जानते थे कि जो काम उन्हें मिले हैं वे उनके अपने नाम और अपने पिता के पद के कारण ही हैं।

फ्रैंकलिन की यह प्रबल इच्छा थी कि हमारे लड़के स्वयं अपने फैसले और गलतियाँ करें। जब कभी उनके मित्र उन्हें सलाह देते कि वे अपने लड़कों का थोड़ा-बहुत पथ-प्रदर्शन किया करें तो उनका हमेशा यही उत्तर होता था कि उन्हे अपना पथ स्वयं ढूँढना चाहिए। मेरा खयाल है कि उनके इस रुख का एक बहुत बड़ा कारण यह था कि उनकी माँ ने उनके प्रत्येक विचार और कार्य का निर्देशन करना चाहा था और उन्हें स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए लड़ना पड़ा था।

अपनी माँ के साथ के दीर्घ अनुभव के कारण फ्रैंकलिन का यह जरूरत से ज्यादा दृढ़ विचार था कि वे अपने लड़कों के जीवन में दखल न देंगे और यह भावना अब कार्य रूप में परिणत होने लगी थी।

मुझे अपने लिए थोड़ी-बहुत स्वतन्त्रता प्राप्त करने में फ्रैंकलिन से कहीं ज्यादा वक्त लगा, क्योंकि बचपन में मेरा जीवन सुरक्षित न था। आरम्भ में अपनी सास और पति द्वारा पाई हुई सुरक्षा बड़ी सुखकर प्रतीत हुई। क्रमशः मैंने जाना कि व्यक्ति के विकास के लिए किसी हद तक खुद सोचने और काम करने की आजादी जरूरी है; और क्योंकि मुझे खुद इस आजादी को पाने के लिए एक लम्बे और कभी-कभी तकलीफदेह रास्ते से गुजरना पड़ा था, मेरे मन में यह विचार घर कर चुका था कि बच्चों के बड़े हो जाने पर उन पर वह अंकुश नहीं रहना चाहिए जिसने मुझे इतने दिनों तक दबा रखा था। मुझे दुःख है कि मेरे लड़कों की बीवियाँ कई बार यह सोचती थीं कि मुझे उनमें कतई दिलचस्पी नहीं है, क्योंकि मैं उन्हे यह महसूस न होने देना चाहती थी कि मैं उनकी जिन्दगियों में दखल दे रही हूँ या अपने बच्चों से कुछ तकाजा करना चाहती हूँ जब कि उनके अपने अलग परिवार

थे। सम्भवतः इस नीति .को मैंने आवश्यकता से अधिक बरता और अब भी कभी-कभी बरतती हूँ।

जैसे-जैसे फ्रेंकलिन सार्वजनिक जीवन में व्यस्त होते गए उनके लिए लड़कों के हित के लिए समय निकालना असम्भव हो गया और लड़कों ने भी सलाह माँगना छोड़ दिया, जो कि यदि उनके पिता इतने व्यस्त न होते तो वे स्वभावतः माँगते। एक के बाद एक जेम्स और एलियोट ने कटु अनुभव प्राप्त किया, जो कि साथ ही एक सुखद भ्रान्ति का कटु अन्त था।

एलियोट कॉलेज में भर्ती नहीं हुआ, क्योंकि ग्रोटन में बीते हुए उसके जीवन के कुछ वर्ष उसे पसन्द न थे। ग्रोटन में उसे इसलिए रखा गया था कि मेरी सास और पति दोनों का यह मत था कि कहीं भी उसे क्यों न भेजा जाय अनुशासन उसे अप्रिय रहेगा; और फ्रेंकलिन का विश्वास था कि अनुशासन अप्रिय होते हुए भी बहुमूल्य चीज है, और मेरी सास की यह इच्छा थी कि परिवार की परम्परा नहीं भंग होनी चाहिए। अतः उसे जेम्स से भी कम उम्र में जीविका-उपार्जन के लिए निकलना पड़ा और फलतः अधिक कठिन समय व्यतीत करना पड़ा।

१९१३ में वाशिंगटन पहुँचने के बाद, जब कि मेरे पति जल-सेना के असिस्टेण्ट सेक्रेटरी के पद पर नियुक्त हुए, हम दो मकानों में रहते थे जो कि हमने सजे-सजाये किराये पर लिये थे। लेकिन उन्हें घर नहीं कहा जा सकता था—उन्हें सिर्फ एक माने में घर कहा जा सकता था और वह यह कि जहाँ कहीं भी परिवार साथ रहे वही घर है। मेरा खयाल है कि हमारे बच्चों में वह भावना कभी न आई जो कि सौभाग्यवश कुछ दूसरे बच्चों में किसी जगह लगातार रहने से उस जगह या उस मकान से लगाव की भावना आ जाती है।

दूसरे दोनों छोटे लड़कों के लिए जिन्दगी कुछ आसान थी क्योंकि एक बड़ी रियायत के बतौर मेरे पति अपनी मृत्यु तक उनको भत्ता देते रहे थे। फ्रेंकलिन जूनियर हारवर्ड से शिक्षा समाप्त करके विवाह करने के बाद कानूनी शिक्षा प्राप्त करने लगा, अतः वह रुपया न कमा सका; और क्योंकि जॉन ने

सौदागरी के व्यापार में नीचे से काम शुरू किया था अतः विवाह के बाद उसे खर्च चलाने के लिए कुछ रुपया चाहिए था। जल-सेना में भर्ती होने के बाद इन लड़कों ने अपने घर-खर्च का कुछ भाग देना चाहा, और क्योंकि इनको घर से कुछ रुपया मिलता था इसलिए इन्हें कमाने की इतनी सख्त ज़रूरत न थी और इसीलिए इनको वे दिक्कतें भी न उठानी पड़ीं जो कि उनके दोनों बड़े भाइयों ने उठाई थीं।

सम्भवतः यहाँ उस कल्पित बात को स्पष्ट कर देना अच्छा होगा जो कि कई बार मेरे पास पहुँच चुकी है कि हमारा सबसे छोटा लड़का जॉन युद्ध का विरोधी था और उसका विश्वास था कि अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े बिना युद्ध भी सुलझाये जा सकते थे, अतः वह सेना मे भर्ती होना न चाहता था। हरेक दूसरे युवक की भाँति, जिसे मैं जानती हूँ, वह भी हमारे देश पर आक्रमण होने से पूर्व युद्ध में भाग लेने को इच्छुक न था। वह मेहनत कर सन्तुष्ट था और अपने जीवन में ही व्यस्त था। लेकिन जैसे ही युद्ध छिड़ गया उसके लिए भी हमारे दूसरे लड़को की तरह अब और कोई सवाल न था। युद्ध के लिए जो-कुछ भी जरूरी था उसे करना ही था और न किसी ने युद्ध का विरोध किया और न अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को बिना युद्ध के सुलझाने की बात किसी ने सोची।

जैसे-जैसे ह्वाइट-हाउस का जीवन अधिकाधिक व्यस्त होता गया मेरे पति को पारिवारिक कार्यों के लिए कम समय मिलने लगा, और मुझे याद है कि लड़कों को कितना बुरा लगता था। जब उन्हें अपने पिता से किसी निजी काम के लिए मिलना होता तो उन्हें पहले से समय तय करना पड़ता था। एक बार एक लड़के ने यह सोचकर कि उसे अपने पिता से एक जरूरी बात कहनी है, उनसे मिलने का समय तय करवाया। मेरे पति हमेशा से दयालु और नम्र थे और जब वह लड़का उनसे मिलने गया तो वह हाथ में एक कागज़ लिये हुए पढ़ रहे थे, हालाँकि मालूम ऐसा होता था कि वह उसकी बात सुन रहे हैं। लड़के ने पूछा कि क्या वह उसकी बात सुन रहे हैं तो पिता ने उत्तर दिया, "हाँ", और जब बातचीत के दौरान मे थोड़ी देर

के लिए लड़का चुप हो गया तो उसके पिता ने अपने हाथ का काग़ज़ उसे थमाते हुए कहा : "यह एक बहुत जरूरी दस्तावेज़ है, मैं चाहता हूँ कि इस पर तुम अपनी राय दो।" मैं अन्दाज़ा लगा सकती हूँ कि लड़के ने ऐसा महसूस किया होगा कि मानो मुँह पर तमाचा पड़ गया है जिसका कि खयाल यह था कि जो-कुछ वह कह रहा है उससे ज्यादा जरूरी चीज़ दुनिया में और कोई नहीं हो सकती। उसने दस्तवेज़ को देखकर अपनी राय ज़ाहिर की और कमरे से बाहर निकल आया।

थोड़ी देर बाद ही वह रोषपूर्ण युवक मुझसे कह रहा था : "अब कभी मैं किसी निजी काम के लिए पिता जी से बात करने की कोशिश न करूँगा।" उसे यह समझाने में मुझे बहुत वक्त लगा कि उसने गलत वक्त चुना था और अब उसे दुबारा ठीक मौका ढूँढ़कर उनसे फिर बात करनी चाहिए और यह बड़े गर्व की बात है कि उसके पिता ने एक ऐसे मसले पर उसकी राय जाननी चाही थी जो कि सारे देश के लिए एक अहमियत रखता है। वह मेरे इस विचार को स्वीकार न कर सका।

अब कई बरसों बाद मैं देखती हूँ कि जो मुश्किलें लड़कों और अन्ना से बरदाश्त न हो पाती थी. वही अब उन्हें मामूली-सी नज़र आती हैं। अब वे जानते हैं कि कौन-सी चीजें महत्त्व रखती हैं, क्योंकि उनके दृष्टिकोण और मूल्यांकन करने की उनकी बुद्धि में परिवर्तन हो चुका है; और मेरा खयाल है कि अब पहले से कहीं ज्यादा वे अपने पिता के सार्वजनिक स्वरूप को महत्त्व देते हैं।

अपनी आत्म-कथा के प्रथम खण्ड के अन्त में मैंने १९२४ के डेमोक्रेटिक नेशनल कन्वेन्शन का उल्लेख किया है जो कि प्रेसीडेण्ट के पद के उम्मीदवार श्री जॉन डब्ल्यू० डेविस की हार और न्यूयार्क के गवर्नर के रूप में अलफ्रेड ई० स्मिथ की जीत के बाद हुआ था।

मेरे पति एक बार फिर मुख्यतः व्यापारी बन गए हालाँकि वह कभी भी सिर्फ एक काम में ही लगे न रह सकते थे। राजनीति, जो उन्हें बहुत प्रभावित करती थी, कुछ समय के लिए पीछे हट गई, लेकिन फिर भी ऐसा

एक क्षण भी न बीता जिसमें उन्होंने अमरीकन जनता और राजनीतिक स्थिति की हरेक बारीकी में दिलचस्पी न ली हो।

१६१० मे कार्टर, लेडयार्ड और मिलबर्न के कानूनी दफ्तर को छोड़ने के बाद और १६२१ की अपनी बीमारी तक वह प्रायः लगातार सार्वजनिक जीवन मे ही रहे। वह हमारे राज्य के पथरीले जिले से संसद् के लिए सदस्य चुने जा चुके थे और डेमोक्रेटिक नेशनल कन्वेन्शन में सक्रिय काम कर रहे थे जिसने उडरो विलसन को प्रथम बार प्रेसीडेण्ट के पद के लिए नियुक्त किया था। १६१३ में जल-सेना के असिस्टेण्ट सेक्रेटरी का पद पाकर फ्रैंकलिन ने लोगों का काफी ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। जल-सेना मे उन्हें शुरू से ही खास दिलचस्पी थी, अतः वह अपने नये पद के लिए पूर्णतया उपयुक्त थे। उन्होने और सेक्रेटरी जोसेफस डेनियल्स ने मिलकर बहुत अच्छा काम किया।

मेरा विश्वास है कि जल-सेना-विभाग में फ्रैंकलिन का कार्य उनके जीवन-पथ का एक प्रमुख चिह्न था। अगर वह चाहते तो आसानी से एक साधारण नवयुवक की तरह दिन का काम पूरा करने के बाद शाम को मेट्रोपोलिटन-क्लब में अपने दोस्तों से बातचीत करके वक्त काट सकते थे। लेकिन लुई होवे ने, जो हमारे साथ फ्रैंकलिन का सेक्रेटरी होकर वाशिंगटन आया था, तय किया कि यह फ्रैंकलिन के जीवन का ऐसा काल है जिसमें उन्हे कुछ नई बात सीखनी चाहिए। उसने इस बात पर जोर दिया कि फ्रैंकलिन को जल-सेना के बन्दरगाहो के मजदूरों की स्थिति को जानना चाहिए, जो कि जल-सेना-विभाग का उनका विशेष विषय था, और मजदूरों से सम्पर्क स्थापित करना चाहिए। और लुई होवे इस विषय मे उनकी दिलचस्पी पैदा करने में सफल हुआ। यह फ्रैंकलिन का मजदूरों के साथ प्रथम घनिष्ठ सम्पर्क था।

जल-सेना-विभाग मे काम करते हुए न्यूयॉर्क राज्य से वह संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की सीनेट के लिए खड़े हुए, लेकिन हार गए और १६२० में सान फ्रांसिस्को-कन्वेन्शन में उन्हें उप-प्रेसीडेण्ट और जेम्स ए० फॉक्स को प्रेसीडेण्ट के पद के लिए खड़ा किया गया। वह चुनाव लीग ऑफ नेशन्स

के प्रश्न पर लड़ा गया जिसके विरुद्ध पिछले वर्ष सीनेट अपना मत दे चुकी थी। सच तो यह है कि इस प्रश्न को देश के सम्मुख रखने के प्रयत्न के परिणामस्वरूप ही प्रेसीडेण्ट विलसन बीमार पड़े थे।

इस हार के बाद फ्रेंकलिन न्यूयार्क नगर में व्यापार करने लगे।

जब १६२३ में एडवर्ड बोक में ,शान्ति-पारितोषिक की घोषणा की तो फ्रेंकलिन ने शान्ति के संगठन पर एक लेख पेश किया। बाद के वर्षों में बातचीत के दौरान में फ्रेंकलिन अक्सर प्रथम बोक प्रतियोगिता में पेश की हुई अपनी शान्ति-योजना का जिक्र किया करते थे। मेरा खयाल है कि वह उन विचारों को कभी न भूले जो कि उन्होंने उस समय लिखे थे। इन्हीं विचारों के आधार पर उन्होंने बाद के वर्षों में विश्व-शान्ति की योजनाएं बनाईं। उनकी मूल योजना का ध्येय उन दोषों को दूर करना था जो कि लीग ऑफ नेशन्स की कार्य-प्रणाली में प्रत्यक्ष दिखाई देने लगे थे; बाद में उन्होंने नए विचारों के आधार पर अपनी मूल योजना को आधुनिकतम बना लिया था।

१६२४ से १६२८ तक फ्रेंकलिन के समय का अधिकांश भाग यह पता लगाने में निकला कि किस हद तक वह लकवे की बीमारी से मुक्त हो सकते हैं। १६२१ में जब हम कैम्पोबेलो में थे प्रथम बार इस रोग ने उन पर आक्रमण किया और उनके दोनों हाथों, बाँहों और टाँगों पर लकवे का आंशिक प्रभाव पड़ा। हाथों और बाँहो से वह पुनः पूरी तरह काम करने लगे और उनके शरीर का विकास भी हुआ, क्योंकि वह अपने चौड़े कंधे और बलिष्ठ बाँहों का निरन्तर प्रयोग किया करते थे; लेकिन उनकी टाँगें बेकार ही रहीं।

धीरे-धीरे कसरत करने और बन्धन बाँधने से वह चलने लगे, पहले बैसाखी के सहारे और फिर किसी के कन्धे पर झुककर बेंत के सहारे। पहले बँधन भारी थे, फिर उनके लिए हल्के बंधन बनवाये गए। लेकिन अपने बाकी जीवन में वह बंधन या किसी के सहारे बिना न चल सकते थे और न खड़े ही हो पाते थे, हालाँकि वह तैर सकते थे और पानी की पोलो भी खेल पाते थे।

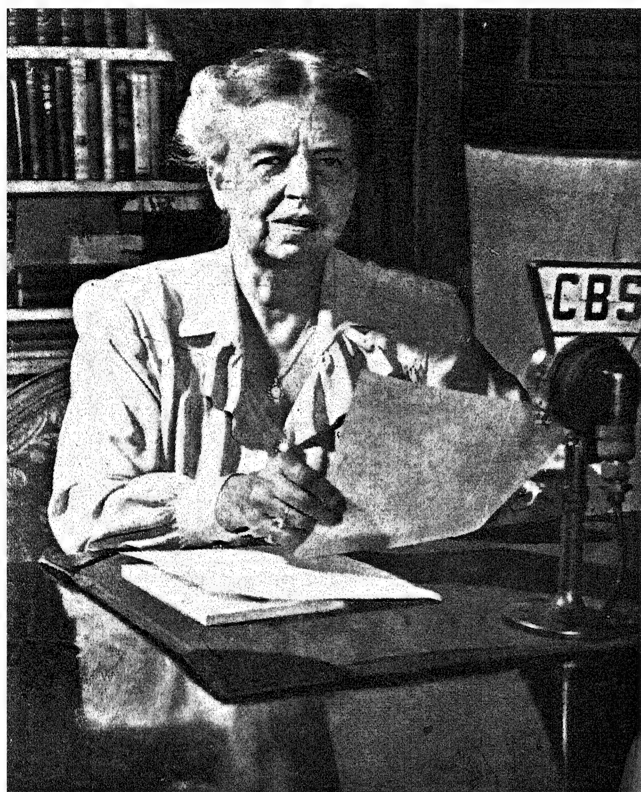
ऐसा शौक बन गया कि कई बरसों तक मैं हाइड-पार्क और वाशिंगटन में घुड़सवारी का आनन्द लेती रही।

वार्म स्प्रिंग्स के हमारे शुरू के दिनों में फ्रैंकलिन के साथ उनकी सेक्रेटरी, कुमारी लीहैंएड मुझसे अधिक समय तक रहीं। मेरे ऊपर चारों बच्चों—अन्ना, एलियोट, फ्रैंकलिन जूनियर और जॉन का भार था जो कि न्यूयार्क के हमारे घर में रहकर या हाइड-पार्क मे अपनी दादी के साथ रहकर स्कूल जाते थे। इसके अलावा मैं थोड़ा-बहुत राजनीतिक कार्य भी कर रही थी। राजनीतिक कार्य लुई होवे के प्रोत्साहन से अधिकतर किया गया था जो कि एक बार फिर मेरे पति का सेक्रेटरी और सहकारी बन गया था।

लुई कभी-कभी बीच-बीच में वार्म स्प्रिंग्स जाता था लेकिन न्यूयार्क में रहकर वह निरन्तर काम में लगा रहता था। मेरा खयाल है कि वह उन्हीं दिनों तय कर चुका था कि मेरे पति किसी-न-किसी दिन एक बार पुनः सार्वजनिक जीवन में पदार्पण करेंगे। अतः उसने अपनी योजनाएं इसी आधार पर बनाई थी और वह इस उद्देश्य-पूर्ति के लिए जिस किसी को उपयोगी समझता उससे काम लेता था।

फ्रैंकलिन के राजनीति में सक्रिय भाग लेने से पूर्व इन वर्षों में कई काम मैंने लुई होवे की सलाह से फ्रैंकलिन की दिलचस्पी बढ़ाने के लिए किये। डेमोक्रेटिक स्टेट कमेटी के स्त्री-विभाग में मुझे सिर्फ इसीलिए नहीं ढकेला गया था क्योंकि लुई को मेरे कार्यों में दिलचस्पी थी बल्कि इसलिए कि मेरे इन कामों से लोग-बाग घर में आयंगे और वे राज्य की राजनीति में फ्रैंकलिन की दिलचस्पी बनाये रखेंगे।

मेरा मुख्य कार्य स्त्री-विभाग के कामों के लिए रुपया इकट्ठा करना था। मैं आज भी इस कार्य को महत्वपूर्ण समझती हूँ क्योंकि यदि स्त्री-विभाग के पास अपना खुद का पैसा है तो वह अपनी योजनाएं बनाकर उन्हें कार्यान्वित कर सकता है। मैंने देखा है कि कई बार जो काम स्त्रियों द्वारा किया जाता है पुरुष उसे महत्वपूर्ण नहीं समझते, जो कि स्टेट कमेटियों के अध्यक्ष होते हैं। स्त्री-विभाग के लिए रुपया इकट्ठा करने और डेमोक्रेटिक स्टेट



लेखिका श्रीमती एलेनोर रूज़वेल्ट



लेखिका स्वर्गीय किंग जॉर्ज और रानी एलिज़ाबेथ के साथ बकिंघम पैलेस में

कमेटी के उप-प्रधान होने के अलावा मैं ऐसे प्रोग्रामों में भाग लेती थी जो कि बीच-बीच में स्त्रियों और युवक-युवतियों को आकर्षित कर सके। बाद में लुई होवे की सहायता से मैं एक छोटे-से मासिक पत्र का सम्पादन करने लगी थी। डेमोक्रेटिक स्टेट कमेटी के स्त्री-विभाग में मैंने कुल मिलाकर छः वर्षों तक काम किया।

उन राजनीतिक कार्यक्रमों में हम सबने खूब काम किया। संगठन-कार्य मुख्यतः मेरा ही किया हुआ था और मैंने एक बार फिर लुई होवे की मदद से कई खास तौर पर नये काम किये। उदाहरण के लिए १६२४ में, रिश्ते मे मेरे भाई थियाडोरे रूजवेल्ट जूनियर के खिलाफ, जो कि हार्डिङ्ग शासन-काल में जल-सेना के असिटेण्ट सेक्रेटरी रह चुके थे, अल्फ्रेड ई० स्मिथ खड़े हो रहे थे। उन्हीं दिनो चाय की केटली वाली निन्दनीय घटना होकर चुकी थी जिससे जनता मे बड़ी उत्तेजना थी, हालाँकि इस घटना से थियोडर रूजवेल्ट जूनियर को कोई वास्ता न था। इस घटना का लाभ उठाकर हमने चाय की केटली का एक बड़ा ढाँचा बनाया और उसे मोटर के ऊपर रखकर उनका एक जलूस निकाला जो कि राज्य के गवर्नर-पद के रिपब्लिकन उम्मीदवार के पीछे हर जगह रहता था।

लुई ने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि मुझे भाषण देना सीखना चाहिए; यहाँ तक कि वह मेरे भाषणों को पीछे की बेंच पर बैठा सुनता रहता और बाद में मेरी गलतियाँ बताता। एक बार उसने मुझसे पूछा कि भाषण के दौरान मैं एक खास जगह मैं क्यों हँसी थी। "मुझे नहीं मालूम कि मैं हँसी थी, हँसने का कोई कारण तो नहीं था," मैंने कहा। "यह तो मुझे भी मालूम है कि हँसने का कोई कारण न था", लुई ने कहा, "तो फिर उस मूर्खतापूर्ण खिलखिलाहट का क्या अर्थ था।"

आरम्भ में मुझे भाषण देना बहुत कष्टकर प्रतीत होता था। लुई का यह खयाल था कि अगर मैं इस प्रकार पार्टी के लिए उपयोगी प्रमाणित न हो सकी तो पार्टी के नेता मेरा ज्यादा खयाल न करेंगे।

दो

मेरे पति की किसी एक ऐसे उद्योग को स्थापित करने की बहुत बड़ी इच्छा थी जो कि हमारे-जैसे देहाती इलाकों में विकसित हो सके और जिससे नवयुवकों को काम मिल सके जो कि नही तो खेती-बाड़ी का काम छोड़कर चले जाते थे। जिस समय खेती के काम मे मन्दी हो उस समय इन नवयुवकों को किसी ऐसे काम में लगाने मे, जिससे उनको खासी-अच्छी आय हो जाय, फ्रेंकलिन का विचार था कि हम नवयुवकों के प्रगतिशील सक्रिय दल को इस प्रकार काम में लगाकर अपने इलाके के कृषि-विकास का स्तर ऊँचा कर सकते हैं।

फ्रेंकलिन वरमोण्ट की एक छोटी बस्ती का हाल सुन चुके थे जहाँ के लोगों को अपने घर और देहात बहुत प्रिय थे, लेकिन जो कि अपने खेतों से पूरी आमदनी नही कर पाते थे। एक उत्साही नागरिक कुछ समय के लिए घर छोड़कर चला गया और जब वह लौटा तो उसने लकड़ी की कुछ ऐसी किस्मे बताई जो कि आसानी से वहाँ मिलती थी और जिनसे कोई खास उद्योग आरम्भ किया जा सकता था। उन्होंने एक छोटा कारखाना खोला और सर्दी के महीनों में लकड़ी के दस्ते और खाना पकाने के कई खास बर्तनों की मूठ वे बनाने लगे और एक बड़े कारखाने वाले की मदद से वे उन्हे बेचते। इन दस्तों और मूठों को बड़ी तादाद में बनाकर उन्होंने अपने

रहन-सहन का स्तर भी ऊँचा किया और अपने खेतों और घरों में ही वे रहे, जो कि उन्हें बहुत प्रिय थे।

इस नये प्रयोग ने मेरे पति को यह पता लगाने के लिए उत्सुक बना दिया कि क्या हमारे इलाके में भी इसी प्रकार का कोई काम शुरू किया जा सकता है। उन्हें अपनी भूमि से बहुत प्रेम था और वह उसकी उन्नति होते देखना चाहते थे; लेकिन वह यह जानते थे कि अधिकांश किसान अपने लड़कों को खेती के काम से रोकने के लिए असमर्थ थे, क्योंकि सख्त मेहनत के बाद भी पैसा बहुत कम मिलता था। अतः वह आस-पास के युवकों को काम सिखाकर काम में लगाना चाहते थे। यह जरूरी था कि हमें कुछ काम सीखे हुए लोग मिलें और सौभाग्यवश हमें कुछ ऐसे बहुत ही अच्छे बढ़ई मिल भी गए जो इटेलियन और नार्वेजियनों के वंशज थे।

हमने देखा कि हमारे कारखाने में काम सीखा हुआ कोई भी युवक, जिसे वहाँ खेती से ज्यादा आमदनी होती थी फिर लौटकर गर्मियों में खेत पर काम करना पसन्द न करता था क्योंकि यहाँ उसे अच्छा वेतन मिलता और साथ ही काम के घंटे भी नियत होते थे।

यह ठीक है कि मन्दी के वर्षों में, जब कि काम मिलना मुश्किल था, शहरों और कस्बों से बहुत-से मजदूर खेतों पर लौट जाते, लेकिन जैसे ही कारखानों और दूसरे व्यवसायों में काम मिलने लगते आसान जिन्दगी और ज्यादा आमदनी की तलाश में युवक निकल पड़ते। ऐसा करने में अक्सर उनकी पत्नियों का हाथ होता था, क्योंकि वे यह समझती थीं कि खेत पर उन्हें और उनके पतियों को ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है।

हमारा कारखाना आर्थिक संकट के आरम्भिक वर्षों में भी लगातार चलता रहा जब कि रोजगार पाना जनता के लिए अति आवश्यक था।

१९२८ की वसंत-ऋतु में जब कि ऐसा प्रतीत होता था कि डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर से प्रेसीडेण्ट के चुनाव के लिए गवर्नर स्मिथ खड़े किये जायंगे, श्रीमती बेली मास्कोविट्ज ने मुझसे राष्ट्रीय आंदोलन के लिए पार्टी के स्त्री-विभाग को संगठित करने के लिए आग्रह किया।

उसी जून के महीने में मेरे पति अपने पुत्र एलिनोट के साथ हाउस्टन, टेक्साज़ में होने वाले डेमोक्रेटिक नेशनल-कन्वेन्शन मे भाग लेने गए। यह देखकर मुझे सान्त्वना मिली कि मेरे पति टेक्साज़ की गरमी बखूबी बरदाश्त करके खुशी-खुशी हाइड-पार्क लौटे। वह इस बात से खुश थे कि अलफ्रेड ई० स्मिथ के चुनाव में उनका बहुत बड़ा हाथ था।

राजनीतिक दृष्टि से मैं और फ्रेंकलिन दोनो गवर्नर स्मिथ का समर्थन बहुत दिनो से करते आए थे क्योंकि हम उनके सामाजिक प्रोग्राम से सहमत थे; हमे विश्वास था कि वह औसत स्त्री-पुरुष की भलाई चाहते है। फ्रेंकलिन को याद आया कि किस प्रकार न्यूयार्क में १६११ के ट्राइएंगिल-अग्नि-काड के बाद गवर्नर स्मिथ ने हमारे राज्य मे कारखानों में काम करने वालों के लिए बेहतर कानूनों की माँग पेश की थी। यह अग्नि-कांड एक भीषण दुर्घटना थी जिसमें आग से बचाव के साधन न होने के कारण बहुत-सी लड़कियाँ और औरतें जलकर मर गई थीं।

हालाँकि क्योंकि गवर्नर स्मिथ ने अपने जीवन का अधिकांश भाग एक ही राज्य में और प्रायः एक ही नगर में व्यतीत किया था इसलिए उनमें कई त्रुटियाँ भी थीं, लेकिन फिर भी हमने यह महसूस किया कि वह जनता की आवश्यकताओं को खूब समझते हैं और शासन-कार्य में बहुत प्रवीण है। हमने उनकी नेक नीयती पर कभी अविश्वास नहीं किया था। उनकी स्मरण-शक्ति अद्‌भुत थी और उनके बोलने का तरीका, खास तौर पर उनके अपने राज्य में, और जैसा कि वह खुद जानते थे, बहुत ही प्रभावशाली था।

फ्रेंकलिन ने महसूस किया कि इस कार्य में वह बहुत ज्यादा मदद न दे सकेंगे, लेकिन फिर भी वह अक्सर दफ़्तर आते, क्योकि वह व्यापारी-विभाग के प्रधान भी थे और कई सभाओं में भाग भी लेते और भाषण भी देते थे। उन्होंने इस कार्य में पूरा समय लगाने के लिए अपने सेक्रेटरी लुई होवे को अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया था।

भाषण देना मेरे लिए अभी तक एक दूभर कार्य था, अतः यह मान लिया गया था कि मेरा काम केवल कार्यालय का संगठन, चिट्ठी-पत्री देखना,

बाहर से आने वाली स्त्रियों से मिलना आदि था, जिसका अर्थ था कि मुझे साधारणतया सब जगह उपयोगी सिद्ध होना है। एक-दो बार जब कभी वक्ता-गण नियत समय पर न पहुँचते तो मुझे उनका स्थान लेने के लिए कार्यालय से कुछ समय के लिए निकलना पड़ता था।

यद्यपि मैं स्कूल में पढ़ाने का और साथ ही न्यूयार्क नगर के राष्ट्रीय चुनाव-कार्य के प्रधान केन्द्र में काम करती थी लेकिन फिर भी पतझड़ के मौसम में रॉचेस्टर मे होने वाले न्यूयार्क-राज्य के डेमोक्रेटिक सम्मेलन मे मैंने भाग लिया। यहाँ इस बात का उल्लेख करने का तात्पर्य यह है कि मैं यह बता सकूँ कि किस प्रकार मेरे पति को गवर्नर-पद का उम्मीदवार बनने के लिए तैयार किया गया।

जिस दिन चुनाव के लिए नाम तय किये जाने वाले थे, नेशनल डेमोक्रेटिक कमेटी के प्रधान जॉन जे० रेसकॉब और गवर्नर स्मिथ ने दोपहर में मुझे बातें करने के लिए बुलाया। यह कोई आश्चर्य की बात न थी— क्योंकि मैं सुन चुकी थी कि गवर्नर स्मिथ मेरे पति को चुनाव के लिए खड़ा करना चाहते हैं लेकिन मेरा खयाल था कि फ्रैंकलिन को, जो कि उन दिनों वार्म स्प्रिंग्स में थे, वहीं रहकर अपना इलाज करना चाहिए। उन लोगों ने मुझे बताया कि वे बहुत चाहते हैं कि फ्रैंकलिन चुनाव लड़ें और उन्होंने यह भी पूछा कि क्या ऐसा करने से उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। मैंने कहा कि मैं कह नही सकती, लेकिन डॉक्टरों का कथन है कि यदि वह वार्म स्प्रिंग्स में रहकर व्यायाम करते और तैरते रहें तो उनकी सेहत सुधर सकती है। एक बार हँसते हुए स्वयं मेरे पति ने कहा था कि चलने-फिरने के लायक वह तभी हो सकते हैं जब कि वह बहुत दिनों तक जीवित रहें, लेकिन उनकी अवस्था में उन्नति इतनी धीमी थी कि कई बार मुझे सोचना पड़ता था कि क्या इससे ज्यादा भी उन्नति होनी सम्भव है?

अन्त में जब गवर्नर स्मिथ, और श्री रेसकॉब से मेरी बातें हो चुकी तो उन्होने पूछा कि क्या मैं टेलीफोन पर फ्रैंकलिन से यह पूछना पसन्द करूँगी कि क्या वह गवर्नर के पद के लिए खड़ा होने को तैयार हैं? आखिर उनके

फाउण्डेशन में वापस लौटने के बाद उनसे टेलीफोन पर मैं बात कर सकी। उन्होंने जाहिरा तौर पर खुशी के साथ कहा कि वह दिन-भर बाहर थे और, अगर मैं बार-बार टेलीफोन न करती तो उनसे बात न कर पाती। मेरे पास केवल इतना भर कहने को समय था कि मैंने श्री रेसकॉब और गवर्नर स्मिथ के आग्रह करने पर उन्हें टेलीफोन किया है और अब मैं उन्हे गवर्नर स्मिथ से बात करने के लिए छोड़ रही हूँ, क्योंकि मुझे ट्रेन पकड़नी थी। और यह कहकर मैं दौड़ पड़ी। अपना असबाब लेकर ट्रेन पकड़ने के लिए कमरे से बाहर निकलते वक्त गवर्नर स्मिथ के कहे हुए यह शब्द, 'हैलो, फ्रैंक,' मुझे अभी तक याद हैं। जब दूसरे दिन सुबह मैंने अखबार खरीदा तभी जाकर मुझे मालूम हुआ कि मेरे पति को चुनाव मे खड़े होने के लिए राजी कर लिया गया है। इसके बाद मैंने उन्हें फिर कभी यह कहते नहीं सुना कि उन्हे अपने फैसले पर रंज है। तय कर लेने के बाद उन्होंने अपने दिमाग से और दूसरी संभावनाएं हमेशा के लिए दूर कर दी।

तुलनात्मक दृष्टि से मुझे १६२८ के गवर्नर के पद के चुनाव के बारे में बहुत कम पता है। क्योंकि मैंने राष्ट्रीय कार्यालय में काम करना शुरू कर रखा था इसलिए मेरे पति का खयाल था कि मेरा वहाँ काम करते रहना जरूरी है और इस काम में मेरा अधिकांश समय व्यतीत होता था। कभी-कभी मैं उनका भाषण सुनने जरूर जाती थी। उन्होने सारे राज्य में चुनाव के लिए पूरा काम कर रखा था। मेरा खयाल है कि उन्हें यह उम्मीद न थी कि यदि प्रेसिडेण्ट के पद के लिए गवर्नर स्मिथ हार गए तो वह खुद गवर्नर के पद के लिए जीत सकेंगे और जब हम चुनाव की रात को राज्य के प्रधान कार्यालय से बहुत देर में लौटे तो हम चुनाव के परिणाम के बारे में अनिश्चित ही थे। दूसरे दिन सुबह जब नतीजा निकला तो मेरे पति बहुत थोड़े वोटों से गवर्नर चुने जा चुके थे। मेरा खयाल है कि उनकी यह भावना थी कि यह उन्हें एक बहुत बड़ा सम्मान प्राप्त हुआ है, जब कि गवर्नर स्मिथ इतने अधिक समर्थकों के होते हुए भी हार गए थे।

राज्य के शासन के सम्बन्ध में फ्रैंकलिन के बड़े सुलझे हुए विचार थे।

उन्होंने पुनःसंगठन की उन योजनाओं का अध्ययन किया जो कि गवर्नर स्मिथ के जमाने में शुरू की गई थीं और मेरे विचार में गवर्नर स्मिथ के किये हुए प्रायः प्रत्येक कार्य को उन्होने स्वीकार किया। उन उद्देश्यों के प्रति फ्रेंकलिन का रुख, जो कि बाद में राष्ट्रीय पैमाने पर विकसित किया गया, उसी समय स्पष्ट हो चुका था जब कि उन्होने अपने राज्य के प्रश्नों को हल करना चाहा था। उदाहरण के लिए उन्होने वृद्धावस्था वाले व्यक्तियो के लिए पेन्शन का नियम आरम्भ किया।

गवर्नर के रूप में उन्होंने मजदूरों में दिलचस्पी और उनके अधिकारों मे अपने विश्वास का प्रदर्शन किया। उनके विचार में मजदूरों के अधिकारों को वही स्थान प्राप्त होना चाहिए था जो कि मालिकों के अधिकारों को प्राप्त होता था; और संकट-काल में यह नीति कि जनता के प्रति सरकार का उत्तरदायित्व है, राज्य की राजनीति का अंग बन जानी चाहिए थी। फ्रेंकलिन पर यह आरोप लगाया गया है कि उन्होने मजदूरों को बहुत ज्यादा शक्ति दे दी, लेकिन उनका प्रयत्न केवल यही था कि श्रम और पूँजी की शक्ति समान हो जाय। इतिहास का बड़े गौर से अध्ययन करने के कारण वह अच्छी तरह जानते थे कि कुछ पिछले शासनों में पूँजी की शक्ति कितनी अधिक और अबाध रही है।

खास तौर पर उनकी अपनी निजी दिलचस्पी जमीन और जंगलात के सुधार में थी। लेकिन एक राज्य के शासक होने के नाते जल-शक्ति का विकास, इंडियन समस्या, यातायात की समस्याएं, शिक्षा और अन्त में सर्वसाधारण के हितों मे उनकी दिलचस्पी को प्रोत्साहन मिला। इन उद्देश्यों और इन उद्देश्यों की उनकी समझ का विकास उनके प्रेसीडेण्ट बनने पर हुआ। और क्योंकि प्रेसीडेण्ट बनने से पूर्व ही वह इतना अधिक भ्रमण कर चुके थे कि उन्हें ज्ञात था कि देश के विभिन्न भागों की कितनी भिन्न समस्याएं हैं। यह सब आने वाले वर्षों के लिए एक बहुत ही अच्छी तैयारी थी।

एक बार फिर सार्वजनिक पद पाकर फ्रेंकलिन की राजनीतिक दिलचस्पी और आकांक्षाएं पुनः जाग्रत हो उठी। मेरा विश्वास है कि जब फ्रेंकलिन

ने यह मालूम किया कि वह फिर राजनीति मे सक्रिय भाग ले सकते हैं तो उन्होने संघर्ष के केवल राजनीतिक अंग से संतोष प्राप्त करना शुरू किया। एक राजनीतिक पद से दूसरा पद पाने मे उन्हें सन्तोष था। एक ओर उनकी अपनी राजनीतिक आकाक्षाएं तथा उनका विशुद्ध राजनीति से आनन्द प्राप्त करना और दूसरी ओर राजनीतिक कार्य से पहले अपने राज्य, फिर राष्ट्र, और अन्त में विश्व को लाभान्वित करने की उनकी इच्छा को अलग-अलग करके देखना कठिन है। उनके ध्येयों का विकास परिस्थितियों द्वारा विकसित आवश्यकताओं के साथ-साथ हुआ और जैसे-जैसे समय बीत गया क्षितिज वृहत् होता गया, और हम अपने राष्ट्र के रूप मे उस स्थिति पर पहुँच गए जब कि सारा संसार हम पर निर्भर करने लगा।

अलबेनी (न्यूयॉर्क की राजधानी) मे किया हुआ कार्य भावी कार्य की पृष्ठभूमि के रूप में बहुमूल्य सिद्ध हुआ। वहाँ उन्होने विधान-दलों के साथ कार्य करने का अनुभव किया जब कि उनका राजनीतिक दल अल्पमत में था। बाद में अक्सर मैं यह चाहती थी कि वाशिंगटन मे वह डेमोक्रेटिक प्रतिनिधियों के साथ उसी प्रकार का शिक्षा-प्रधान कार्य करें जैसा कि वह अलबेनी में कर चुके थे, यद्यपि यहाँ उनका दल बहुमत मे था।

अलबेनी मे किये हुए कार्य का प्रतिबिम्ब भविष्य में अंकित हो चुका था। बहुत-से प्रयोग के रूप मे किये हुए कार्य जो कि बाद मे राष्ट्रीय योजनाओ में सम्मिलित होने वाले थे। पहले न्यूयार्क में आजमाए जा चुके थे। यह फ्रेंकलिन के राजनीतिक दर्शन का एक अंग था—जिसे कि बार-बार मैंने उनसे सुना था—कि अड़तालीस राज्यो के होने का एक बड़ा लाभ यह है कि किसी भी योजना को राष्ट्रीय पैमाने पर आरम्भ करने से पूर्व उसे छोटे पैमाने पर आजमाना सम्भव है।

अपने पति के गवर्नरशिप के वर्षों मे मेरा जीवन भी अत्यन्त व्यस्त रहा। स्कूल में पढ़ाने के अपने काम को पहली बार मैंने महसूस किया कि मैं नही छोड़ना चाहती थी। अतः मैंने स्कूल को छुट्टियों के अलावा प्रत्येक सप्ताह के कुछ दिन न्यूयार्क में व्यतीत करने का कार्यक्रम बनाया। अब मैं सोचती

हूँ कि यह मैंने मूर्खतापूर्ण काम किया, क्योंकि गवर्नर की पत्नी होने के नाते मुझे कार्यकारिणी-सदन में मेहमान-नवाजी और अन्य आवश्यक कार्य पूरे करने पड़ते थे और इस प्रकार मुझे सरकारी कार्यक्रम के अतिरिक्त अलवेनी के लोगों से मिलने-जुलने और उनसे वास्तविक मैत्री करने का अवकाश न मिलता था।

मेरे पति को जल से प्रेम था और उन्हें मालूम हुआ कि न्यूयार्क-राज्य के पास एक छोटी नाव है जो कि मुआयने के दौरे करते वक्त सरकारी अधिकारी नहर में चलाने के लिए काम में लाते हैं। उन्होंने गर्मियों में इसी काम के लिए इस नाव का खुद इस्तैमाल करना तय किया। फ्रेंकलिन को इन दौरों से आराम मिलता था और कभी-कभी हम अपने साथ अपने लड़कों को भी ले जाते थे। सरकारी अधिकारी और राज्य की पुलिस के अधिकारी एक जगह से दूसरी जगह हमारे पीछे रहते थे। दिन के वक्त हम नाव छोड़कर राज्य की विभिन्न संस्थाओं का निरीक्षण करने जाते थे। मेरे लिए यह एक बहुमूल्य शिक्षा थी। मैं कई बार पहले भी राज्य की जेलों, पागलखानों और पंगु बालकों के अस्पतालों में हो आई थी, लेकिन इससे पहले कभी भी मेरा इरादा इन संस्थाओं की कार्य-प्रणाली या अच्छी-बुरी बातों का जाँचना न था।

प्रत्येक संस्था का अध्यक्ष, जिसका हम निरीक्षण करने जाते, मेरे पति के साथ मोटर में बैठकर निकलता और बताता कि किन नई इमारतों की ज़रूरत है और वे कहाँ बननी चाहिएं। इस प्रकार मेरे पति को प्रत्येक संस्था के बाहरी अंग का ज्ञान हो गया जिससे कि उनको वैधानिक विनियोग समिति के कार्यों में बहुत सहायता मिली।

उनके लिए चलना-फिरना इतना कठिन था कि वह किसी संस्था के भीतर जाकर यह न देख पाते थे कि कितने रोगी हैं, इलाज और खाने-पीने का कैसा प्रबन्ध है या कैसे कार्यकर्ता हैं। निरीक्षण के इस भाग का उत्तर-दायित्व मुझ पर पड़ता और आरम्भ में मेरी रिपोर्टें उन्हें सम्पूर्णतया असन्तोष-जनक प्रतीत होती थीं। मैं बताती कि उस दिन मरीज़ों को क्या खाना मिलने

वाला था तो वह पूछ बैठते कि "क्या तुमने यह देखा कि मरीजों को दर-असल यही खाना मिल रहा था?" अतः मैं खाने के बर्तनों में झाँककर यह देखना सीख गई कि सूची में लिखी हुई भोजन-सामग्रियों से मरीजों को मिलने वाला असली भोजन मिलता है या नहीं; मैं यह भी देखना सीख गई कि बिस्तरे कितने पास-पास बिछे हुए हैं; कि दिन के वक्त बिस्तरों की तह करके कोठरियों में या दरवाजों के पीछे उन्हें रख गया है, जिसका अर्थ था कि रात को बिस्तरों से सारा दालान भर जाता होगा; कार्यकर्ताओं के प्रति रोगियों के रुख को समझना भी मैंने सीखा और अलबेनी में अपना समय पूरा होने से पूर्व ही मैं राजकीय संस्थाओं के निरीक्षण करने में काफी प्रवीण हो चुकी थी।

१९३० के निर्वाचन तक बिना बाधा-विघ्न के मैं अपने बच्चों की माँ, गवर्नर की पत्नी, और स्कूल की शिक्षिका के रूप में अपने दैनिक जीवन के कार्यक्रम में व्यस्त रही। लेकिन यह एक बहुत आसान चुनाव था और मेरे खयाल में फ्रैंकलिन के समर्थकों को यह देखकर सन्तोष हुआ कि उस समय तक के ऐसे राजकीय चुनाव में किसी भी डेमोक्रेट ने फ्रैंकलिन से ज्यादा वोट न पाये थे। इस परिस्थिति का दुतरफा फायदा हुआ—एक ओर तो अपने राज्य में फ्रैंकलिन की शक्ति बढ़ी और दूसरी ओर प्रेसीडेण्ट के पद के चुनाव के लिए उन्हें खड़ा किये जाने की सम्भावना बढ़ी। इस सम्भावना में मुझे विशेष दिलचस्पी न थी, लेकिन उनके राजनीतिक समर्थकों को यह सम्भावना बहुत भाती थी।

फ्रैंकलिन ने मुझे यह न बताया कि कब उन्होंने प्रेसीडेण्ट के पद के लिए चुनाव में खड़ा होना तय किया, लेकिन मुझे लुई होवे से पता चला कि वह बहुत पहले यह तय कर चुका था और इस दिशा में अपने तरीके से रास्ता भी बना रहा था।

यह लुई होवे ही था कि जिसने कन्वेन्शन के पूर्व के कार्य का खाका खींचा था। इस कार्य की नीति और कार्य करने वालों को चुनने की जिम्मे-दारी पूर्णतया लुई होवे पर ही आ पड़ी। हालाँकि वह अपनी योजनाओं

पर फ्रैंकलिन के साथ विचार-विनिमय कर लेता था, किन्तु काम सारा उसका ही किया हुआ था। उसे अपनी परिमितता का भान था जो कि उसकी शारीरिक शक्ति और नाटे कद के कारण उसके व्यक्तित्व को बाँधे हुई थी और वह यह भी खूब अच्छी तरह जानता था कि उसे पृष्ठभूमि मे रहकर पुतलियों को नचाना बहुत भाता है। उसे शक्ति प्राप्त करना प्रिय था, लेकिन वह यह बात केवल थोड़े-से लोगों को जताता था और अधिकतर गुमनाम रहना ही वह बेहतर समझता था।

फ्रैंकलिन अपने सम्पूर्ण जीवन में औरत मर्द, औरत और बच्चे का जीवन सुधारने के अपने मूल उद्देश्य से कभी नही डिगे। हजारों तरीके काम में लाये गए, मुश्किलें पैदा हुईं, तबदीलियाँ हुईं लेकिन जो-कुछ भी किया गया इस उद्देश्य-पूर्ति के लिए ही किया गया। अन्त में युद्ध को रोकने की अपनी सारी कोशिशो के बावजूद भी युद्ध लड़ना ही पड़ा, क्योकि घटना-चक्र की अबाध गति ने यह स्पष्ट कर दिया था कि केवल युद्ध से ही फासिज़्म का अन्त किया जा सकता है। यहूदियों का उत्पीड़न उन सब लोगो के उत्पीड़न की शुरूआत थी जिनका कि फासिस्ट नेताओं से मतभेद था। साधारण मनुष्य की सब स्वतन्त्रताएं लोप हो जातीं और उनके लोप हो जाने से वे उद्देश्य भी विलीन हो जाते जिनमें फ्रैंकलिन और लोकतन्त्रीय राष्ट्रों के अन्य व्यक्तियों का विश्वास था।

फ्रैंकलिन का हमेशा यह विश्वास था कि प्रेसीडेण्ट को अपने-आपको जनता की आशा-पूर्ति का साधन समझना चाहिए लेकिन प्रेसीडेण्ट के रूप में उसका यह कर्तव्य हो जाता है कि वह जनता की समस्याओं पर प्रकाश डाले और उनका नेतृत्व करे। मेरा खयाल है कि महान् संकट के समय उन्हें एक ऐसी शक्ति और बुद्धि का सहारा मिलता था जो कि अपनी शक्ति और बुद्धि से ऊँची थी, क्योकि उनका अपना धार्मिक विश्वास सीधा-सादा और अविघ्न था। फ्रैंकलिन जानते थे कि अपने-आपको एक व्यक्ति के रूप में, ऐसे स्रोत के रूप में देखना, जिस पर अन्य सब व्यक्ति निर्भर करें, मूर्खता-पूर्ण था, किन्तु फिर भी अन्तिम निर्णय उन्हे ही करने होते थे और कई

बार आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शन में आस्था न रखने के कारण निर्णय करना प्रायः असम्भव हो जाता था।

मैंने आज तक ऐसा व्यक्ति नही देखा जो उनसे अधिक सुरक्षा की भावना प्रदान कर सकता था। इसका कारण यह था कि मैंने कभी उन्हें यह कहते नहीं सुना कि कोई भी ऐसी समस्या है जिसे मानव हल नहीं कर सकता। कठिनाइयो को वह मानते थे और अक्सर कहा करते थे कि वह अमुक समस्या का उत्तर नहीं जानते किन्तु उन्हें यह पूरा विश्वास था कि कही-न-कही ऐसा व्यक्ति मिल सकेगा जो इस समस्या का उत्तर दे सके। अतः तब तक प्रयत्न करते रहना होगा जब तक कि या तो स्वयं इसका उत्तर न मिल जाय या किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा प्राप्त न हो। वह अपनी शंकाओ के बारे में कभी बात न करते थे। जब वह किसी भोजन को बना रहे होते तो बहुत-से लोगो से और अच्छी-से-अच्छी सलाह पाने की कोशिश करते, लेकिन एक बार निर्णय कर चुकने के बाद वह फिर चिन्ता में समय नही गंवाते थे।

यह फ्रेंकलिन के चरित्र का विशिष्ट गुण था। मैंने उन्हें भय के साथ जीवन का अथवा किसी समस्या का कभी भी सामना करते नही देखा और मैं कई बार सोचती हूँ कि शायद उनके साहसी स्वभाव का रंग देश की जनता पर भी उतर आया था। शायद इसी कारण उनके प्रेसीडेण्ट के रूप में शासन के प्रारम्भिक वर्षों में जनता ने अपने-आपको आर्थिक संकट से उभार लिया। वह यह खूब अच्छी तरह जानते थे कि संसार की अच्छी-से-अच्छी नीतियाँ भी जनता को नहीं उभार सकतीं जब तक कि जनता स्वयं अपने प्रयत्न से इन नीतियो को कार्यान्वित न करे। लेकिन उन्हें जनता के साहस और योग्यता पर विश्वास था और जनता ने उनके इस विश्वास को सत्य सिद्ध कर दिखाया।

गम्भीरतापूर्वक किसी समस्या पर सोच-विचारकर निर्णय पर पहुँचने के बाद उसी गम्भीर समस्या पर लापरवाही से हँसते हुए टिप्पणी करने की योग्यता न होने से, मुझे सन्देह है कि कोई भी व्यक्ति ज्यादा दिनों तक

संयुक्त-राष्ट्र अमरीका के प्रेसिडेण्ट का काम नहीं कर सकता। महान् उत्तर-दायित्वों की पूर्ति करने के लिए, उनकी महत्ता समझने और फिर भी जीवन को सहर्ष व्यतीत करने के लिए विभिन्न गुणों के सम्मिश्रण की आवश्यकता होती है। आज के संकट-काल में राष्ट्रों के नेताओं के लिए इस सम्मिश्रण का होना अति आवश्यक है।

मैं अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण से यह चाहती थी कि मेरे पति प्रेसिडेण्ट न बनें। लेकिन ऐसे व्यक्ति को सार्वजनिक पद प्राप्त करने से रोकना असम्भव था जो कि यही चाहता था और इसके लिए सर्वथा उपयुक्त था। यह मेरी सम्पूर्णतया स्वार्थपरता थी और मैंने इस विषय में बनी अपनी भावना को उन पर कभी प्रकट नहीं किया। उन्हे प्रेसिडेण्ट बनाने के लिए चुनाव-कार्य में मैंने विशेष श्रम नही किया, क्योंकि मैं समझती थी कि दूसरे लोग मुझसे अच्छा काम कर रहे हैं, लेकिन कई दौरों पर मैं भी गई और जिस-किसी काम को फ्रेंकलिन ने मुझसे करने के लिए कहा वह मैंने हमेशा किया।

मैंने हमेशा महसूस किया है कि मेरे पति के आत्म-विश्वास का कुछ-न-कुछ सम्बन्ध उनके धर्म से अवश्य था। जैसा कि मैं कह चुकी हूँ उनका बड़ा सीधा-सादा धर्म था। उन्हें ईश्वर और उसके पथ-प्रदर्शन में विश्वास था। वह समझते थे कि मनुष्यो को ईश्वर की ओर से कुछ कार्य करने के लिए सौंपे जाते हैं और साथ ही उन कार्यों को पूरा करने की योग्यता और शक्ति भी प्रदान की जाती है। वह ईश्वर से सहायता और पथ-प्रदर्शन की प्रार्थना करते, जिसके फलस्वरूप उन्हें अपने निर्णय में अटूट विश्वास होता था। इनऑगेरेशन दिवस, वार्षिकोत्सवों तथा जब कभी महान् संकट आ पड़ता, उनका चर्च जाने के लिए जोर देना उनकी धार्मिक आस्था की अभि-व्यक्ति थी। उत्तरदायित्व को स्वीकार करने की उनकी क्षमता और कैसे भी संकट का मुकाबला करने की उनकी योग्यता का मूल्यांकन करने में, मेरा खयाल है, उक्त बातें नहीं भूली जानी चाहिएं।

मेरे पति की चुनाव लड़ने की नियुक्ति से एक दिन पूर्व सारी रात हम कार्यकारिणी-सदन मे बैठे रहे। सारे पत्रकारो ने अधिकांश रात मोटर के

गैराज में बिताई। जब सुबह भी उन्हे वहीं बैठे पाया तो अपने साथ दालान में बैठकर नाश्ता करने के लिए मैंने उन्हे आमन्त्रित किया। मुझे मालूम था कि रात को उन्होने सिर्फ उन अण्डों के अलावा, जो मैंने उन्हे भेजे थे, और कुछ न खाया था।

दो दिन बाद मैं अपने पति, जॉन और एलियोट के साथ हवाईजहाज में शिकागो गई, जहाँ कि फ्रैंकलिन चुनाव के लिए अपनी नियुक्ति को स्वीकार करने वाले थे।

सितम्बर मे फ्रैंकलिन ने सारे देश मे चुनाव का लम्बा दौरा शुरू किया। हमारे कुछ बच्चे भी उनके साथ गये लेकिन मैं उनका साथ विलियम्स ऐरीजोना मे ही दे पाई जब कि वह घर लौट रहे थे। सौभाग्यवश इन चुनाव के दौरो मे एक-दो बच्चे हमेशा उनके साथ रहते थे, क्योकि उन्हे अपने परिवार के कुछ व्यक्तियो को अपने साथ रखना पसन्द था। परिवार के साथ रहने से ट्रेन में बाहर के लोगों को खिलाया-पिलाया भी जा सकता था और फ्रैंकलिन भी खुश रहते थे, क्योंकि हमने यह आदत बना रखी थी कि हास्यास्पद बातें ढूँढकर उन्हें हँसाया जाय।

जनता के सम्पर्क से हमेशा की तरह प्रसन्न-चित्त होकर १६३२ के चुनाव के दौरे से फ्रैंकलिन यह दृढ़ विश्वास लेकर लौटे कि आर्थिक संकट का अन्त किया जा सकता है। उनकी निरूपण-शक्ति अद्वितीय थी और वह देश के किसी भी भाग की स्थिति को वहाँ से गुजरते हुए देखकर समझ सकते थे। उनसे मैंने ट्रेन की खिड़कियों से देखना सीखा : वह फसलें देखते, यह देखते कि लोग किस तरह के कपड़े पहने हुए हैं, वहाँ कितनी मोटरें नजर आती हैं, और किस दशा में नजर आती हैं, यहाँ तक कि वह सूखते हुए कपड़ों की पंक्तियों को भी गौर से देखते थे। हालाँकि उन्होंने अपनी देखी हुई चीजों को कभी भी याददाश्त के लिए लिखा नहीं, लेकिन फिर भी जब कि सी० सी० सी० की स्थापना हुई तो उन्हें बिलकुल ठीक मालूम था कि कहाँ किन विभिन्न कार्यों की आवश्यकता है। फ्रैंकलिन भूगोल बहुत ही अच्छी तरह जानते थे। उदाहरण के लिए, कई वर्षों बाद प्रधान मन्त्री पीटर फ्राजियर ने

मुझे बताया कि कैसे वह फ्रैंकलिन से एक उस छोटे टापू के बारे में एक बार बात करने गए जो कि न्यूजीलैंड के पास है और जो कि उनके विचार में युद्ध-कार्य के लिए उपयुक्त था। एक मिनट के लिए फ्रैंकलिन परेशानी में पड़े गए, लेकिन फौरन ही उनकी उलझन जाती रही और वे बोले : "हाँ ठीक है, लेकिन मेरा खयाल है कि अमुक द्वीप अधिक उपयुक्त रहेगा।" फ्राजियर साहब हैरान हो गए और उन्हे आखिर नक्शे में उस द्वीप को देखना पड़ा।

१६३२ के चुनाव के दौरे में फ्रैंकलिन पर हमारी फिजूलखर्ची, भूमि की सुरक्षा की कमी तथा बरबादी को देखकर बहुत प्रभाव पड़ा, और जो कुछ उन्होंने देखा उसी पर अपनी कार्य-योजना आधारित की। लेकिन सबसे अधिक प्रबलता से उन्होंने यह अनुभव किया कि लोगों में एक जीवन-शक्ति है जिसको बचाना चाहिए। मुझे यह विश्वास है कि जनता में अपने विश्वास के कारण ही प्रथम भाषण में उनके यह शब्द निकले थे : "हमें केवल एक चीज़ से भय करना है और वह चीज़ है स्वयं भय।"

रेडियो पर उनकी आवाज़ कमाल करती थी। यह एक कुदरती देन थी, क्योंकि अपनी सारी जिन्दगी में उन्होंने कभी भी बोलने की या सभाओं मे भाषण देने की कही शिक्षा नहीं पाई थी। स्कूल में उन्होंने सभाओं में भाग लिया था और जब वह छोटे थे तो शायद उन्होंने गाना भी सीखा था क्योकि कॉलेज मे गाना उन्हें अच्छा लगता था। लेकिन अपनी वाणी के प्रयोग में इससे अधिक शिक्षा उन्हें न मिली थी। उनकी वाणी ने निस्सन्देह जनता को यह समझने में मदद दी कि जनता उनके शासन-काल में किये गए प्रत्येक सरकारी कार्य का एक ज्ञानपूर्ण एवं सुबोध अंग है।

चुनाव की रात को हम न्यूयार्क शहर में थे। मुझे अपने पति के लिए खुशी थी, क्योंकि मैं जानती थी कि यह जीत कई तरह से उस प्रहार की पीड़ा कम कर देगी जो कि भाग्य ने लकवे के रूप में उन पर किया था; और संकट में देश की सहायता करने की उनकी योग्यता पर मुझे पूरा विश्वास था। चुनाव में अपनी जीत की कामना करना स्वाभाविक था और सार्वजनिक जीवन में अपने देश की सेवा करने का यह अवसर वह चाहते थे।

लेकिन मुझे स्वयं अपने लिए बेहद फिक्र थी। जैसा कि मैने समझा, मेरे पति के प्रेसीडेण्ट बनने का अर्थ था—मेरे अपने निजी जीवन का अंत हो जाना। मै पिछली परम्पराओं को देखते हुए जानती थी कि मुझे क्या करना होगा, मैंने श्रीमती थियोडोर रूजवेल्ट को देखा था और मुझे मालूम हो चुका था कि प्रेसिडेण्ट की पत्नी बनने का क्या अर्थ होता है और मैं यह नही कह सकती कि इस सम्भावना ने मुझे कितना आनन्दित किया। अपने लिए स्वयं रुपया कमाकर मैं किसी हद तक आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर चुकी थी और मैं उन बातो को कर पाती थी जिनमें मुझे व्यक्तिगत शौक था। अतः उस रात मेरे दिल और दिमाग में एक उथल-पुथल मची हुई थी और मैं जानती थी कि अगले कुछ महीनों मे भी मेरा भावी पथ स्पष्ट न होगा।

जीवन तुरन्त ही परिवर्तित होने लगा। जैसे ही मेरे पति-निर्वाचन मे उत्तीर्ण हुए गुप्त पुलिस ने उनकी सुरक्षा का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया। ६५वीं सड़क पर स्थित हमारे मकान में गुप्त पुलिस के प्रतिनिधि भरे रहते थे और जब कभी फ्रैंकलिन घर मे होते तो उनसे मिलने आने वाले मेहमानों की जाँच होती थी।

बाद में सर्दियो के दिनो मे मैं प्रथानुसार श्रीमती हूवर से भेट करने गई और साथ ही मैं यह भी तय करना चाहती थी कि मै ह्वाइट-हाउस में पहुँचकर किस प्रकार कमरो का इस्तैमाल करूँगी। उन्होने कुछ कमरे खुद मुझे अपने-आप दिखाये और जब मैंने बावर्चीखाना देखना चाहा तो उन्होंने राहत के साथ मुझे घर का प्रबन्ध करने वाले और ह्वाइट-हाउस के भेट कराने वाले आइक हूवर के सुपुर्द कर दिया जिसको कि मैं प्रेसिडेण्ट थियोडोर रूजवेल्ट के जमाने से जानती थी। उसने भी मुझसे इनऑगेरेशन-दिवस के प्रबन्ध के बारे मे बात करने की इच्छा प्रगट की।

मुझे उस दिन का वहाँ जाना खूब अच्छी तरह याद है। लाफेटी स्क्वायर को जल्दी से पार करके मैं काफी घबराई हुई ह्वाइट-हाउस में दाखिल हुई, क्योकि मुझे डर था कि मुझे देर हो चुकी है। मुझे उन दिनों की याद

आई जब कि मेरे पति जल-सेना के असिटेंएट सेक्रेटरी थे और जब कभी वे मोटर में ह्वाइट-हाउस जाया करते थे तो सोचा करते थे कि यहाँ रहना कितनी शान की बात है।

मुझे यह मालूम न था कि मेरे नाम इतनी ज्यादा डाक आयगी कि मैं रात में देर तक जगे बिना उन सब पत्रों का उत्तर न दे सकूँगी। न मैं यह जानती थी कि लोगों की मदद करने की योग्यता का वास्तविक अर्थ क्या है और न ही मुझे यह मालूम था कि उस भवन और वाटिकाओं के सौन्दर्य तथा उस स्थान की शान्ति और भव्यता का वहाँ के निवासियों की आत्मा पर क्या प्रभाव पड़ेगा। संसार के प्रतिष्ठित नर-नारियों से मिलने का अवसर भी एक ऐसा प्रतिफल था जिसके बारे में मैंने तब तक न सोचा था।

१९३३ का प्रतिष्ठान-दिवस उस व्यक्ति के लिए जो पद छोड़ रहा था या जो पदारूढ़ हो रहा था या देश की सर्वसाधारण जनता के लिए एक मामूली अवसर न था। प्रेसीडेण्ट हूवर ने एक अति दुष्कर काल में शासन किया था।

मेरे पति अक्सर मुझे बताया करते थे कि जब वह प्रेसीडेण्ट हूवर के साथ मोटर में बैठकर ह्वाइट-हाउस से कैपीटल तक जाया करते थे तो वह गुम-सुम बैठे हुए प्रेसीडेण्ट से हँसी-खुशी की बातें करने की कोशिश किया करते थे। सड़क पर खड़ी हुई भीड़ जय के नारे लगाती और मेरे पति बिना सोचे समझे ही उसका उत्तर दे देते और फिर उन्हें अचानक ध्यान आता कि उनकी बगल में श्री हूवर निश्चल बैठे हैं। मेरे पति के हृदय में आशा थी, लेकिन वह जानते थे कि उनके पास बैठे हुए व्यक्ति की मानसिक स्थिति उनकी जैसी नहीं हो सकती।

प्रतिष्ठान-दिवस मार्च ४, १९३३ को देश की स्थिति इतनी गम्भीर थी कि विशुद्ध सामाजिक समताओं में बहुत कम समय खर्च किया गया। तुरन्त ही मेरे पति ने लोगों से मिलना शुरू किया और सबसे पहले बैंक की छुट्टी हुई। मैं कुछ चिन्तित थी क्योंकि मेफेयर होटल में रहते हुए हमें दो-तीन दिन हो चुके थे और मेरे पास अधिक रुपया न था। मैंने अपने पति से जाकर कहा कि अगर हमें कुछ रुपये की जरूरत हुई तो क्या होगा? क्योंकि

खास तौर पर हमारे कुछ बच्चे वहाँ से जल्दी ही जाने वाले थे। वह मुस्करा दिये और बोले कि उनका खयाल है कि सख्त जरूरी कामों के लिए रुपये का इन्तज़ाम हो सकेगा। तब मैं समझने लगी कि ह्वाइट-हाउस में रहकर कुछ ऐसी बातें हैं जिनके बारे में चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।

अपने शासन के प्राथमिक दिनों में मेरे पति देश के आर्थिक संकट का मुकाबला करने के लिए नये तरीकों को ढूँढ़ने में इतने व्यस्त थे कि और किसी काम से उनको परेशान नहीं किया जा सकता था, अतः मैं घर और उनके दफ़्तर को संगठित करने में जुट गई जो कि प्रेसीडेण्ट की पत्नी का काम होता है।

बिना सोचे-समझे मैंने कई ऐसे काम किये जिससे ह्वाइट-हाउस के भेंट करने वालों को हैरानी हुई। मैंने पहला काम यह किया कि ऊपर नीचे जाने वाली लिफ़्ट को मैं बिना लिफ़्ट चलाने वाले की प्रतीक्षा किये ही स्वयं चलाने लगी। प्रेसीडेण्ट की पत्नी को यह काम नहीं करना चाहिए था।

जब कभी मैं एक जगह से दूसरी जगह जाती हूँ तो फौरन ही अपने नये मकान को पूरी तरह जमाने के लिए अधीर हो जाती हूँ। अतः प्रतिष्ठान-दिवस के बाद सोमवार के सुबह ही मैंने फर्नीचर को इधर-उधर हटाना शुरू किया, क्योंकि मैं एक दिन पहले ही तय कर चुकी थी कि किस प्रकार चीजें जमानी हैं। मेरा बिस्तरा उस बहुत बड़े कमरे में लगा था जो कि बाद में उठने-बैठने और दफ़्तर के काम में लाया गया। बिस्तरे से ड्रेसिंग-टेबल और ड्रेसिंग-टेबल से वस्त्र-कक्ष तक जाने में बहुत समय नष्ट होता था अतः मैंने पास के छोटे शृङ्गार-कक्ष में ही अपना बिस्तरा लगवाया।

अपने उठने-बैठने के कमरे की मेज़ पर मैंने टेलीफ़ोन लगवाना चाहा। दो दिन बीत गए और टेलीफोन न लगा। पूछ-ताछ करने पर पता लगा कि टेलीफोन लगाने वाले लोग मेरे कमरे में इसलिए नहीं आ पाए क्योंकि मैंने काफी देर तक के लिए कमरा खाली नहीं छोड़ा था—और यह ठीक नहीं समझा जाता था कि जब प्रेसीडेण्ट की पत्नी कमरे में हो वहाँ दूसरे मर्द काम करते हों। मैंने इस मर्ज़ का यह कहकर फौरन ही इलाज कर दिया कि मैं

अपने आस-पास लोगों को काम करते हुए देखने की आदी हूँ।

यद्यपि उन दिनों कठिन समय था लेकिन फिर भी युवक-युवतियों के लिए कुछ उत्सव मनाये गए। मुझे याद है कि हमारा एक लड़का कितना नाराज हुआ जब कि एक नृत्य से रात को बहुत देर से वह किसी की माँगी हुई टूटी-फूटी गाड़ी में घर लौटा और जब उसे फाटक पर ही रोक दिया गया। अपनी पहचान बताने का उसके पास कोई साधन न था और बहुत देर बाद ऐसा कोई व्यक्ति मिला जिसने उसे पहचाना और तब जाकर उसे अन्दर आकर सोने की इजाजत मिली। अगले दिन सुबह उसने कहा: "आखिर यह कैसी जगह है जहाँ तुम रहते हो लेकिन तुम्हें अन्दर आने की इजाजत नहीं मिलती?" इस घटना से हमें यह मालूम हुआ कि जब कभी-भी परिवार का कोई व्यक्ति बाहर आता जाता था तो उसके आने-जाने का समय भेंट कराने वाले की बही पर लिखा जाता था। ऐसी ही एक बही उन लोगों के लिए रखी जाती थी जो थोड़ी या ज्यादा देर के लिए हमसे मिलने आते थे।

अधिकांश अमरीकन बच्चों की तरह मेरे बच्चे भी जब कभी जरा भी प्यासे होते तो फौरन ही बरफ के बक्से पर टूट पड़ने के आदी थे। जब उन्हें मालूम हुआ कि रात को बरफ का बक्स ताले में बन्द रहता है तो मुझे झिड़कने का उन्हें एक दूसरा मौका मिला।

मेरी सेक्रेटरी कुमारी थॉमसन की मेज पर डाक का—चिट्ठियाँ, किताबें, सौगात और कई तरह के पैकटों का—ढेर बढ़ता ही जाता था। वह अकेली ही इस सारी डाक को निबटाने की कोशिश करने लगीं क्योंकि हमें किसी ने बताया न था कि इस काम में हमारी मदद करने के लिए कई लोग नियुक्त हैं। आखिर जब हमारी एक मित्र एडिथ हेल्म से यह न देखा गया, जो कि वाशिंगटन से परिचित थी, तो उसने धीरे से कहा: "यह डाक आप मिस्टर मैगीको क्यों नहीं दे देतीं। वह नीचे बैठे हुए कुछ नहीं कर रहे और वह अपने अधीन दूसरे लोगों के साथ आपकी मदद करने के लिए ही तो हैं। इसके बाद से हमने एक ऐसी कार्य-प्रणाली बनाई जो कि सफल सिद्ध

हुई और हमारी हमेशा इसलिए प्रशंसा होने लगी कि पत्रों का उत्तर हम काफी जल्दी दे पाते थे।

बाद मे एडिथ हेल्म की स्वयं की हुई सेवाओ ने उसे सामाजिक सेक्रेटेरी का स्थायी पद प्राप्त कराया। कुमारी थॉमसन ने शीघ्र ही महसूस किया कि डाक का जवाब देने और मेरा निजी काम करने के अतिरिक्त वह अधिक कुछ नहीं कर सकती और वाशिंगटन के सामाजिक जीवन की बारीकियो को समझने में उसकी उतनी ही कम दिलचस्पी थी जितनी कि मेरी।

शुरू से ही मैंने वेस्ट हॉल मे सुबह आठ या साढ़े आठ बजे नाश्ता करने की आदत डाली। मेरे पति अपने बिस्तरे मे ही सुबह का नाश्ता करते थे और जैसे ही नाश्ते की थाली उनके पास पहुँचती मैं हमेशा उसी वक्त उनके कमरे में दाखिल होती थी। मैं केवल प्रातःकालीन अभिवादन करने के लिए वहाँ रुकती क्योंकि इस समय सब समाचार-पत्रो को पढ़ने में वह अपना समय लगाते थे और बातचीत करना पसन्द न करते थे। कई अखबारों को तो वह सिर्फ देख-भर लेते थे लेकिन अधिकांश लेखों को वह पूरा पढ़ते थे। अपने समर्थको से कहीं अधिक अपने विरोधियों के लेख पढ़ने में वह सतर्क रहते थे। कई पत्रकारो के लिखे हुए लेख पढ़ने के लिए मैं उन्हें कभी तैयार न कर सकी, क्योकि यदि वह एक बार यह तय कर लेते कि अमुक व्यक्ति कपटी है या उसके चरित्र में वे बातें नहीं हैं जिन्हें वह आवश्यक समझते थे तो फिर उस व्यक्ति की लिखी हुई किसी भी चीज को वह निरर्थक मानते थे। मुझे याद है एक व्यक्ति, जब कि वह सपत्नीक यूरोप जा रहा था मैंने उसे कई परिचय-पत्र दिये थे। जिन समाचार-पत्रों के लिए वह लिखता था उनके मालिकों की तरह वह स्वयं भी जर्मनी से इस दृढ़ विश्वास के साथ लौटा कि नात्सीज्म अच्छा है। इससे मुझे और मेरे पति को यह आभास हुआ कि या तो वह व्यक्ति सम्पूर्णतया कपटी था या उसका मस्तिष्क कुटिल था। उसके बाद से फ्रेंकलिन ने कभी भी उस व्यक्ति की लिखी हुई किसी चीज पर ध्यान नहीं दिया।

फ्रेंकलिन के नाश्ते के समय सुबह सिर्फ उनके कमरे में हमारे पोते-

पोतियों को आने की इजाजत थी और कई बार तो उन छोटे बच्चों के ऊधम से मुझे उन्हें बचाना पड़ता था। एक बार मैंने उनके कमरे में शोर और मदद के लिए चिल्लाने की आवाजें सुनी। कमरे में जाकर मैंने देखा कि दो छोटी-छोटी लड़कियाँ, सारा और चेएडलर उनके पलंग पर कूद-कूदकर गला फाड़-फाड़ कर चिल्ला रही थीं, "यह मेरे दादा है!" "नही, तुम्हारे नहीं, यह मेरे हैं।" फ्रेंकलिन एक हाथ से अपने नाश्ते को बिस्तर से गिरने से बचाने की कोशिश कर रहे थे और दूसरे हाथ में टेलीफोन पकड़े हुए थे। वह बड़ी परेशानी के साथ टेलीफोन ऑपरेटर से कह रहे थे, "एक मिनट ठहरो, हैकी। मैं अभी इस वक्त पेरिस से बातें नही कर सकता।"

भोजन के सम्बन्ध में फ्रेंकलिन को प्रसन्न करना कभी भी कठिन न था, लेकिन जब वह वाशिंगटन में थे बाहर खाना खाने बहुत कम जाते थे। और चाहे घर में कितना ही अच्छा रसोइया क्यों न हो लगातार उसका बनाया हुआ खाना खाने से तबियत ऊब जाती है। जब वह दौरे पर जाते उनके भोजन में एक अच्छा परिवर्तन हो जाता था लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया और उनका स्वास्थ्य दुर्बल पड़ता गया श्रीमती नेसबिट; (घरेलू प्रबन्ध करने वाली महिला) रसोइयों का और मेरा कार्य क्रमशः कठिन होता गया। सितम्बर १९४१ मे फ्रेंकलिन की माता के देहान्त के बाद हमने ह्वाइट-हाउस की तीसरी मंजिल के एक छोटे कमरे में एक रसोई बना दी थी और एक रसोइयन रख दी थी जो कि उनकी बीमारी के दिनों मे खाना बनाती थी। दिन में दो बार उनके लिए वह जो खाना बनाती थी उसमें उनको कई किस्म की चीजें मिल जाती थीं।

ह्वाइट-हाउस की घरेलू प्रबन्ध-सम्बन्धी कई बातें मनोरंजक मालूम होंगी। मेरा खयाल है कि ज्यादातर लोग यह नहीं जानते कि प्रेसीडेण्ट या यहाँ तक कि गवर्नर के पद पर काम करने वाले व्यक्ति का कितना खर्च होता है। न्यूयार्क राज्य तथा केन्द्रीय सरकार घरेलू नौकरों का वेतन देती है, लेकिन उन्हें खिलाने का जो खर्च होता था वह मेरे पति की जेब से ही जाता था। अलबेनी में हमारे यहाँ आठ या दस घरेलू नौकर थे और

ह्वाइट-हाउस में करीब तीस। मेरा हमेशा से यह खयाल रहा है कि राज्य तथा राष्ट्र दोनों की सरकार को उनके खाने का खर्च देना चाहिए। ह्वाइट-हाउस में हर साल, हजारों मेहमानों के आने का अर्थ था कि हमें अपनी आवश्यकता के अतिरिक्त अन्य नौकर रखने पड़ते थे ताकि सार्वजनिक कमरे साफ रह सकें। इसके अलावा हर क्रिसमस के मौके पर ह्वाइट-हाउस के पहरेदारों और अन्य कर्मचारियों को दी हुई दावतों का खर्च मेरे पति उठाते थे। राजकीय भोजों का खर्च अनिश्चित व्यय के सरकारी कोष में से दिया जाता था, किन्तु यदि किसी भोज में मैं या फ्रैंकलिन अपने किन्हीं बच्चों या निजी मित्रों को आमन्त्रित करते तो उनका खर्च हमें देना होता था। और इसके अतिरिक्त चन्दे की माँगें तो असंख्य हुआ करती थीं और प्रेसीडेण्ट से तो हमेशा यही आशा की जाती है कि वह अन्य व्यक्तियों की तुलना में कहीं अधिक दिल खोलकर चन्दा देगा। मुझे विश्वास है कि प्रत्येक प्रेसीडेण्ट ह्वाइट-हाउस में आने के पहले से ह्वाइट-हाउस छोड़ते वक्त ज्यादा गरीब होता है।

इन सब बातों के कारण घर का प्रबन्ध करना और घर का हिसाब-किताब रखना पेचीदा बन जाता था। ह्वाइट-हाउस के लिए खरीदी हुई चीजों के बारे में भी दिक्कत और उलझन पैदा होती थी। जो चीज पुरानी और बेकार हो जाती थी उसे भी दूर न किया जा सकता था। जब आप यह कहते कि आपने पुरानी चीज के बदले नई चीज खरीदी है तो आपको पुरानी चीज दिखानी पड़ती थी। अतः गोदामों में पुराना फर्नीचर भरा रहता है जो कि तब ही हटाया जाता है जब कि और चीजें रखने के लिए एक फुट भी जगह नहीं रहती है। अगर घर का प्रबन्ध करने वाले को, उदाहरण के लिए, चाय की नई छलनी भी खरीदनी होती है तो पुरानी छलनी फेंकी नहीं जा सकती, क्योंकि जब वह यह कहेगी कि उसे नई छलनी खरीदनी पड़ी तो पुरानी उसे दिखानी होगी।

जब तक कि कोई चीज बिलकुल बेकार नहीं हो जाती उसे काम में लाया जाता है। बेकार चीजों को गवाहों की मौजूदगी में नष्ट किया जाता

है। सोने के पुराने पियानो या लिफ़्ट के पुराने पिंजड़े-जैसी ऐतिहासिक वस्तुओं को स्मिथसोनियम संस्था में रखा जाता है। यह जाहिर है कि ह्वाइट-हाउस के खर्चे के व्यौरे मे फिज़ूलखर्ची का बहुत कम खतरा है।

कई ऐसे कार्यों के वास्तविक अर्थ तथा मूल्य को मैं बाद में समझने लगी जिन्हें कि शुरू में मैं व्यर्थ का भार समझती थी।

मिसाल के लिए चाय की दावत ही लीजिये। किसी दोपहर को पाँच सौ से लेकर एक हजार लोगो तक का स्वागत करना, जिसमें से शायद किसी से कभी भी फिर मिलने का अवसर न आयगा, उनसे हाथ मिलाना और उन्हे खाना खाने के कमरे में ले जाना जहाँ कि श्रीमती हेल्म या कुमारी थॉमसन उन्हे एक-एक प्याला चाय या कॉफी का देतीं—एक ऐसा काम था जो कि मुझे बिलकुल बे-मतलब और कतई फिजूल नजर आता था।

चाय के लिए आमन्त्रित अतिथियों का स्वागत करने के बाद मैं राज्य के खाने के कमरे में जाकर इधर-उधर की कुछ बातें करती और फिर मेरे ऊपर जाने के बाद दावत खत्म होती। शुरू में मुझे यह मालूम न था कि अन्य व्यक्तियों से पहले मुझे कमरा छोड़ना चाहिए और भेंट कराने वाले कर्मचारियों को मुझे इस बात की याद दिलानी पड़ती थी जो कि एक नियत समय के अन्दर मेहमानो का चला जाना पसन्द करते थे ताकि वे अगले कार्यक्रम की तैयारी कर सके। मेरे लिए यह स्मरण रखना कठिन था कि मैं केवल 'ऐलेनर रूज़वेल्ट' नही हूँ, बल्कि 'प्रेसीडेण्ट की पत्नी' हूँ।

मुझे यह पता लगाने में ज्यादा समय न लगा कि विशेषतः शहर से बाहर के लोगों के लिए ह्वाइट-हाउस एक अति महत्वपूर्ण वस्तु थी। मैं केवल एक प्रतीक-मात्र थी जैसी कि प्रेसीडेण्टो की पत्नियाँ होती आई हैं और होती रहेंगी। ह्वाइट-हाउस एक ऐसा स्थान है जहाँ कि जनता का आतिथ्य अन्य देशों के प्रतिनिधियों को वितरण किया जाता है; और एक प्रकार से संयुक्त राष्ट्र अमरीका के नागरिक इसके सादे किन्तु भव्य और सुन्दर कमरों में स्वामित्व की भावना के साथ घूमते हैं। मेरा खयाल है कि बहुत-से लोगों के लिए ह्वाइट-हाउस स्वयं सरकार का प्रतीक है और यद्यपि सप्ताह

मे दो-तीन बार एक घण्टे या ज्यादा देर तक खड़े रहकर लोगों से हाथ मिलाना विशेष प्रेरणादायक कार्य नही है किन्तु फिर भी मैं समझती हूँ कि ऐसा करना ठीक ही है। मुझे सर्दियों के महीनो में यह कार्य नियमानुसार सप्ताह में तीन बार करना पड़ता था। भेंट कराने वालों तथा निम्न अंग-रक्षको द्वारा प्रदर्शित थोड़ी-बहुत तड़क-भड़क तथा आडम्बर का मूल्य भी हम समझने लगे थे।

हर मौसम के स्वागत-कार्यों से शुरू में मेरी बाहें, मेरे कन्धे और मेरी पीठ दुखने लग जाती थी और ऐसा मालूम होता था मानो मेरे घुटने और पैर मेरे अपने नहीं, किसी और के है। लेकिन शीघ्र ही मुझे इस काम की आदत पड़ गई और भाग्यवश मेरे हाथ में ऐसा लचकीलापन आ गया कि वह थकता ही न था।

यह स्वागत-कार्य मेरे पति को बहुत थकाता था क्योंकि बन्धन पहने हुए ज्यादा देर तक खड़ा रहना उनके लिए आसान न था। उनकी कोशिशें यह होती थीं कि अभिवादन के लिए एक समय में एक हजार से अधिक व्यक्ति न हों और जैसे ही यह काम पूरा होता वह फौरन ऊपर चले जाते थे। कभी-कभी मैं उनके पढ़ने के कमरे मे उन लोगो को भेज देती जिनसे वह मिलना चाहते थे। लेकिन ऐसा खास-खास मौको पर ही होता था, क्योंकि प्रायः सोने से पूर्व उन्हें काम करना होता था।

इन छोटे-बड़े स्वागतो में आये हुए लोगों के चेहरो में मुझे दिलचस्पी होने लगी। अतः ऐसे अवसर, जो कि अन्यथा शुष्क होते, विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों द्वारा निर्मित हमारे देश के चित्र को देखने का बहुमूल्य अवसर प्रदान करते थे। यह स्वयं एक ऐसा बहुमूल्य अनुभव है जो कि ह्वाइट-हाउस मे रहने से प्राप्त होता है।

कूटनीतिक शिष्टाचार की आवश्यकता को मुझे समझाने में एडिथ हेल्म का बड़ा हाथ था। यह मेरे लिए एक नई चीज़ थी और जब तक कि मैं यह न समझ सकी कि वास्तव् में इसके दो उद्देश्य हैं—सुरक्षा और नियमित कार्य-प्रणाली—मुझे भी अधिकांश अमरीकनों की तरह इससे बुरा लगता

था। आज भी मुझे इस कूटनीतिक शिष्टाचार का कुछ भाग जरूरत से ज्यादा पेचीदा नजर आता है लेकिन फिर भी मैं इसे जरूरी समझने लगी हूँ। वाशिंगटन में रहने वाले विदेशी इसके अतिरिक्त अन्य किसी प्रणाली को नही समझ सकते। अधिकांश अमरीकनों द्वारा अपने पदों को—चाहे वे निर्वाचन अथवा नियुक्ति द्वारा प्राप्त हुए हों—महत्व प्रदान करना सम्भवतः ठीक ही है, क्योंकि सार्वजनिक सेवकों को केवल सम्मान मे ही अपने कार्य का मुआवजा मिलता है। तुलनात्मक दृष्टि से उनको इतना आर्थिक लाभ नही होता जितना कि उनमें से अधिकांश व्यापार या किसी दूसरे पेशे से पा सकते हैं। सार्वजनिक पद पर अच्छे व्यक्तियो को रखने के लिए उन्हें सम्मान प्रदान करना अति आवश्यक है। एक प्रकार से यह उन स्त्री-पुरुषों के बलिदान की स्वीकृति है जो कि लोक-सेवा मे इन्हे करना ही पड़ता है। इसके अतिरिक्त उनके पद के लिए भी यह सम्मान का सूचक है।

मै यहाँ एक सप्ताह के अपने सामाजिक कार्यक्रम की सूची दे रही हूँ। मेरा खयाल है कि आप देखेंगे कि एक प्रेसीडेण्ट की पत्नी के पास आलस्य में समय गँवाने के लिए ज्यादा फुर्सत नही होती :

सोमवार

१ बजे......श्रीमती हल के साथ दिन का भोजन।

४ बजे......१७५ अतिथियों के लिए चाय।

५ बजे......२३६ अतिथियों के लिए चाय।

मगलवार

१ बजे......श्रीमती गार्नर के साथ दिन का भोजन।

४ बजे......डेलावेयर डेमोक्रेटिक क्लब के सदस्यों के लिए चाय।

४-३० बजे......वैदेशिक कूटनेताओं की पत्नियों के लिए चाय।

७ बजे......२२ व्यक्तियों के लिए संध्या का भोजन।

६ बजे......न्यायालय के सदस्यों का स्वागत।

बुधवार

४ बजे......२६६ अतिथियों के लिए चाय।

५ बजे.......२५६ अतिथियों के लिए चाय।

बृहस्पतिवार

१ बजे.......५२ सदस्यों के लिए राजकीय भोज।

४ बजे.......चाय, पक्षाघात-रोग-संस्था का स्त्री-विभाग।

५ बजे.......नारी-क्लबों की कार्यकारिणी-समिति के लिए चाय।

शुक्रवार

१ बजे.......मन्त्रि-मण्डल के सदस्यों की पत्नियों के लिए भोज।

८ बजे.......कूटनीतिक भोज—६४ अतिथियों के लिए।

भोज के उपरान्त संगीत के लिए १६७ अतिरिक्त अतिथि।

मैं उन व्यक्तियों की संख्या भी दे रही हूँ जो कि साधारण वर्षों में ह्वाइट-हाउस आते थे और साथ ही ऐसे व्यक्तियों की भी संख्या नीचे दी जा रही है जो चाय, दिन या रात के खाने, या शाम के नाश्ते पर ह्वाइट-हाउस में आमन्त्रित होते थे :

१९३९ के वर्ष में :

४७२९ व्यक्ति भोजन के लिए आये।

३२३ व्यक्ति घर में अतिथि बनकर रहे।

९२११ चाय के लिए आये।

१४०५६ व्यक्ति चाय और स्वागत आदि में आये और सबने हलका नाश्ता किया।

१३२०३०० व्यक्ति सार्वजनिक कमरों को देखने आये जिनमें से २६४०६० के पास कांग्रेस के सदस्यों द्वारा दिये गए पास थे जिनसे कि वे भोजन का कमरा, लाल कमरा, नीला कमरा और हरा कमरा देख सकते थे।

ईस्टर एग रोलिंग के दिन औसत उपस्थिति ५३१०८ थी। लिखित प्रमाण से ज्ञात हुआ कि १८० बच्चे खोये और पाये गए; दो व्यक्तियों को तुरन्त सहायता पहुँचाने वाले अस्पताल भेजा गया; छः व्यक्ति बेहोश हो गए और बाईस व्यक्तियों को मामूली चोट पहुँचने पर इलाज किया गया।

ईस्ट एग रोलिंग के समारोह के अन्त के बाद ह्वाइट-हाउस के मैदानों

की शक्ल सचमुच बूचड़खाने-जैसी बनी हुई थी लेकिन उनकी सफाई का प्रबन्ध करने वालों के परिश्रम से दूसरे दिन सुबह नौ बजे तक फिर वे हमेशा की तरह साफ-सुथरे और सुन्दर दिखाई देने लगे थे।

श्रीमती नेसबिट, श्रीमती हेल्म और भेंट कराने वाले कर्मचारी से मैं प्रातःकालीन कार्यक्रम के अनुसार मिल ही चुकी थी कि कुमारी थॉमसन ने मेरे कमरे में आकर डाक देखने का काम शुरू किया। पत्र-व्यवहार के लिए हमें एक सम्पूर्णतया नई पद्धति को काम मे लाना पड़ा।

पत्र-विभाग के अधिकारी रेल्फ, डब्ल्यू, मैगी से मालूम हुआ कि पहले शासनों मे अधिकाश पत्रो का उत्तर छपे हुए फार्मों पर दिया जाता था; उसने हमें प्रेसीडेण्ट क्लीवलैण्ड के शासन के समय काम में लाये जाने वाले फार्मों की प्रतियाँ दिखाईं। चाहे पत्र लिखने वाले ने चर्च बाजार के लिए एक रूमाल माँगा हो या सफेद हाथी, उसको यही उत्तर मिलता था: "श्रीमती···के पास इस प्रकार के कई निवेदन आ चुके हैं, अतः यह सम्भव नही है कि आपकी प्रार्थना स्वीकार की जा सके..."

मैंने निश्चय किया कि इस संकट-काल में जब कि अधिकांश पत्र लिखने वाले निरुत्साह हो चुके है, इस प्रकार का उत्तर दिया जाना अनुचित है अतः मेरे पास आये हुए किसी भी पत्र का उत्तर फार्मों पर नहीं दिया गया।

कुमारी थॉमसन डाक पढ़कर उन सब पत्रों का उत्तर तैयार कर लेती थी जिनका वह खुद जवाब दे सकती थी और अपने या मेरे हस्ताक्षरों के लिए उन्हे रख लेती थी। कई खास-खास पत्र और कुछ ऐसे पत्र जिनका कि वह समझती थी कि वह स्वयं उत्तर नहीं दे सकती मेरे लिए एक टोकरी मे रख दिए जाते थे। कुमारी थॉमसन घर जाने से पहले या अगर उसे शाम को वही रुकना होता था तो रात के खाने से पहले मेरी मेज़ पर दस्तखत के लिए पत्र रख देती थी। मेरे नाम के निजी पत्र हमेशा बिना खोले ही मुझे दिये जाते थे। कुमारी थॉमसन के मेरे साथ लम्बे सम्बन्ध के कारण वह मेरे परिवार तथा व्यक्तिगत मित्रों की लिखावट लिफाफों पर पहचान लेती थी।

साधारण अथवा विशेष भोजो के आतिथ्य से छुट्टी पाकर मैं पत्रों पर हस्ताक्षर करती और उन पत्रो को पढ़ती जो कि मैंने पहले नहीं देखे थे, कई पत्रों पर उत्तर की रूपरेखा लिख देती थी जिसके अनुसार मैं चाहती थी कि उत्तर दिया जाय और उन पत्रो को अलग रख देती जिनका मुझे स्वयं उत्तर लिखाना होता था। इस काम को करने में रात का काफी समय बीत जाता था। सोने जाने से पूर्व मैं पत्रों की इन टोकरियों को कुमारी थॉमसन की मेज पर पहुँचवा देती थी ताकि वह सुबह आते ही इन पर काम शुरू कर सके। जैसे ही वह सुबह मेरी मेज पर आती हम उन पत्रों को देखने लग जाते जिनका उत्तर मुझे लिखाना होता था।

मेरा निजी काम जैसे कि समाचार-पत्रों आदि के लिए लेख, पुस्तकें, रेडियो-लेख आदि का काम कुमारी थॉमसन अतिरिक्त समय में करती थी और जिसके लिए मैं अपने निजी खर्च मे से उसे मुआवजा दे देती थी ताकि उसके उस समय का निजी काम के लिए उपयोग करने का प्रश्न न हो जो कि सरकारी समय था। यह काम शाम को या शनिवार और रविवार को किया जाता था।

देश की स्थिति सुधरने के साथ-साथ मेरी डाक भी कम हो गई लेकिन अगर किसी कारण जनता की चिन्ता बढ़ती तो साथ ही डाक भी बढ़ जाती थी। मार्च १९३३ से उस वर्ष के अन्त तक मेरे पास ३०१००० पत्र आये। १९४० के चुनाव से पहले वर्ष में मुझे १००००० पत्र प्राप्त हुए। प्रेसीडेण्ट के पद के लिए तीसरी बार खड़े होने के कारण तथा शासन-सम्बन्धी अन्य कार्रवाइयों के कारण मेरे पास आने वाले पत्रो की संख्या बढ़ गई। युद्ध में तो पत्रो की संख्या बहुत ही ज्यादा बढ़ गई, हालाँकि उनका विषय आर्थिक संकट के वर्षों में आये हुए पत्रों से सर्वथा भिन्न होता था।

तरह-तरह के निवेदन और यह प्रत्यक्ष विश्वास कि मैं किसी भी प्रकार की चीज को सम्भव बना सकती हूँ—मुझे अक्सर कुछ चिन्तित बना देता था। बहुत-सी प्रार्थनाएं छूटी भी होती थी। मैंने शुरू से ही विभिन्न समुदायो में कुछ ऐसे व्यक्ति ढूँढ रखे थे जिन्हें मैं वे पत्र भेज देती थी जिनमें

से घोर निराशा की ध्वनि आती थी। बहुत-से हल्कों में मेरी जान-पहचान अच्छी थी और मैं उसका तब तक उपयोग करती रही जब तक कि व्यवसाय-हीन व्यक्तियों की सहायतार्थ शासन स्थापित न हुआ जिनको कि बाद में मैं पत्र भेजने लगी थी।

मुझे याद नहीं आता कि इन बारह वर्षों में मेरे दफ्तर ने कोई ऐसी गलती हो जिसके लिए मुझे या मेरे पति को अकुलाहट हुई हो। इसके लिए श्रेय उस सतर्कता का है जो कि हमारे कार्य का एक आवश्यक अंग बन चुकी थी।

समाचार-पत्रों के संवाददाताओं में मेरा विश्वास पैदा करने की जिम्मेदारी लुई होवे की थी। वह स्वयं अपने कार्य का बहुत आदर करता था और वह इस बात पर जोर दिया करता था कि संसार के सब लोगों में पत्रकार सबसे अधिक सच्चरित्र होते हैं। मैं यह विश्वास करने लगी थी कि इस व्यवसाय के पुरुषों की भाँति स्त्रियाँ भी सच्चरित्र होती होंगी और शायद ही कभी मेरे इस विश्वास को आघात पहुँचा हो। जब मैं अपने अतीत पर दृष्टि डालती हूँ तो मैं सोचती हूँ कि मुझे समाचार-पत्रों के लिए काम करने वाली स्त्रियों का आभारी होना चाहिए। पत्रकारों का प्रत्येक सम्मेलन बुद्धि की चतुराई का युद्ध-स्थल बन जाता था और मेरा खयाल है कि वह जितना कठिन मेरे लिए होता था उतना ही पत्रकारों के लिए भी। उदाहरण के लिए जब वह यह पता लगाने की कोशिश में लगे हुए थे कि फ्रैंकलिन प्रेसीडेण्ट के पद के लिए चुनाव में तीसरी बार खड़े होंगे या नहीं तो वे सब तरह के पेचीदा प्रश्न पूछते थे जैसे कि : "क्या अगली सर्दियों का सामाजिक कार्यक्रम पिछले वर्षों-जैसा ही होगा ?" अधिकतर मैं इन प्रश्नों के छिपे हुए अर्थ को समझकर सीधा उत्तर देने से अपने-आपको रोक लेती थी। इस विषय में लुई होवे ने मुझे खूब अच्छी शिक्षा दे रखी थी। पत्रकारों के इन सम्मेलनों से मुझे या मेरे पति को इतनी परेशानी न होती थी जितनी कि अन्य व्यक्तियों को चिन्ता होती नजर आती थी। मेरा विश्वास है कि पत्रकारों और मेरे बीच में एक पारस्परिक आदर की भावना बनी रहती

थी हालाँकि एक-दो मौकों पर मुझे रोष प्रकट करने की आवश्यकता हुई थी।

मुझे एक बार तब बुरा लगा जब कि एक स्त्री-पत्रकार ने मुझे यह कहते बताया कि युद्ध के अन्त होने के बाद हम यूरोप को खाद्य-सामग्री न भेजेंगे। मुझ से जब पूछा गया था कि यूरोप को खिलाने के लिए हम कितना अनाज उपजा सकते हैं तो उत्तर में मैंने कहा था कि सिर्फ हमें ही अकेले यूरोप के लिए अनाज न भेजना होगा। इसके बाद मैंने बताया कि केनेडा, दक्षिणी अमरीका और दूसरे देशों से कितना अनाज आ सकता है। भाग्यवश इन सम्मेलनो मे मेरी कही हुई प्रत्येक बात को कुमारी थॉमसन नोट कर लेती थीं। अतः मेरी कही हुई बातो का शाब्दिक क्रम लेखनीबद्ध हो जाता था। क्योंकि व्हाइट-हाउस में स्त्रियों का एक प्रेस-एसोसियेशन था और उसके अपने नियम थे अतः मैंने स्त्री-पत्रकारो के सुपुर्द यह काम छोड़ दिया कि वे इस बात पर जोर दें कि भविष्य में अधिक सावधानी से काम किया जाना चाहिए और मैंने किसी की ओर से बिना खण्डन हुए उक्त रिपोर्ट को गलत बताया जो कि लापरवाही से अथवा जान-बूझकर लिखी गई थी।

वाशिंगटन मे मेरा पत्रकारों का सम्मेलन बुलाने का यह अर्थ समझा गया कि मैं जहाँ कहीं भी होऊँ वहीं मुझे पत्रकारो को बुलाना चाहिए। अतः जब कभी मैं देश के विभिन्न भागो में भाषण देने जाती तो हमेशा फौरन ही मुझसे पत्रकारों से मिलने के लिए कहा जाता। इन सम्मेलनों में स्थानीय स्त्री-पुरुष पत्रकार होते और बहुधा पत्रकार-कला के छात्र होते, जो विशेष अनुमति पाकर इन सम्मेलनों में भाग लेते थे।

जब हम देश का दौरा कर रहे थे तो इन सम्मेलनों से सम्बन्धित कई मनोरंजक घटनाएं हुईं। मैं और कुमारी थॉमसन एक मध्यपूर्वी नगर में सुबह करीब साढ़े छः बजे पहुँचे। हमें स्टेशन पर एक स्त्री-पत्रकार मिली जो कि हमारे साथ मोटर में बैठकर होटल तक गई। उसने मुझसे कई सवाल पूछे जिनका कि मैंने खुशी-खुशी जवाब दिया और जब हम होटल पहुँचे तो कुमारी थॉमसन ने उससे कहा कि अब मैं पत्रकार-सम्मेलन के नियत समय साढ़े नौ बजे उससे मिलूँगी। उसका उत्तर था कि उसके सम्पादक ने उससे

कहा है कि वह श्रीमती रूजवेल्ट को उस दिन एक मिनट के लिए भी न छोड़े और वह स्त्री यह मान बैठी थी कि वह हमारे कमरों के अन्दर भी हमारे साथ रहेगी। लेकिन कुमारी थॉमसन का विचार भिन्न था, क्योंकि वह जानती थी कि मुझे सारे दिन मेहनत करने से पहले कुछ घण्टे अकेले रहने की जरूरत है और इसलिए वह स्त्री-पत्रकार कमरे के बाहर ही रह गई और दरवाजा बन्द हो गया। शाम के अखबार में मेरे बारे में एक अच्छी-खासी रिपोर्ट लिखी गई जिसका अन्तिम वाक्य था : "श्रीमती रूजवेल्ट के साथ उनकी सेक्रेटरी थी—बहुत ही मामूली लिबास में एक अधेड़ कुरूप-सी स्त्री।"

ह्वाइट-हाउस के शुरू के दिनों में जब कि मैं मुख्यतः घर के काम-काजों में व्यस्त थी मेरे पति एक के बाद एक समस्या का सामना करते जा रहे थे। नये फैसले किये जाते, नये विचारों को आजमाया जाता और लोग उनको कार्यरूप में परिणत करते और व्यापारीगण, जो साधारणतया सरकारी सहायता को तुच्छ समझते थे, सरकार से अपनी समस्याओं को हल करने की प्रार्थना करते और जो-कुछ भी सलाह उन्हें दी जाती खुशी से उसे स्वीकार कर लेते थे।

उन दिनों के शासन में मुझे एक खास बात यह नजर आई कि हरेक हरेक के साथ सहयोग करने का इच्छुक था। और जैसे ही स्थिति सुधरी, लोगों के रवैये में भी फर्क आ गया लेकिन आर्थिक संकट से निकलने का मूल कारण सहयोग की यह भावना ही थी। कांग्रेस की यह परम्परा रही है कि किसी भी प्रेसीडेण्ट को वह आसानी से सब अधिकार नहीं देती, चाहे प्रेसीडेण्ट के राजनीतिक दल का ही बहुमत क्यों न हो। लेकिन कांग्रेस उन शुरू के महीनों में अपने नये प्रेसीडेण्ट को एक के बाद एक अधिकार देती गई और उसने ऐसे कानून पास किये जो कि संकट के समय के अतिरिक्त और कभी न होते थे।

१६३३ के प्रतिष्ठान-दिवस के बाद ही हमारे यहाँ लगातार ऐसे मेहमान आने लगे जिनको रात्रि के भोज के बाद फ्रेंकलिन अपने पढ़ने के कमरे में

ऊपर ले जाते और फिर यह न चाहते कि हम दखल दें जब तक कि वह खुद ही हमको न बुलायं।

इन प्राथमिक वर्षों में ऐसे व्यक्तियों को ह्वाइट-हाउस में आमन्त्रित करने के दो स्पष्ट कारण थे। एक तो यह कि संसार की आर्थिक और राजनीतिक स्थिति ने अन्य देशों के नेताओं से सम्पर्क स्थापित करना आवश्यक बना दिया था; और दूसरा कारण था नये सम्पर्क स्थापित करने की फ्रेंकलिन की इच्छा ताकि इस महाद्वीप और अन्य देशों की जानकारी बढ़े।

१९३३ में हमारे प्रथम अतिथियों में रेमज़े मेकडोनेल्ड और उनकी पुत्री इशबेल थी। हमें उनसे मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई लेकिन फिर भी हमने उन्हें कुछ क्लांत पाया। अपनी पत्नी की मृत्यु से उन्हे बहुत टेस पहुँची थी। हमारे यहाँ से जाते वक्त उन्होंने मुझे एक छोटी पुस्तक दी, जो कि उन्होंने अपनी पत्नी के बारे में लिखी थी।

लुई होवे, जो कि साधारणतया किसी भी व्यक्ति की ओर तब तक ध्यान नहीं देता था जब तक कि वह उससे मिल न चुका हो या उसे कई वर्षों से न जानता हो, इशबेल मैक्डोनेल्ड को इतना चाहने लगा कि वे दोनों पास बैठकर घंटों तक आपस में बातें करते रहते थे, और बाद में उनका आपस में पत्र-व्यवहार भी चलता रहा। यह इशबेल की तीक्ष्ण बुद्धि का परिचय था क्योंकि अधिकांश व्यक्ति लुई होवे का थोड़ा परिचय प्राप्त कर उसके वास्तविक स्वरूप को न जान पाते थे। इशबेल कई वर्षों से अब अपने देश की पार्लिया-मेण्ट की सदस्य रह चुकी है और हमारा विश्वास था कि एक दिन वह राजनीति में प्रभावशाली स्थान प्राप्त करेगी।

मेरा खयाल है कि उन दिनों भी फ्रेंकलिन आंग्ल भाषा-भाषी राष्ट्रों की पारस्परिक जानकारी को बहुत महत्व देते थे; चाहे इन देशों पर आर्थिक संकट हो अथवा सामरिक, जो कि बाद में हुआ। इसका अर्थ यह नहीं कि वह इन अन्य देशों की नीतियों से हमेशा सहमत थे; लेकिन वह हमारे लिए और उन देशों के लिए पारस्परिक सद्भावना, सहयोग और एक-दूसरे की जानकारी के महत्व को समझते थे।

उस प्रथम बसंत-ऋतु में केनेडा के प्रधान मंत्री भी हमारे यहाँ आकर ठहरे ताकि वह मेरे पति और ग्रेट ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री के साथ मिलकर पारस्परिक हितों का थोड़ा बहुत एकीकरण कर सकें।

उन्ही दिनों फ्रेंच कूटनेता एडवर्ड हेरियट भी वाशिंगटन में पधारे। अब जब मैं प्रथम वर्ष में आये हुए मेहमानो की सूची देखती हूँ तो उनकी संख्या देखकर विश्वास नही होता; एक इटालियन, एक जर्मन और एक चीनी मण्डल, यहाँ तक कि एक जापानी राजदूत भी भोज के लिए हमारे यहाँ आये थे। विशेष महत्व रखने वाले अन्य अतिथियों में फिलीपाइन्स के गवर्नर जनरल, फ्रेंक मर्फी आये जिन्होंने कि बाद में सर्वोच्च न्यायालय में काम किया था और वह अपने साथ मेन्युल क्यूजोन को लाये; न्यूज़ीलैंड के प्रधान मन्त्री सपत्नीक दिन के भोजन पर आये; और इथोपिया-सम्राट् के विशेष राजदूत हिज हाइनेस प्रिंस रास देस्ता देम्बे भी आये। उन्होंने हमें उपहारस्वरूप सम्राट् का एक चित्र और दो शेरों की खाल भेंट की जिनमें से एक खाल मेरे पति के अंडाकार कमरे के फर्श पर बिछी रहती थी जो कि उनको आनन्द और गौरव प्रदान करती थी।

प्रथम वर्ष में पनामा के प्रेसीडेण्ट भी हमारे यहाँ पधारे। हमारे अपने गोलार्ध से केवल वही एक-मात्र अतिथि न थे। मई मास के आरम्भ में ब्राज़ीलियन प्रतिनिधि-मण्डल के लिए भोज आयोजित हुआ; अर्जेण्टाइन से एक विशेष राजदूत आये; मेक्सिकन राजदूत भी भोज पर पधारे; और ब्राज़ीलियन राजदूत सारे देश का दौरा करके अपने भ्रमण की रिपोर्ट देने चले गए।

फ्रेंकलिन का यह दृढ़ विश्वास था कि हमें अपने गोलार्ध के पड़ोसी देशों की समस्याओं को समझना और उनके साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार करना सीखना चाहिए। यद्यपि वे लेटिन जातियों के देश हैं, तथापि उनका विश्वास था कि दोनों की पारस्परिक मैत्री का कोई-न-कोई समान आधार अवश्य ढूँढ़ा जा सकता है। उनका विश्वास था कि मैत्री का प्रथम प्रयास हमारी ओर से होना चाहिए क्योंकि हमारा 'बड़े भाई' वाला गलत रुख उन्हें

पसन्द नहीं है। अतः उस समय ही वह अपने व्यक्तिगत सम्पर्कों से 'अच्छे पड़ोसी की नीति' की नींव डाल रहे थे जो कि बाद में अधिकाधिक महत्व पाती गई।

जब मार्च १६३३ मे प्रथम महायुद्ध के योद्धाओ ने द्वितीय बोनस-मार्च आरंभ किया तो मुझे खतरा था कि इस आने वाली दुर्घटना को रोकने के लिए कुछ न किया जा सकेगा। लेकिन लुई होवे के साथ विचार-विमर्श करने के बाद फ्रेंकलिन ने तुरन्त ही तय किया कि इन सैनिकों को एक पुराने शिविर मे रखा जाना चाहिए और व्यवसाय-हीन व्यक्तियो की सहायतार्थ रखे हुए कोष में से उनके भोजन का प्रबन्ध होना चाहिए। इस विषय पर फ्रेंकलिन घंटों नेताओं से बातें करते रहे। उन लोगो ने सरकारी सभा-मण्डप में सभाएं की जिन्हे सुनने कांग्रेस के सदस्य भी आये। फलतः सारा काम शांतिपूर्वक हो गया।

वैसे लुई होवे अक्सर दोपहर में मुझसे मोटर मे अपने-आपको ले चलने के लिए कहा करता था लेकिन जब एक दिन उसने यह कहा कि मैं उसे पोटोमेक लाइन के पास स्थित पुराने सैनिकों के शिविर मे ले चलूँ तो मुझे कुछ आश्चर्य हुआ। वहाँ पहुँचने में हमें देर न लगी। वहाँ पहुँचकर उसने कहा कि वह गाड़ी में बैठा रहेगा लेकिन मुझे सैनिको मे घूमकर देखना होगा कि उनका कैसा प्रबन्ध है। बहुत-कुछ सकुचाते हुए मैं गाड़ी से उतर-कर वहाँ पहुँची जहाँ कि भोजन पाने के लिए लोग एक पंक्ति मे प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने अचरज-भरी निगाहों से मेरी ओर देखा और उनमें से एक ने मुझसे पूछा कि मेरा क्या नाम है और मैं क्या चाहती हूँ। जब मैंने यह कहा कि मैं यह देखना चाहती हूँ कि वे लोग कैसे रह रहे हैं तो उन्होने मुझे अपने साथ शरीक होने के लिए कहा।

जब खाने की चीजों से उनके कटोरे भर चुके तो मैं उनके साथ खाने के बड़े कमरे में गई जहाँ कि उन्होंने कुछ शब्द कहने के लिए मुझे आमन्त्रित किया। मेरा खयाल है कि मैंने यह कहा कि मैं १६१६ मे लड़ाई के मोर्चे पर हो आई हूँ, और उन्होंने कुछ पुराने सैनिक-गीतों को गाकर मुझे

सुनाया। भोजन के उपरान्त उन्होने मुझे कई दूसरी इमारतें और वह अस्पताल दिखाया जो कि खास तौर पर उनके लिए बनाया गया था।

मेरा खयाल है कि मैंने पूरा एक घण्टा भी वहाँ न बिताया होगा; लौटकर मैं अपनी मोटर मे बैठकर चल दी। हरेक ने विदाई में हाथ हिलाया और मैंने कहा "गुड लक," और उत्तर में उन्होंने कहा, "भगवान् आपका भला करे।" मेरी उपस्थिति से उन लोगो के बीच बिलकुल उत्तेजना न फैली और अगर कही मेरे बचाव की जरूरत भी होती तो मेरी रक्षार्थ एक थका-माँदा नाटा-सा भद्र पुरुष लुई होवे मोटर में पड़ा सो रहा था।

लुई होवे को यह जानकर खुशी हुई कि मैंने उसके कहने के अनुसार काम किया और मेरा खयाल है कि मेरे इस काम का अच्छा असर पड़ा। कई लोगों ने बाद में जब यह पूछा कि हमारी रक्षा का क्या प्रबन्ध था और जब मैंने उत्तर में कहा कि "कुछ नहीं" तो वे हैरत मे पड़ गए। सैनिकों के शिविर में जाने से, लुई होवे का खयाल था, उसे बहुत लाभ पहुँचा।

हम लोग, जो लुई के अधिक सम्पर्क में आते थे, जान गए कि उसका स्वास्थ्य गिर रहा है। वह समाचार-पत्रों से घिरा हुआ अधिकांश अपने कमरे में ही बैठा रहता लेकिन अपने जीवन के अन्तिम दिनों तक उसकी सलाह कीमती साबित हुई। १८ अप्रैल, १६३६ को वाशिंगटन के जलसेना-अस्पताल में उसका देहान्त हो गया।

तीन

अपनी मोटर खुद चलाने के सवाल पर शुरू में ही मेरा गुप्त विभाग के लोगों से झगड़ा हुआ। गुप्त विभाग प्रेसीडेण्ट की पत्नी के साथ अपना एक प्रतिनिधि रखना चाहता था लेकिन मैं मोटर-ड्राइवर या गुप्त विभाग के प्रतिनिधि को हमेशा अपने साथ रखना पसन्द न करती थी। गुप्त विभाग के प्रतिनिधि को अपने साथ रखने के लिए तो मैं कभी भी राजी नहीं हुई, लेकिन ह्वाइट-हाउस के अपने अन्तिम वर्षों में मेरा जीवन इतना व्यस्त रहने लगा था कि खुद मैं बहुत कम मोटर चलाती थी और वैसे भी घूमने-फिरने या काम से बहुत कम मोटर में आती-जाती थी। लेकिन हमेशा मेरी अपनी एक अलग मोटर रही और शुरू के वर्षों में मैंने उसे खुद काफी चलाया।

यहाँ मुझे कुमारी थॉमसन की बताई हुई एक बात याद आ गई। युद्ध-कालीन वर्षों में मैं बाल्टीमोर की जेलों का निरीक्षण करने श्री मौरी मेवरिक के साथ गई जो कि जेल के उद्योगों के अध्यक्ष थे और मुझे आवश्यक सामग्रियों की सुरक्षा का कार्य दिखाना चाहते थे। इस दौरे को अपने दैनिक कार्यक्रम में शामिल करने के लिए मुझे ह्वाइट-हाउस से बहुत सुबह फ्रैंकलिन से प्रातःकालीन अभिवादन किये बिना ही जाना पड़ा। दफ़्तर जाते समय फ्रैंकलिन ने टॉमी को बुलाकर पूछा कि मैं कहाँ गई हूँ। "वह जेल में हैं, मिस्टर प्रेसीडेण्ट", टॉमी ने उत्तर दिया। "यह कोई आश्चर्य

की बात नहीं", फ्रैंकलिन ने कहा, "लेकिन आखिर किस लिए ?"

जब कभी मैं या मेरे पति किसी दौरे से लौटते तो हम एक ऐसे खाने का प्रबन्ध करते जिसमें किसी का दखल न हो ताकि दौरे का हाल ताज़ा सुना जा सके न कि बार-बार दोहराया जाकर पुराना होकर सुना जाय। वह हमेशा मुझसे सवाल पूछा करते थे लेकिन अब उनके प्रश्नों का एक विशेष उद्देश्य होता था।

गेस्प प्रायद्वीप के मेरे दौरे के बाद उन्होंने उत्तरी मेन के जीवन के बारे में मुझसे पूछा और शीघ्र ही भावी दौरों मे जिन बातों का ध्यान रखना था उनकी रूपरेखा बन गई। मेरे लिए यह शिक्षा बहुत ही अच्छी साबित हुई हालाँकि जिन दिनो फ्रैंकलिन गवर्नर रह चुके थे उन्हीं दिनो मैं इस दिशा में काफी अनुभव प्राप्त कर चुकी थी। जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए मैं अच्छी रिपोर्टर बनती गई और मेरी निरूपण-शक्ति उत्तरोत्तर बढ़ती गई—इसका अधिकतर श्रेय फ्रैंकलिन के प्रश्नों को है जिनका दायरा बहुत बड़ा होता था। मेरे लिए हरेक चीज़ को अच्छी तरह देखना अनिवार्य हो गया था। उदाहरण के लिए जब मैं गेस्प प्रायद्वीप से लौटी तो उन्होने न सिर्फ यही जानना चाहा कि वहाँ किस प्रकार की मछलियाँ और कैसा शिकार मिलता है बल्कि मछुओं को जिन्दगी, उनके खान-पान, रहन-सहन, वहाँ के खेत-खलिहान, वहाँ मकान कैसे बने हुए हैं, किस तरह की शिक्षा का प्रबन्ध है, क्या वहाँ अन्य गाँवों की तरह शिक्षा का प्रबन्ध चर्च के अधीन है आदि प्रश्न पूछे।

जब मैंने मेन के बारे में बताना शुरू किया तो उन्होंने मेरे देखे हुए खेतो की हर बात जाननी चाही, कि वहाँ किस प्रकार के लोग हैं और कैसे उनके मकान हैं, कि वहाँ के रहने वाले इंडियनो का कैसा रहन-सहन है और वे कहाँ से आकर वहाँ बसे हैं।

पतझड़ के मौसम में क्वेकर्स की ओर से पश्चिमी वर्जीनिया की कोयले की खानों के इलाकों का निरीक्षण करने का मुझे निमन्त्रण मिला जहाँ की दशा सुधारने का वे लोग प्रयत्न कर रहे थे। मेरे पति को यह विचार

पसन्द आया अतः मेरे जाने की तैयारी हो गई। चूँकि मेरी फोटो अधिक नहीं उतरी थी इसलिए उस इलाके में मुझे पहचाना न गया और मैं सारे दिन एक सामाजिक कार्यकर्ता के मोटरगनटाउन, पश्चिमी वर्जीनिया में घूमती रही और कोई यह न जान सका कि मैं कौन हूँ या कि मैं सरकार से थोड़ा-सा सम्बन्ध भी रखती हूँ।

जो-कुछ मैंने वहाँ देखा उससे मेरा दृढ़ विश्वास हो गया कि खानों के इलाकों में थोड़े-से नेतृत्व से यदि जनता की क्रान्ति नहीं तो कम-से-कम जनता की एक पार्टी तो अवश्य बनाई जा सकती है जो कि उन दूसरी पार्टियों की तरह होगी जो विषम आर्थिक स्थिति से उत्पन्न होती है। उस इलाके मे ऐसे लोग भी थे जो तीन से पाँच वर्ष तक सरकारी सहायता पर जीवित थे और जो प्रायः यह भूल चुके थे कि हफ्ते में एक-दो दिन से अधिक काम करना क्या होता है। वहाँ ऐसे बच्चे थे जो यह तक न जानते थे कि किस प्रकार मेज पर बैठकर एक पूरा खाना खाया जाता है।

खानों के इलाके के इस दौरे से क्वेकर्स द्वारा किये हुए कार्य से मेरा प्रथम सम्पर्क हुआ। मैं जिन क्वेकर-कार्यकर्ताओं से मिली वे मुझे पसन्द आए और मुझे लोगों को खुद अपनी मदद करने के लिए काम में लगाने की उनकी नीति भी पसन्द आई। वहाँ एक कुरसी बनाने का कारखाना था और उसमें कुछ ऐसी कमाल की मशीनें थी जिन्हें मैंने पहली बार देखा था। लेकिन इस कारखाने का असली उद्देश्य लोगों को खान में काम करने के अलावा दूसरा काम करना सिखाना था तथा उनकी आशाओ को जागृत करना था। लोगों को काम में लगाकर उन्हें अपनी योग्यता का उपयोग तथा नये कौशल विकसित करने का अवसर दिया जाता था। जो लोग कुरसी बनाने के काम में लगे हुए थे वे गरीबी में सजाये हुए अपने घरों के लिए भी फर्नीचर बनाते थे। स्त्रियो को उन घरेलू कलाओं को पुनर्जीवित करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता था जो कि सम्भवतः वे कभी जानती थी लेकिन खानों के इलाके के शुष्क और नीरस जीवन में वे भूल चुकी थी।

खानों के इलाकों में इसके बाद मैं कई बार और गई, लेकिन इस पहले

दौरे ने ही मुझे घरेलू उद्योगों के आरम्भ करने का विचार दिया। मोरगन-टाउन मे पश्चिमी वर्जीनिया के विश्वविद्यालय ने क्वेकर-कृषि-कार्य द्वारा खानों में काम करने वालों की सहायतार्थ एक समिति का निर्माण किया है। इस समिति के कारण और इसके अनुभव की बुनियाद से सरकार को विश्वविद्यालय के श्री बुशरोड ग्राइम्स की सेवाएं प्राप्त हुई और इस प्रकार पुनःस्थापन प्रशासन की नींव डाली गई। लुई होवे ने एक छोटी सलाह-कार-समिति बनाई, जिस पर मैंने काम किया। यह सब प्रायोगिक कार्य था लेकिन इसका उद्देश्य लोगों को सरकारी आर्थिक सहायता से अलग करके उन्हें अपने पैरो पर खड़ा करना था, उन्हें खुद अपने मकानों को बनाने और कुछ जमीन देकर खेती करने के लिए प्रोत्साहित करना था।

यह आशा थी कि व्यापारी-गण इन कार्यों के आधार पर एक ऐसा उद्योग आरम्भ करके सहायता देंगे जिसमें कुछ लोगों को स्थायी काम मिल सकेगा। कुछ छोटे उद्योग-धन्धे आरम्भ भी किये गए, किन्तु बहुधा वे असफल ही रहे। केवल थोड़े-से पुनःस्थापन-कार्यों को कुछ सफलता मिली लेकिन तो भी मेरा हमेशा से यही खयाल है कि जो-कुछ इनसे भला हुआ उसका अन्दाजा नही लगाया जा सकता। स्थिति प्रायः ऐसी हो चुकी थी जिसमें क्रान्ति पैदा होती है, अतः वहाँ की जनता को यह महसूस करना जरूरी था कि उनकी सरकार को उनके हितों का खयाल है।

मुझे पश्चिमी वर्जीनिया के लोगन जिले की विषम स्थिति की खबरें मिलने लगी जहाँ कि कई वर्षों से परिवार तम्बुओं में रहते थे क्योंकि एक हड़ताल के बाद कम्पनी ने उन्हें अपने बनाये हुए मकानों से निकाल दिया था। सब मजदूरों का नाम ब्लेक लिस्ट मे दर्ज कर दिया गया था और अब उन्हें कही भी काम नहीं मिल सकता था; वे लोग केवल उस नाम-मात्र के भत्ते पर जीवित थे जो कि वर्जीनिया की सरकार बेकार लोगों को देती थी।

कई वर्षों से इस इलाके में मैं स्त्रियों की ट्रेड यूनियन लीग द्वारा कुछ चन्दा भेज देती थी, लेकिन मैंने वहाँ की वास्तविक दशा कभी न देखी थी। मेरे पास खबरें पहुँचने लगी कि तम्बू फट चुके हैं, बीमारियाँ फैल रही हैं

और इलाज का कोई इन्तज़ाम नहीं है। आखिर मैंने और श्रीमती लियोनार्ड एल्महिर्स्ट ने मिलकर वहाँ बच्चों की देख-भाल के लिए एक अस्पताल खोला। जब मैंने उस इलाके के हालात का जिक्र अपने पति से किया तो उन्होंने मुझे हैरी होपकिन्स से मिलने के लिए कहा और साथ मे यह भी कहा कि मैं हैरी होपकिन्स से कहूँ कि इस दशा मे जो-कुछ भी जरूरी हो वह किया जाय और क्रिसमस तक इन परिवारो को तम्बुओं से बाहर निकाल लिया जाय। यह काम पूरा हुआ और अगले दो सालो तक रेडियो-कार्य द्वारा प्राप्त अपनी पूँजी और श्रीमती एल्महिर्स्ट के सौजन्य से उस इलाके के बच्चो की देख-भाल हम करते रहे और उन विषमताओं को दूर करने के प्रयत्न में लगे रहे जो कि पिछले कई वर्षों से चलती आ रही थी।

घरेलू उद्योगो के आरम्भ होने के बाद मैंने बहुत-से लोगों को इन उद्योगों को देखने के लिए भेजा। शुरू मे मैं कार्य-निरीक्षक श्री ग्लेन वर्क के घर में ठहरती थी जो कि खान में काम करने वाले मजदूरों के ऊपर काम कर चुके थे और जिन्हें मजदूरों और उनके परिवारो के रहन-सहन की स्थिति का ज्ञान था। मोरगेनटाउन के पास शुरू किये गए घरेलू उद्योग का नाम अर्थरडेल पड़ा जिसमें कि आसपास की खानों के पास स्थित गाँवो में रहने वाले लोग काम करने आते थे।

अर्थरडेल जाने वाले व्यक्तियों में सबसे पहले बर्नार्ड एम० बारुच थे, जिन्होने वहाँ प्राथमिक स्कूल की स्थापना करने में सहायता दी और जो कि इस कार्य मे हमेशा दिलचस्पी लेते रहे और कई बार मेरे साथ गये बिना ही वह खुद अकेले वहाँ चले जाते थे। मेरी हमेशा से यही आशा थी कि इस कार्य के आरम्भ होने के छः महीने बाद ही बच्चों के जीवन में परिवर्तन देखकर उन्हें वही सन्तोष प्राप्त होगा जो कि मुझे हुआ था।

किसी कार्य को करते समय उसके भावी परिणामों की विविधता को सम्पूर्णतया समझना कठिन है। इस इलाके के मेरे दौरे और भाषणों से एक ऐसा लाभ हुआ कि जिसका उस समय मुझे अन्दाज़ा न था। युद्ध के दिनों में जब मैं अस्पताल मे पड़े हुए लोगो को देखने जाती तो बिस्तरे में पड़ा

हुआ कोई युवक कह उठता : "मैं···का रहने वाला हूँ। आपने हमारे स्कूल मे भाषण दिया था।" और मैं उसके शहर के बारे में सोचने लगती क्योंकि अपने घर से दूर अस्पताल में अकेले पड़े हुए लड़के को दुनिया ज्यादा अच्छी लगने लगेगी अगर किसी को उसके शहर के चौक या कचहरी की इमारत की याद हो।

मैं अपनी मूल कहानी से हटती जा रही हूँ लेकिन जो-कुछ मैंने कहा है सम्भवतः वह यह स्पष्ट करने में सहायक होगा कि क्यों इतने वर्षों तक अर्थरडेल और ऐसे ही अन्य घरेलू उद्योग-कार्य मुझे प्रिय थे। वहाँ की कुछ चीजें और कुछ लोगो को मैं कभी न भूल सकूँगी।

उदाहरण के लिए क्रिसमस-दिवस से पूर्व जब कि कुछ लोग मकानों में रहने आ चुके थे, मैं एक युवती से मिलने गई जिसके कि हाल में ही बच्चा हुआ था। उसके दो और बच्चे थे, शायद चार और छः वर्ष की दो छोटी लड़कियाँ। और यह नया बच्चा लड़का था। मैंने उससे मिलते ही कहा कि मुझे दुःख है कि इस क्रिसमस के अवसर पर कुछ करना उसके लिए कठिन होगा। उसका चेहरा चमक रहा था, उसने मेरी ओर देखकर कहा : "यह बहुत शानदार क्रिसमस का त्योहार होगा। आपको मालूम है पिछले साल का त्योहार कैसा बीता? हम एक ऐसे घर में थे जिसमे खिड़कियाँ न थी, रोशनी सिर्फ दरवाजे में से आती था। बच्चों से हमारी यह कहने की हिम्मत न हुई कि आज क्रिसमस का दिन है लेकिन जब वे बाहर से लौटकर आये तो वे बोलीं "माँ, आज कोई खास दिन जरूर है, कुछ बच्चों के पास नये खिलौने हैं। पिछले त्योहार पर हम बच्चो को सिर्फ कच्ची गाजरें खाने के लिए दे सके। इस साल हरेक को एक-एक खिलौना मिलेगा और अब की बार खाने के लिए हमारे पास मुर्गा है। यह त्योहार शानदार होगा।"

एक बड़ी उम्र का आदमी खास तौर पर मुझे बहुत पसन्द आया। उसको समझना कुछ मुश्किल था क्योंकि उसकी पत्नी बूढ़ी और बीमार थी और घर में उसकी मदद करने के लिए सिर्फ एक तेरह वर्ष का पोता था। वह बूढ़ा प्रशासन-संस्था की इमारत का चौकीदार था। वह अपने-आपको

अपने घर और बाहर के मैदान को साफ-सुथरा रखता, और अपनी पत्नी का उपचार एक काम सीखी हुई नर्स की भाँति करता था।

इन कार्यों से सरकार को आर्थिक लाभ तो सन्तोषजनक न हुआ लेकिन इस मानवीय कार्य का अपना अलग ही मूल्य था।

कई वर्षों बाद जब सामाजिक सुरक्षा-एक्ट पास हुआ तो मैंने इस इलाके में देखना चाहा कि इस एक्ट का व्यक्तिगत रूप में क्या प्रभाव पड़ रहा है। एक खान के अन्दर दुर्घटना होने के कारण बहुत-से आदमी मारे गए थे, अतः मेरे पति ने मुझे वहाँ जाकर देखने के लिए कहा कि इस बारे मे लोग क्या कह रहे हैं। एक आदमी दुर्घटना के बाद अपने साथियों को बचाने के लिए खान में गया और खुद मौत का शिकार हो गया। उसकी वीरता के कारण उसके नाम पर कारनेगी-पारितोषिक प्रदान किया गया। उसकी विधवा स्त्री के कई बच्चे थे अतः सामाजिक सुरक्षा-एक्ट के अन्तर्गत प्राप्त सहायता उस विधवा के लिए अच्छी साबित होती। एक अन्य विधवा से, जिसके तीन बच्चे थे और चौथा पैदा होने वाला था, मैंने पूछा कि वह अपना प्रबन्ध कैसे करेगी तो उसने विश्वास भरे स्वर में कहा : "मेरी बहन और उसके दोनों बच्चे भी यहीं हमारे साथ आकर रहेंगे। मुझे सामाजिक सुरक्षा से हर महीने करीब ३२५) मिलेंगे। मुझे अपने मकान और जमीन के लिए हर महीने ७५) देने होते हैं। मैं अपनी जमीन पर सब्ज़ी उगाऊँगी और मुर्गियाँ पालूँगी और सरकार की ओर से मिले पैसों से अपना निर्वाह अच्छी तरह कर लूँगी। पहले जमाने में शायद मुझे कम्पनी की ओर से थोड़ा पैसा मिल जाता और अगर दूसरे मज़दूर कुछ रुपया इकट्ठा कर पाते तो कुछ वह भी मिल जाता, लेकिन अब मैं जब तक कि मेरे बच्चे बड़े नहीं हो जाते सरकार की ओर से प्राप्त आय पर निर्भर कर सकती हूँ।"

१७ नवम्बर १६३३ को मेरे पति और श्री लिटविनोफ के बीच सोवियट यूनियन के संयुक्त राष्ट्र अमरीका द्वारा स्वीकरण की अंतिम वार्ता हुई। इन दोनों देशों के बीच प्रथम टेलीफोन-वार्ता ने लोगों में हलचल मचा रखी थी; यह वार्ता ह्वाइट-हाउस में बैठे हुए श्री लिटविनोफ ने रूस में अपनी पत्नी

और पुत्र से की थी। ह्वाइट-हाउस के अधिकारियों ने इसे अपनी बही में दर्ज कर लिया, क्योंकि अन्य यूरोपियन देशों से पहले भी टेलीफोन पर बातें होती रहती थीं लेकिन यह रूस से कूटनीतिक सम्बन्ध की स्थापना का आरम्भ था।

मेरे पति अक्सर इस वार्ता के उस विशेष स्थल का उल्लेख किया करते थे जिसका कि रूस में धार्मिक आचरण की स्वतन्त्रता से सम्बन्ध था। उन्होंने इस बात-पर जोर दिया था कि यदि किसी स्वीकृत धार्मिक समुदाय के सदस्यों की संख्या अधिक है तो उन्हें अपना एक पुजारी या पादरी रखने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए ताकि वे अपने धार्मिक रीति-रिवाजों को सम्पन्न कर सकें। उन्होंने यह आश्वासन प्राप्त कर लिया था कि इस बात की इजाजत दी जायगी हालाँकि शुरू में इस बारे में रूसी प्रतिनिधि को कुछ हिच-किचाहट जरूर थी।

यह बताने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए कि मेरे पति के कुछ पुराने मित्रों ने रूस के स्वीकरण का काफी विरोध किया। स्वीकरण की घोषणा होने से पूर्व उनकी माँ ने उनके पास आकर कहा कि उन्होंने यह अफवाह सुनी है कि वह रूस का स्वीकरण करने वाले हैं। लेकिन यह उनका विचार था कि ऐसा करना विपत्तिजनक होगा, जिसके फलस्वरूप उनके अधि-कांश पुराने मित्र उन्हें गलत समझ बैठेंगे। मेरे पति ने यह घटना बड़े मनोरंजन के साथ मुझे सुनाई और कहा कि उनके खयाल में उनकी माँ का कहना बिलकुल ठीक था कि अगले कुछ वर्षों में उनके पुराने मित्रों को अभी और सख्त धक्का पहुँचने वाला है। उनका यह कथन सच था, जिसकी सचाई उनके शासन-काल मे कई बार साबित हुई। न सिर्फ़ अपने पुराने मित्रो से ही बल्कि बहुत-से अन्य व्यक्तियों से भी फ्रैंकलिन का इस नीति पर झगड़ा हो जाता था कि सरकार का जनता के प्रति एक उत्तरदायित्व है। मुझे याद है कि जब सीनेट के सदस्य कार्टर ग्लास ने इस बात पर जोर दिया कि वर्जीनिया को आर्थिक सहायता की आवश्यकता नहीं है तो फ्रैंकलिन ने उन्हें अपने साथ चलकर उन स्थानों को देखने के लिए कहा जिनकी दशा

बहुत बिगड़ी हुई थी। सीनेट के उन सदस्य महोदय ने यह निमन्त्रण कभी स्वीकार नहीं किया।

हमारी परराष्ट्र-नीति में सबसे पहले रूस के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध तथा अपने गोलार्ध के अन्य देशों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने पर जोर दिया गया, लेकिन मुख्यतः उन प्रारम्भिक वर्षों मे गृह-नीति से सम्बन्धित प्रश्नों तथा हमारी आन्तरिक आर्थिक स्थिति पर जोर दिया गया जैसा कि किया जाना भी चाहिए था।

जब मै प्रथम वर्ष के किये हुए कार्यों को देखती हूँ तो समझ पड़ता है कि जिस काम से मेरे पति को सबसे अधिक प्रसन्नता प्राप्त हुई, वह था—अप्रैल ५, १९३३ को सिविलियन कॉनसरवेशन कोर नामक संस्था की स्थापना। उन दिनो किशोरावस्था के बालक, हाई स्कूल पास किये हुए लड़के, कॉलेज में भर्ती होने की कोशिश करते हुए युवक सबका जीवन अस्त-व्यस्त था। कई वर्षों से फ्रैंकलिन लड़कों के लिए घर से बाहर किये जाने वाले कार्यों तथा उनकी ज्ञान-प्राप्ति के मूल्य के बारे मे कुछ असंगत-सी बाते किया करते थे और उनकी हमेशा से हाइड-पार्क में एक ऐसा स्कूल खोलने की इच्छा थी जिसमें लड़को को शारीरिक एवं मानसिक परिश्रम करने का अवसर प्राप्त हो। मेरा खयाल है कि जब वह सी० सी० सी० की योजना बना रहे थे तो उक्त विचार उनके मस्तिष्क की पृष्ठभूमि मे मौजूद थे। सिविलियन कॉनसरवेशन कोर के तीन लाभ थे : इसके द्वारा युवकों को अपने देश के विभिन्न भागों को देखने का अवसर मिलता था, और खुले मैदान मे दिन-भर काम करना वह सीखते थे, जिससे कि उनको शारीरिक लाभ होता था; और साथ मे उनकी नकद आमदनी भी होती थी जिनका कुछ अंश उनके परिवारों को भेजा जाता था। इससे युवकों और उनके परिवार के व्यक्तियों की नैतिकता पर भी अच्छा प्रभाव पड़ा। पुनरुत्थान की बृहत् योजना में यह छोटी योजना मेरे पति की अपनी देन थी। चूँकि इससे राष्ट्र के नवयुवकों को सहायता पहुँची और चूँकि उन्हे अपने इस काम में गहरी

दिलचस्पी थी अतः फ्रेंकलिन का विश्वास था कि सी० सी० सी० एक स्थायी संस्था बन जायगी।

१६ जून १९३३ को सार्वजनिक कार्य प्रशासन की स्थापना से इस आर्थिक संकट-काल में सार्वजनिक कार्यों का करना सरकार के लिए सम्भव हो गया। ऐसे कार्यों के लिए रुपया कर्ज देकर, जिनके लिए विभिन्न राज्य स्वयं रुपया नहीं लगा सकते थे, व्यवसायहीनता को किसी हद तक दूर किया गया।

पाँच महीने बाद, नवम्बर १९३३ में नागरिक कार्य-प्रशासन की स्थापना हुई जिसने आगे चलकर चालीस लाख बेकार लोगों को काम दिया।

मैंने देश के अपने दौरों में सार्वजनिक कार्य-प्रशासन (पी० डब्ल्यू० ए०) और नागरिक कार्य-प्रशासन (सी० डब्ल्यू० ए०) द्वारा निर्मित बहुत-सी चीजें देखी। मैंने सिविलियन कॉनसरवेशन कोर (सी० सी० सी०) द्वारा किये हुए कार्यों को भी देखा। इन संस्थाओं का किया हुआ कार्य नागरिक तथा ग्रामीण क्षेत्रों में जगह-जगह दिखाई देने लगा। भूमि की सुरक्षा और वन-सम्बन्धी कार्यों में उन्नति होने लगी, आमोद-प्रमोद के क्षेत्र बनाये जाने लगे और असंख्य पुल, स्कूल और अस्पतालों का निर्माण किया गया, जो कि इन संस्थाओं के तत्त्वावधान में किये हुए सुकार्यों के स्थायी स्मारक हैं। यह ठीक है कि इन कार्यों में देश की जनता का बहुत रुपया खर्च हुआ लेकिन इनसे एक सामूहिक लाभ हुआ जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण आज भी दिखाई दे रहा है।

सम्भवतः सबसे दूरदर्शी कार्य टेनेंसी वैली ऑथेरिटी का निर्माण था। यह सिनेट के सदस्य जॉर्ज नॉरिस का सबसे बड़ा स्वप्न था और जिस किसी ने भी इस कार्य की प्रगति देखी है वह नॉरिस के उस जोश को भी न भूलेगा जिसका कि उस समय बहुत-से लोग मजाक उड़ाते थे। यह कार्य प्रथम महायुद्ध के दौरान मे आरम्भ हुआ था लेकिन युद्ध के बाद बन्द कर दिया गया था। यह कार्य फिर तब ही जाकर शुरू हुआ जब कि मेरे पति ने सीनेटर नॉरिस के स्वप्न की महानता समझकर इस कार्य को उस समय

प्रोत्साहन दिया जब कि वह देश के लिए अधिकतम लाभकारी सिद्ध हो सकता था। एक सम्भावित युद्ध की माँगो का खयाल करके उन्होंने टी० बी० ए० के कार्य को अधिकाधिक शीघ्रता से पूरा किये जाने के लिए जोर दिया। उस समय भी उनका विश्वास था कि विशेष परिस्थितियो के दबाव से युद्ध शीघ्र ही आरम्भ हो सकता है। और वह जानते थे कि अगर ऐसा हुआ तो हमें उस प्रत्येक वस्तु की आवश्यकता होगी जो कि टी० वी० ए० उपलब्ध कर सकता है।

१६३२ के दौरे में मैं अपने पति के साथ टी० वी० ए० के कुछ इलाको में से गुजरी थी, और स्टेशनो पर सम्मिलित हुई भीड़ को देखकर वह बहुत प्रभावित हुए थे। वे लोग इतने गरीब थे; उनके मकानो पर रंग-रोगन न था, उनकी गाड़ियाँ टूटी-फूटी थी और उनमें से कई बच्चे और बड़ी उम्र के लोगों के पास जूते न थे या पूरे कपड़े न थे। आठ वर्ष बाद ही जब कि मकान, शिक्षा और कृषि-सम्बन्धी प्रयोगों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देने लगा था, मैं इस इलाके में एक बार फिर गई—और इससे अधिक समृद्धिशाली इलाका पाना मुश्किल था। मैंने हमेशा चाहा था कि जो लोग अन्य नदियों की घाटियों में ऐसे लाभप्रद कार्यों के निर्माण का विरोध करते हैं वह उस अन्तर को देख पाते जो कि मैंने देखा था। मैं जानती हूँ कि ऐसे परिवर्तन धीरे-धीरे होते हैं लेकिन कुछ न होते देखना मुझे बहुत बुरा लगता है। मेरी इच्छा है, जैसी कि मेरे पति की भी हमेशा इच्छा थी, कि मिसोरी नदी और मिस्सीसिप्पी नदी के मुहाने पर हमें इस दिशा में कार्य आरम्भ करने का प्रतिवर्ष कुछ-न-कुछ प्रयत्न करते रहना चाहिए। ऐसे प्रयोग जो कि जनता के जीवन का उत्तरोत्तर सुधार करने के साथ ही बाहरी आक्रमणों से लोकतन्त्र की रक्षा के गढ़ हैं।

चार

अपने अतीत को देखने से ह्वाइट-हाउस में व्यतीत किये हुए वर्षों में सबसे अधिक शान्तिमय और सबसे कम चिन्तामय १६३४ से १६३७ के वर्ष प्रतीत होते हैं। नये सुधारों से देश की स्थिति अधिकाधिक दृढ़ होती जा रही थी : पूँजी और श्रम मे तथा प्रेसीडेण्ट और कांग्रेस में सामान्यतः पारस्परिक सद्भावना बनी हुई थी; और हमारे पारिवारिक जीवन में हमने क्रमशः अपनी व्यक्तिगत परम्पराओं और अभ्यासों को ह्वाइट-हाउस की आवश्यकताओ के अनुकूल बना लिया था।

१६३४ के वसन्त में फ्रैंकलिन ने सलाह दी कि मैं प्यूरटो रीको का भ्रमण कर आऊँ। इस द्वीप के गवर्नर जनरल ब्लेण्टन विनशिप उन दिनों बड़ी कठिनाइयों का सामना कर रहे थे। श्रम-स्थिति विषम थी और निरन्तर बढ़ती हुई जन-संख्या के लिए पर्याप्त खाद्य-सामग्री नही थी। चीनी की कम्पनियों के पास जमीन के बड़े-बड़े चक थे और क्योकि काम एक खास मौसम में ही होता था इसलिए मजदूरों को वेतन बहुत ही कम मिल पाता था और मजदूर बेकारी के दिनों में प्रायः भूखे ही रहते थे। रेक्सफर्ड टगवैल, जो कि उन दिनों कृषि-विभाग में था, वहाँ यह देखने जा रहा था कि स्थिति में किस प्रकार सुधार किया जा सकता है और मेरे पति ने सोचा कि

अगर मैं भी चली जाऊँ तो लोग यह समझ सकेंगे कि प्रेज़ीडेण्ट को वहाँ की हालत में दरअसल दिलचस्पी है।

प्यूरटो रीको में मैं गवर्नर की पुरानी खूबसूरत गुलाबी इमारत में ठहरी जो कि खाड़ी के मुहाने पर स्थित है और जो कि कभी एक तरह की गढ़ी रह चुकी थी।

मेरे लिए बड़ी सावधानी से कार्यक्रम बनाया गया था जिसके अनुसार मैंने कई ग्रामीण स्कूलों का निरीक्षण किया। मैंने स्त्रियों द्वारा किये गए घरेलू काम को भी देखा। कुछ कढ़ाई का काम बहुत उम्दा था, लेकिन जिस कपड़े पर वह किया गया था वह उस कढ़ाई के लायक न था। फैक्ट्री में बहुत कम वेतन मिलता था और घरेलू काम का मेहनताना भी इतना कम था कि विश्वास नहीं होता था। स्कूल की खाने की छुट्टी में छोटी लड़कियाँ रूमालों पर कढ़ाई करती रहती थी ताकि वे अपने परिवार की आय में कुछ पैसे और जोड़ सकें।

सफाई की दृष्टि से देहात के घरों की हालत बहुत बुरी थी लेकिन शहरों में भी यह हालत इतनी बुरी थी कि देखकर अचम्भा होता था। मुझे याद है एक सड़क पर जाकर मैंने फैक्ट्री में काम करने वाले मज़दूरों के घर देखे थे। अधिकांश मकानों में सिर्फ दो कमरे थे; पिछले कमरे में रोशनी न थी और सामने वाले कमरे में जो थोड़ी-बहुत रोशनी थी वह दरवाज़े से ही आती थी। ईंटों के बने इन पुराने मकानों में नल या और कोई आधुनिक सुविधा न थी। अधिकांश स्त्रियाँ घर के बाहर खाना बनाती थी और मुझे आश्चर्य होता था कि वे अपना थोड़ा खाना भी इतने छोटे चूल्हों पर कैसे बना पाती थीं।

असली गन्दी गलियाँ तो, मेरा खयाल है, राजधानी में ही थीं और जिनकी हालत और जगहों से बेहतर थी। पिछले तूफान के बाद बचे-खुचे लोहे और लकड़ी के टुकड़ों से पानी के ऊपर झोंपड़ियाँ बनी हुई थीं। हम लकड़ियों के तख्तों पर चढ़कर उन घरों तक पहुँचे। हरेक घर के नीचे पानी आ रहा था। कुछ झोंपड़ियाँ पहाड़ी पर एक तरफ ऐसी टिकी हुई थीं कि

जैसे अब गिरी तब गिरी। यहाँ बकरियाँ और दूसरे जानवर घरों के नीचे रहते थे। सफाई का कहीं भी कोई खयाल न था और मियादी बुखार एक आम चीज़ थी। अगर वहाँ की आबहवा ऐसी न होती और अगर संयुक्त राष्ट्र अमरीका से खरीदा हुआ चावल आदि वहाँ न मिलता होता तो शायद सूखा रोग बहुत अधिक प्रचलित होता। तपेदिक के कारण मौतें बहुत होती थीं। प्रतिवर्ष बालकों के जन्म की संख्या बढ़ती ही जाती थी अतः इस छोटे द्वीप की जनसंख्या का प्रश्न गम्भीर एवं विचारणीय बन गया था। कैथोलिक चर्च ने लड़कियों को कढ़ाई का सुन्दर काम सिखाया था और स्त्री-पादरियों ने बच्चों का जीवन थोड़ा सुधारने के लिए भरसक प्रयत्न कर रखा था।

प्यूरटो रीको से हम वर्जिन द्वीप-समूह गये। वहाँ की हालत अच्छी तो न थी लेकिन फिर भी प्यूरटो रीको से कुछ बेहतर जरूर थी। वहाँ और प्यूरटो रीको में भी नये मकान बनाने की कोशिश हो रही थी लेकिन लोगों को मकानों का इस्तैमाल करना सिखाना जरूरी था। उच्चतर अवस्था में भी उन लोगों के सुचारु रूप से रहना नहीं आता था, क्योंकि जिन परिस्थितियों मे वे लोग रहने के लिए बाध्य हो चुके थे उनमें सफाई-सुथराई प्रायः असम्भव थी।

वापस आने पर मैंने अपने पति से प्रार्थना की कि वह कुछ श्रम-विशेषज्ञों और उद्योगपतियो को वहाँ की स्थिति देखने के लिए भेजें। तब से मेरे कुछ मित्र वहाँ नये उद्योगों का विकास करने के लिए जा चुके हैं, जिनमें एड्रियन डार्नबुश भी हैं जो कि वाशिंगटन में डब्ल्यू० एफ० ए० के कला और दस्तकारी-प्रोग्रामों में काम कर चुका है। उसने प्यूरटो रीको के बॉस के कई उपयोग निकाले और मेरा खयाल है कि कई छोटे उद्योग सफलतापूर्वक चल रहे हैं। जब श्री टगवैल प्यूरटो रीको के गवर्नर बने तो उन्होंने अपने पहले दौरे में सोची हुई कई योजनाओं को कार्यान्वित करना चाहा जो कि सफल हो सकती हैं।

१९३४ से १९३६ के दो वर्षों में हमारी जो कुछ भी चिन्ताएं थीं वे निजी चिन्ताएं थीं। १९३६ का चुनाव-कार्य हमने इस भावना के आधार

पर किया कि देश एक बार फिर अपने पैरों पर खड़ा हो रहा है। मैंने उस चुनाव में नियमित रूप से कोई कार्य नहीं किया हालाँकि मै चुनाव के प्रधान कार्यालय मे जाती थी और फ्रैंकलिन के साथ मैंने कुछ दौरे भी किये। सच तो यह है कि विशेषतः अपने पति के चुनाव के लिए कार्य करना मुझे कभी रुचिपूर्ण प्रतीत नही होता था। अतः किसी भी चुनाव की राजनीतिक कार्रवाइयों में मैने विशेष लाभ नही लिया जब तक कि किसी विशेष कारण-वश मुझसे ऐसा करने के लिए न कहा गया हो।

इस चुनाव में अनिश्चितता अथवा नतीजा जानने की प्रतीक्षा-जैसी कोई बात न थी। हमेशा की तरह हम लोग हाइड-पार्क में थे और चुनाव की रात को खाने के कमरे का रूप बहुत-कुछ एक समाचार-पत्र के कार्यालय-जैसा हो जाता था। वे मशीनें, जिन पर समाचार आते थे, पास के एक छोटे कमरे मे रखी हुई थीं, फ्रैंकलिन के पास टेलीफोन रखे रहते थे। पत्रकार आते और खाना-पीना दिया जाता और जब अन्त में नतीजा आता तो हाइड-पार्क ग्राम के लोग मशालो का एक जलूस निकालकर मेरे पति का अभिवादन करने आते। हम बाहर बरामदे में जाकर फ्रैंकलिन के कहे हुए कुछ शब्द सुनते जो कि अक्सर सर्दी में काँपते रहते थे।

जब हम १६३६ में वाशिंगटन वापस गये तो बड़ी धूम-धाम से फ्रैंकलिन का स्वागत हुआ और इस प्रकार प्रेसीडेण्ट के पद की उनकी द्वितीय अवधि शुभ लक्षणों से आरम्भ हुई। कांग्रेस में उनकी पार्टी का बहुत अधिक बहुमत था और पार्टी-सदस्य अपने-आपको इतना सुरक्षित महसूस करने लगे कि उनका विश्वास हो गया कि जो कुछ वे चाहें कर सकते है। ऐसी धारणा रखना किसी भी समूह के व्यक्तियों के लिए गलत है जब कि विशेषतः उन पर देश के सुघट शासन का उत्तरदायित्व है जो कि हाल ही मे एक महान् आर्थिक संकट से निकलकर खड़ा हो गया है।

वाशिंगटन के हमारे उन प्रारम्भिक वर्षों में फ्रैंकलिन का एक प्रमुख कार्य हमारे और हमारे दक्षिण अमरीकन पड़ोसियो के बीच की बुरी भावना को बदलना था। जैसा कि मैं कह चुकी हूँ उनका हमेशा से यह खयाल था

कि हमारा बड़े भाई वाला आपत्तिजनक रूख रहा है और हम एक अच्छे पड़ोसी की नीति बरतने की बुद्धिमानी करके आपस मे अच्छी भावना जाग्रत कर सकते है। नवम्बर के चुनावो के बाद इस नीति को कार्य रूप में परिणत करने के लिए १६३६ मे ब्यूनॉस आयर्स में होने वाले अन्तर-अमरीकन शान्ति-सम्मेलन में भाग लेकर उन्होने एक व्यक्तिगत प्रयत्न किया।

उनके इस सम्मेलन में भाग लेने से जो सर्वत्र उत्साह दिखाई देता था उससे वह बहुत प्रभावित हुए और विशेषतः उन्हें इस बात से बहुत प्रसन्नता हुई कि वह उस सद्‌भावना का बीज बो रहे हैं जिसका विकसित होना वह बहुत चाहते थे।

घर लौटते वक्त फ्रेंकलिन यूरुग्वे में रुके। यूरुग्वे से वह ब्राजील गये और एक बार फिर अपने इस दौरे से लोगों को उत्साहित पाकर उन्हे बहुत खुशी हुई।

प्रेसीडेण्ट वर्गास और उनकी पत्नी ने अंडर सेक्रेटरी ऑफ स्टेट वेल्स से पूछा कि क्या वह मेरे लिए कुछ उपहार भेज सकते हैं, क्योंकि वे इस नियम को जानते थे कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका का प्रेसीडेण्ट या अन्य कोई सरकारी अधिकारी जब तक अपने पद पर है वह किसी भी वैदेशिक सरकार से कोई व्यक्तिगत उपहार स्वीकार नही कर सकता। श्रीमती वर्गास ने मुझे चाँदी का एक सुन्दर टी-सेट और उनके पति और उन्होने मिलकर एक बहुत बड़ा नीला-हरा, समुद्र के रंग का रत्न भेजा, जो कि संसार के सबसे बड़े और सबसे सुन्दर रत्नों मे से एक था। मेरे पति ने घर लौटकर इन उपहारों को मुझे भेंट किया और उन्हे पाकर मै बहुत प्रभावित हुई, लेकिन मैंने सोचा कि सिर्फ ह्वाइट-हाउस में या किसी सरकारी समारोह में ही इतने बड़े टी-सेट को काम में लाया जा सकता है। वह रत्न ह्वाइट-हाउस की मेरी तिजौरी में रख दिया गया।

फ्रेंकलिन की मृत्यु के बाद वह टी-सेट मैंने 'फ्रेंकलिन डी० रूजवेल्ट' नामक वायुयानो को ले जाने वाले जलयान को दे दिया और मुझे आशा है

कि ब्राज़ीलियनों को उसे देखकर खुशी हुई होगी जब कि वह जलयान-सद्-भावनार्थ ब्राज़ील गया था।

श्री वेल्स ने मुझसे कहा कि यदि मैं उस रत्न को भी फ्रेंकलिन की हाइड-पार्क के पुस्तकालय में संग्रहीत अन्य वस्तुओं के साथ रहने दूँ तो इससे ब्राज़ीलियन जनता को बहुत प्रसन्नता होगी। आज वह रत्न वहीं है। मेरा खयाल है कि लोग इसे देखना पसन्द करते हैं और सम्भवतः यह हमारे देश के प्रति ब्राज़ीलियन सद्भावना एवं सहृदयता का प्रतीक बनकर एका अच्छा उद्देश्य पूरा कर रहा है।

मेरे पति मुझे इतनी अच्छी तरह जानते थे कि इस दौरे से लौटकर वह मेरे लिए एक बहुत ही छोटे रत्न का लोलक लाये जो कि मैं अब भी कभी-कभी पहनती हूँ। मुझे इस उपहार को देते हुए उन्होंने कहा था: "मैं तुम्हारे लिए यह एक ऐसा उपहार लाया हूँ जो लोगों का ध्यान आकृष्ट न करेगा, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम उस बड़े रत्न को कभी न पहनोगी।"

मेरे जन्म-दिवस के भोज हमेशा मेरे पति ही आयोजित किया करते थे। चूँकि वह जानते थे कि मुझे अधिक आडम्बर पसन्द नहीं है, इसलिए वह बहुधा केवल उन मित्रों को एकत्रित करते थे जिन्हें कि मैं चाहती थी और मुझे आकर्षण का केन्द्र न बनकर ही खुशी होती थी।

व्हाइट-हाउस के अपने शुरू के वर्षों मे हम अधिक-से-अधिक छुट्टियाँ, खास तौर पर क्रिसमस की छुट्टियाँ, वाशिंगटन में बिताना जरूरी समझते थे। हमारे लड़कों के शादी होकर अलग हो जाने से पहले हमारी हमेशा यही कोशिश रहा करती थी कि क्रिसमस के त्योहार पर सारा परिवार एक-साथ रहे। यह हमारी परम्परा चली आई थी कि हम हरेक के लिए सौगातों से भरे मोजे क्रिसमस की सुबह अपने सोने के कमरे में रखते थे और जैसे ही बच्चे सोकर उठते वे हमें और सबको जगा देते थे। हमारा क्रिसमस-वृक्ष बहुधा क्रिसमस से एक दिन पूर्व ही तैयार हो जाता था और जिसे तैयार करने में बड़े लड़के मदद देते थे। फ्रेंकलिन हमेशा अपनी बीमारी के बाद भी, हरेक आभूषण के सजाने या रस्सी बाँधने आदि का स्वयं निर्देशन करते

थे और जब तक वह जीवित रहे सचमुच की मोमबत्तियों के अलावा और कुछ काम में न लाने देते थे। अपने प्रगतिशील राजनीतिक सिद्धान्तों के होते हुए भी वह कई अजीब तरीकों से पुरानी परम्पराओं का पूरी तरह पालन करते थे।

क्रिसमस से एक दिन पूर्व सुबह के समय मैं और मेरे पति ह्वाइट-हाउस के क्लर्कों और गुप्त विभाग के लोगों को दावत देते थे जिसमें कि हरेक व्यक्ति को यादगार के रूप में वह एक छोटा उपहार देते और उसके लिए सुखपूर्ण क्रिसमस की कामना करते। दोपहर में हम घरेलू कर्मचारियों, मोटर-ड्राइवरों आदि को दावत देते थे। इसमें हम उन कर्मचारियो को अपने परिवार को लाने की अनुमति भी देते थे। बारह वर्ष से कम उम्र के बच्चों को अलग-अलग एक उपहार मिलता और हरेक कर्मचारी को उपहारस्वरूप कुछ रुपयों की एक थैली और मिठाई मिलती। पुलिस के पहरेदारों को हम अक्सर एक नेकटाई या रूमाल, फलों की एक केक और मिठाई देते थे।

क्रिसमस से एक हफ्ते पहले मैं अक्सर हाइड-पार्क में जाकर वहाँ रहने वालों या उन लोगों को, जो हमारा काम करते थे, सौगात बाँटा करती थी। अगर हमें क्रिसमस के बाद ही फौरन ऊपर चला जाना होता तो हम उस बड़ी इमारत में मौजूद लोगों को दावत देते थे। बाद में जब हाइड-पार्क में मिलिटरी-पुलिस-स्कूल स्थापित हो चुका था हम पुस्तकालय में शाम को उस जगह रहने वाले सैनिकों को टी पार्टी देते थे। कुछ नये रंगरूटों को देखकर फ्रैंकलिन का बड़ा मनोरंजन होता था। जब वे रंगरूट फ्रैंकलिन को पहली बार देखते तो अक्सर हड़बड़ाकर भूल जाते थे कि उन्हें सलाम करना किस प्रकार सिखाया गया है और नये मौलिक तरीके से वे अपनी बन्दूकें पकड़ते।

क्रिसमस-पूर्व दिवस वाशिंगटन में मेरे लिए बहुधा व्यस्त दिन होता था। नेशनल थियेटर की सर्वहित-समिति की ओर से असहाय बच्चों के लिए आयोजित उत्सव में जाने से मैं दिन शुरू करती थी। इसके बाद मैं अपने पति के साथ सब कर्मचारियो को क्रिसमस की शुभकामनाएं देने में लग जाती थी।

अक्सर मैं दिन के खाने के वक्त सालवेशन सेना के प्रधान कार्यालय में होती थी, जहाँ कि पूजा करने के बाद खाने की टोकरियाँ बाँटी जाती थीं।

यहाँ से मैं अमरीका के स्वयंसेवकों के यहाँ जाती, जहाँ भी ऐसी ही पूजा के बाद खाने की टोकरियाँ बाँटी जाती थी। और इसके बाद मैं घर लौटती थी ताकि पूर्वी कमरे में दोपहर मे होने वाली दावत मे मै शरीक हो सकूँ।

इस दावत के बाद मैं अपने पति और अपने परिवार के अन्य किसी व्यक्ति के साथ, जो कि यदि उस समय हमारे साथ होता, सामूहिक क्रिसमस-वृक्ष पर रोशनियाँ जलाने जाती थी और जहाँ कि मेरे पति क्रिसमस का सन्देश ब्राडकास्ट करते थे। इसके बाद वह ह्वाइट-हाउस लौट आते और मैं वाशिगटन की गरीबों की एक बस्ती मे जाकर क्रिसमस-समारोह मे भाग लेती थी।

घर लौटकर मैं फ्रेंकलिन को परिवार के उपस्थित व्यक्तियों के बीच बैठे हुए डिकिन्स का प्रसिद्ध क्रिसमस-गीत गाते पाती थी। हर साल वह उस गीत के पद्यांशों को बदलकर पढ़ते थे—कुछ पूरे पढ़ते और छोड़ जाते थे। उस गीत के भूत-प्रेत-सम्बन्धी भाग को वह नाटकीय तरीके से पढ़ते थे। सच तो यह है कि वह जब कभी भी किसी चीज को बोलकर पढ़ते थे तो उनके स्वर मे नाटकीय पुट आ जाता था और इसीलिए छोटे बच्चे उनके बोले हुए शब्दो के अर्थ को न समझते हुए भी एकाग्र चित्त होकर सुनते थे। रात के भोजन के बाद वह अक्सर क्रिसमस का गीत पूरा करते थे। इसके बाद मौजों को सौगातों से भरा जाता और अन्त में मैं और कुमारी थॉमसन सेण्ट थॉमस चर्च की अर्धरात्रि-पूजा में भाग लेने जाते थे।

नूतन वर्ष से एक दिन पूर्व मेरे पति ह्वाइट-हाउस मे रहना पसन्द करते थे। हम लोग हमेशा कुछ मित्रो के साथ फ्रेंकलिन के अण्डाकार कमरे में अर्धरात्रि को हाथो में परम्परागत पेय लिये हुए नूतन वर्ष घोषित किये जाने की प्रतीक्षा में रेडियो के सामने बैठे रहते थे। फ्रेंकलिन हमेशा अपनी बड़ी कुरसी पर बैठते और क्योंकि वह प्रेसीडेण्ट थे, अपना गिलास ऊँचा करके कहते: "संयुक्त राष्ट्र अमरीका के लिए।" हम सब खड़े होकर उनके कहे हुए शब्द दोहराते। न जाने क्यों उन शब्दों में एक ऐसा विशेष अर्थ होता था कि सब प्रभावित हो जाते और व्यक्तिगत अभिवादनो मे गाम्भीर्य का एक पुट आ जाता।

पाँच

फ्रेंकलिन जिस काम में लगे होते उसके बारे में वे खाना खाते वक्त या परिवार के बीच में बैठकर कभी ज्यादा नहीं बोलते थे। हम लोगों में अधिकांश यह चाहते भी थे कि जब वह परिवार के बीच हों उन्हें अपने कार्य की चिन्ताओं से छुट्टी मिलनी चाहिए। लेकिन अगर कभी ऐसा विषय उठ खड़ा होता जिस पर वह उपस्थित व्यक्तियों की राय जानना चाहते तो हमें उनके अपने दृष्टिकोण, और जिन लोगों के बीच वह काम करते थे उनकी दलीलों के बारे में मालूम होता था।

जब कई बातों पर मेरे विचार दृढ़ होते तो मैं देखती कि फ्रेंकलिन कई बातों पर स्वयं विश्वास करते हुए भी राजनीतिक यथार्थता के कारण उनका समर्थन करने से अपने को रोकते थे। कभी-कभी इस कारण मुझे बहुत बुरा लगता था।

मुझे याद है कि मैं हब्शियों को मारे जाने और प्रत्येक मनुष्य पर लगे हुए कर का विरोध करके उनका पूरा-पूरा समर्थन चाहती थी, लेकिन हालाँकि फ्रेंकलिन इन दोनों बातों के पक्ष में थे, फिर भी वे इनको एक 'अनिवार्य' विधान का रूप न दे सके। जब मैं इसका विरोध करती तो वह कहते : "पहले वे काम होने चाहिएं जिनका पहले किया जाना जरूरी है, और मैं उन कामों को छोड़कर, जो कि इस वक्त ज्यादा जरूरी है, उन कामों को नही लेना

चाहता कि जिनमें झगड़े की सम्भावना है और इस तरह मैं उन वोटों को नहीं खोना चाहता जो कि ज्यादा जरूरी कामों के लिए इस वक्त मुझे चाहिएं।" और क्योंकि जैसे-जैसे यूरोप की स्थिति बिगड़ती गई हर काम से ज्यादा जरूरी युद्ध की तैयारी हो गई। यह एक 'अनिवार्य' विधान बन गया जो कि फ्रेंकलिन जानते थे, कि अगर पार्टी में मतभेद हो गया तो पास नही हो सकता।

लोग यह नही जानते कि प्रेसीडेण्ट पर कितना दबाव डाला जाता है और कई बार इन दबावों का भार इतना ज्यादा हो जाता है कि प्रेसीडेण्ट को खुद अपनी इच्छाओं का दमन करना पड़ता है। उदाहरण के लिए युद्ध के उन्माद ने न केवल चुनाव से सम्बन्धित भाषणों पर ही असर डाला बल्कि शासन की नीतियो को भी प्रभावित किया।

अक्सर लोग किसी मत पर फ्रेंकलिन का समर्थन प्राप्त करने के लिए मेरे पास आते थे। यद्यपि मैं फ्रेंकलिन के सम्मुख सारी बातें पेश कर देती थी लेकिन फिर भी चाहे उस विषय पर मेरे अपने कितने हो दृढ़ विचार क्यों न हों, मैं उन्हें किसी खास रास्ते पर चलने के लिए जोर न देती थी क्योंकि मैं जानती थी कि सम्पूर्ण चित्र के कई अंगों को वह जानते है जिनसे मैं अनभिज्ञ हूँ। मेरे पास जो लोग आते थे मैं उनके लिए जो कुछ कर सकती थी, करती थी, सिर्फ यह न कह पाती थी कि इस विषय मे मेरे पति के क्या विचार होंगे हालाँकि मेरे पति ने कभी मुझसे यह न कहा था कि मैं उनके सामने अपने विचारों को प्रकट न करूँ। इसी कारण मेरा खयाल है कि मैं कई बातों पर उनका विरोध करते हुए भी सतर्कता से काम लेती थी।

एक राष्ट्रीय युवक प्रशासन के विचार को मैं अपने पति के सामने पेश करने के लिए राजी हो गई। हैरी हॉपकिन्स जो कि उन दिनों डब्ल्यू० पी० ए० के अध्यक्ष थे और उनके सहकारी शासक ऑबरे विलियम्स जो कि बाद मे राष्ट्रीय-युवक प्रशासन के प्रधान बने, यह जानते थे कि शुरू से ही मैं देश के नवयुवकों के बारे में कितनी चिन्तित रहती थी। एक दिन उन्होंने कहा : "हम इसके बारे में आपसे मिलने आये हैं क्योकि हमारा खयाल है कि

अभी इस बारे में हमें प्रेसीडेण्ट से बात नही करनी चाहिए। एक ऐसी संस्था की स्थापना के विरुद्ध बहुत-से सरकारी लोग हो सकते हैं और इस कारण इसका बुरा राजनीतिक परिणाम हो सकता है। हम यह नहीं कह सकते कि इस विचार को देश स्वीकार करेगा। हम प्रेसीडेण्ट से भी इस बारे में नही पूछना चाहते क्योंकि हम यह नही चाहते कि उन्हें ऐसी स्थिति में इस समय डाला जाय कि जहाँ उन्हें बाध्य होकर सरकारी रूप में 'हाँ' या 'ना' कहना पड़े।

मैं इस विषय में फ्रेंकलिन के विचारों को जानने और उन लोगो की सम्मति और शंकाओं को उनके सामने पेश करने के लिए राजी हो गई। अपने पति से विचार-विनिमय करने के नियत समय तक मैंने प्रतीक्षा की और उनके सोने से कुछ पहले मैं उनके कमरे में पहुँची। मैंने उनको सारी बात बताई जिसके बारे में वह पहले से ही कुछ जानते थे और तब मैंने यह बताया कि ऐसी संस्था की स्थापना में हैरी हॉपकिन्स और ऑवरे विलियम्स को किस बात का भय है। उन्होंने मेरी ओर देखकर पूछा : "क्या वे लोग समझते हैं कि ऐसा करना ठीक है?" मैंने कहा कि उनके विचार में इससे नवयुवकों को तो बहुत लाभ होगा लेकिन वे नही चाहते कि आप इस बात को भूलें कि ऐसा करना शायद राजनीतिक दृष्टि से बुद्धिमानी न हो। उनका खयाल है कि ऐसे लोग, जो इस बात से चिन्तित हैं कि जर्मनी ने अपने युवकों को सैनिक जीवन मे बद्ध कर दिया है, यह सोच सकते है कि हम भी ऐसा ही कर रहे हैं और इसलिए शायद वे हमारी योजना को पसन्द न करें। फ्रेंकलिन ने तब कहा : "अगर ऐसा करना युवको के लिए अच्छा है तो यह किया जाना चाहिए। मेरा खयाल है कि हम टीका-टिप्पणी का सामना कर सकेंगे और मुझे सन्देह है कि अमरीकन युवक को इस प्रकार या और किसी प्रकार सैनिक-जीवन में बद्ध किया जा सकता है।"

कुछ समय बाद ही राष्ट्रीय युवक-प्रशासन (एन० वाई० ए०) की स्थापना हुई और इसमे सन्देह नहीं कि इससे बहुत-से नवयुवकों को लाभ पहुँचा। इसके द्वारा स्कूल और कॉलेज के युवकों को अपनी पढ़ाई पूरी

करने में सहायता प्राप्त हुई और उन्हे घरेलू और बाहरी कार्यों की शिक्षा मिली जिससे कि उन्होने सिविलियन कॉनसरवेशन कोर के कार्यों की इस प्रकार न्यूनता-पूर्ति की कि सब युवको को सहायता पहुँच सकी।

यह उन अवसरों में से एक था जिसके लिए मुझे गर्व था, क्योंकि राजनीतिक दृष्टिकोण का ध्यान किये बिना ही यह अच्छा काम किया गया था। और सत्य तो यह है कि यह कार्य बाद में लोकप्रिय भी सिद्ध हुआ और इसके द्वारा शासन को शक्ति भी प्राप्त हुई।

यद्यपि फ्रैंकलिन ने मुझे निरुत्साहित करने का कभी कोई प्रयत्न नही किया और न उन्हें कभी इस बात की ही चिन्ता थी कि मैं क्या कहना और करना चाहती हूँ, लेकिन अक्सर अन्य व्यक्ति मेरे कार्यो से विशेष प्रसन्न न होते थे। उदाहरण के लिए मुझे मालूम है कि मेरे जातीय सिद्धान्तो और सामाजिक कार्य के क्षेत्र मे मेरी कारवाइयों से कुछ लोगो को चिन्ता रहती थी। मेरे पति के कुछ सलाहकारों को भय था कि मैं अपने कार्यों से अपने पति को राजनीतिक एवं सामाजिक क्षति पहुँचा सकती हूँ और जहाँ तक मेरा खयाल है वे लोग यह सोचते थे कि मैं बहुत-से काम बिना फ्रेंकलिन की रजामन्दी या उन्हे बिना बताये ही करती हूँ।

उनके कई राजनीतिक सलाहकारो और यहाँ तक कि हमारे परिवार के कई व्यक्तियो को एलियोट और अन्ना द्वारा दिये गए तलाकों के कारण बड़ी चिन्ता थी, क्योंकि उनका खयाल था कि इसकी प्रतिक्रिया मेरे पति के राजनीतिक चरित्र के प्रतिकूल होगी। एलियोट और अन्ना दोनों के मामले में फ्रैंकलिन ने तलाक रोकने की पूरी कोशिश की लेकिन जब उन्हें इस बात का विश्वास हो गया कि दोनों बच्चों ने खूब सोच-समझकर यह कदम उठाया है तो फ्रेंकलिन को यह कभी न सूझा कि उन बच्चों के जीवन को अपने हितों के अधीन करे। वह कहते थे कि उनका खयाल है कि राजनीति मैं किसी भी व्यक्ति का उत्थान या पतन उसकी नीतियों के परिणाम पर निर्भर है; और जो-कुछ बच्चों ने किया या न किया इससे उनकी अपनी जिन्दगियो पर असर पड़ा है; वह अपने बच्चो का जीवन अपनी राजनीति

से बाँधना नही चाहते थे। मेरा खयाल है कि देश की अधिकांश जनता को इस बात का दुःख था कि उन्हें इस प्रकार की चिन्ता का शिकार बनना पड़ा, लेकिन जनता यह भी जानती थी कि मेरे पति का परिवार अन्य परिवारों की भाँति ही है। और उस अनिश्चितता के काल में बहुत-से परिवारों को उन व्याधियो का अनुभव करना पड़ा जो कि सम्भवतः उस काल का अंग बन चुकी थीं।

१९३८ के कांग्रेसी चुनाव के समीप आने पर मैंने अपने पति को एक बार फिर चिन्तित पाया। उनका विश्वास था कि यदि उनकी उदार योजनाओं को चलते रहना है तो उदार कांग्रेसजनों का होना अति आवश्यक है। डेमोक्रेटिक पार्टी का बहुमत होते हुए भी पार्टी मे इतनी एकता न थी कि वह संगठित रूप में संघर्ष कर सके; बल्कि यह बहुमत आपसी फूट बढ़ाने का काम कर रहा था; कई दफा ऐसा मालूम होता था कि डेमोक्रेटिक पार्टी में सब प्रयोजनों के लिए कुछ लोगो का एक ऐसा समूह है जो कि अनुदार दली रिपब्लिकन पार्टी मे रहकर ज्यादा अच्छा काम कर सकता था। इस स्थिति के कारण प्रेसीडेण्ट के सलाहकारों और मन्त्रि-मण्डल के अन्दर मतभेद दिखाई देने लगा।

छः

१६३८ के ग्रीष्म-काल मे संयुक्त राष्ट्र अमरीका में स्वीडन के राजकुमार के सपत्नीक आने के बाद से ही यूरोप के अन्य शाही परिवारो के सदस्यो का आना आरम्भ हुआ।

स्वीडन के राजकुमार देश में फैली हुई विभिन्न स्वीडिश बस्तियो का सपत्नीक निरीक्षण करने आए थे और पहली जुलाई को हाइड-पार्क में आकर ठहरे, जहाँ कि हमने उनके सम्मान में एक भोज भी आयोजित किया था। अगले वर्ष के मई मास में निकारगुआ के प्रेसीडेण्ट तथा सिन्योरा द समोज़ा के लिए आयोजित भोज एवं संगीत के दूसरे दिन ही डेनमार्क के युवराज सपत्नीक चाय पर पधारे। जून के महीने में एक अन्य दक्षिण अमरीकन अतिथि, जो कि उन दिनो ब्राजीलियन सेना के प्रधान थे, मेरे पति से मिलने आये और उसी महीने में नार्वे के राजकुमार सपत्नीक चाय पर आये। वे अन्य शाही मेहमानो की तरह अपने देशवासियों की बस्ती का निरीक्षण करके कुछ समय के लिए हमारे हाइड-पार्क में रहे।

हर शाही मेहमान की दावत में उनसे मिलने के लिए कुछ और लोग भी आते थे और पहाड़ी की चोटी पर पत्थर के बने हुए फ्रेंकलिन के नये बंगले में हम उन्हें मनोरंजनार्थ आमन्त्रित करते थे। हाइड-पार्क में हमारे करीब कुछ नार्वे-निवासी रहते हैं, जिन्होने हमसे नार्वे के राजकुमार तथा

उनकी पत्नी के लिए एक तमाशा आयोजित करने की अनुमति माँगी। यह खुशनुमा दावत मुझे हमेशा याद रहेगी। हमें युवराज-पत्नी मार्टा और कुमार ओलेफ तथा उनके बच्चों से ज्यादा सम्पर्क में आना था क्योंकि युद्ध के लम्बे वर्षों में युवराज तो यहाँ कभी-कभी आते ही थे, लेकिन उनकी पत्नी और बच्चे लगातार यहीं रहे।

मुझे डेनमार्क के युवराज के साथ हुई वह मनोरंजक वार्ता अभी तक याद है जो कि इस बारे में थी कि हमारे देश के सरकारी अधिकारी शाही परिवार के लोगों की तरह छुट्टियों में प्रच्छन्न रूप से यूरोप में नही घूम सकते। ऐसा मालूम होता था कि उनके विचार में अगर आप अपने-आपको पोशीदा रखना चाहते हैं और तब भी अगर कोई आपको पहचानने का दुस्साहस करता है तो वह आपका अनादर और आपकी एकान्तता पर सरासर हमला करता है। मैं इस नतीजे पर पहुँची कि युवराज को यह समझाना कतई नामुमकिन है कि हमारे देश में, जहाँ कि सरकारी पद विरासत के तौर पर नही मिलते, लोग यह नही समझते कि अगर आपको सरकारी पद हासिल हो गया है तो आप एक-साथ बदल गए हैं; बल्कि वे आपसे यह उम्मीद रखते हैं कि आप वैसे ही बने रहेगे जैसे कि हमेशा से रहते चले आए है।

मेरे पति ऐसे लोगों का स्वागत करते थे और मेरा खयाल है कि ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को यहाँ आने के लिए वह प्रोत्साहित करते थे जिसे कि वह अपने मत का बना सकते थे। क्योंकि उन्हे इस बात का विश्वास था कि यूरोप में बुरी बातें होने वाली हैं, अतः वह उन लोगों से सम्पर्क स्थापित करना चाहते थे जिनसे कि उन्हें आशा थी कि वे युद्ध छिड़ने पर प्रजातन्त्र-वाद की हिमायत करके उसकी रक्षा करेंगे और फासिज्म के विरुद्ध संघर्ष में हमारे साथी सिद्ध होंगे।

उसी वसन्त ऋतु में इंगलैंड के सम्राट् और सम्राज्ञी ने केनेडा जाना तय किया। मेरे पति ने उनको विशेषतः इस कारण वाशिंगटन आने का निमन्त्रण दिया क्योंकि उन्हें विश्वास था कि हम सब शीघ्र ही एक जीवन-मरण के युद्ध में लिप्त होने वाले हैं जिसमें कि ग्रेट ब्रिटेन हमारी रक्षा की पहली

चौकी का काम देगा और इसलिए उन्हे आशा थी कि इंगलैड के सम्राट् और सम्राज्ञी के यहाँ आने पर दोनो देशो के बीच मैत्री का एक बन्धन स्थापित हो सकेगा। वह जानते थे कि इस देश में हालाँकि ब्रिटेनवासियो के लिए कुछ ऊपरी बुरी भावना और उनकी आलोचना हमेशा से होती आई है लेकिन खतरे के वक्त गहरी छिपी हुई बाते सतह पर ऊपर आ जाती है और अपनी एक ही उत्पत्ति और समान आदर्शों के कारण हम और ब्रिटेनवासी दृढ़ता के साथ एक होकर खड़े होते रहे हैं। हमें आशा थी कि ब्रिटेन के सम्राट् और सम्राज्ञी के यहाँ आने से हमारी पारस्परिक मैत्री का बन्धन पुनः दृढ़ हो जायगा। उनका यहाँ आना कई तरह से आशा से भी अधिक सफल सिद्ध हुआ।

उनके आने की तैयारी बड़ी सावधानी से की गई थी लेकिन फ्रैंकलिन के तरीके से ऐसा मालूम होता था मानो हमारे यहाँ सिर्फ दो भले आदमी ठहरने आ रहे हैं। मेरा खयाल है कि उनके इस रुख के कारण हमारे राजकीय विभाग तथा सम्राट्-सम्राज्ञी के साथ आये हुए लोगों मे कूटनीतिक शिष्टाचार का ध्यान रखने वालों को काफी परेशानी हुई।

मैंने फ्रैंकलिन को बताया कि ब्रिटिश कूटनीतिक शिष्टाचार के अनुसार भोज के समय बड़े खानसामा फील्ड्स को हाथ मे घड़ी लिये खड़े रहना होगा और उन्हे और सम्राट् को खाना परोसने के ठीक तीस सैकण्ड बाद वह एक दूसरे खानसामा को मुझे और सम्राज्ञी को भोजन परोसने के लिए भेजेगा—और इसलिए मैने यह जानना चाहा कि ह्वाइट-हाउस के उस नियम का क्या होगा जिसके अनुसार प्रेसीडेण्ट को सबसे पहले भोजन परोसा जाता है। उन्होने दृढ़ता से मेरी ओर देखकर कहा : 'हमें फील्ड्स के घड़ी देखने की जरूरत न होगी। राजा को और मुझे एक-साथ खाना परोसा जायगा और उसके बाद तुम्हें और रानी को।"

इसके बाद दूसरा गम्भीर प्रश्न सामने आया : क्या प्रेसीडेण्ट को अपने दाहिने हाथ पर राजा को और बायें पर रानी को और मुझे राजा के दाहिने हाथ पर बैठाना चाहिए? और या हमे अपनी प्रचलित प्रथा के अनुसार

बैठना चाहिए ? यह कुछ ज्यादा मुश्किल सवाल था लेकिन फ्रैंकलिन ने आखिर तय किया कि हम अपनी प्रचलित प्रथानुसार ही बैठेंगे—राजा मेरी दाहिनी ओर और रानी फ्रैंकलिन की दाहिनी ओर। इस फैसले का यह कारण था कि क्योकि हमे तो राजा-रानी से मिलने का काफी मौका मिलने ही वाला था। अतः हमने यह ठीक नही समझा कि राजा को अपने बीच मे बैठाकर, जब कि उनके पास इतना कम वक्त है, उन्हे अन्य व्यक्तियो से न बात करने दे। फ्रैंकलिन ने यह बात बाद मे राजा को समझाई और उन्होने बड़ी खुशी के साथ प्रत्येक प्रबन्ध को स्वीकार किया।

बड़े भोज और सम्राट् के स्वागत की तैयारी में मनोरंजन की काफी सामग्री थी क्योंकि अधिकांश लोगों का यह खयाल था कि हम इस अवसर पर कम-से-कम मेट्रोपोलिटन ऑपेरा के गायको को तो अवश्य ही बुलायंगे। पर मैंने और मेरे पति ने सोचा कि हमे राजा-रानी के सामने कुछ ऐसी चीज पेश करनी चाहिए जो कि उन्हें अपने यहाँ सुनने का अवसर प्राप्त नही हो सकता। ऑपेरा का संगीत उनके लिए कोई नई चीज न होगी, और इसलिए हमने सोचा कि उन लोगों का अमरीकन लोक-गीतो से मनोरंजन करना अधिक ठीक होगा। अतः इसी कारण जब तक वे हमारे यहाँ रहे हमने उन्हें अमरीकन भोजन ही खिलाया। हमने एक प्रकार के लोक-उत्सव का आयोजन किया। इसका अर्थ यह न था कि हमने प्रसिद्ध कलाकारो को न बुलाया हो। लॉरेन्स टिवेट को कई गीत गाने थे; केट स्मिथ को 'पर्वत पर आया चाँद' गीत गाना था जिसे सुनने के लिए सम्राट् विशेषतः इच्छुक थे, और मेरियन एण्डरसन अन्य गीतो के साथ-साथ कुछ आध्यात्मिक नीग्रो संगीत सुनने के लिए राजी हो चुकी थी। लेकिन साथ ही हमने दक्षिण के कथा-प्रधान गीतों और नृत्यो का आयोजन भी किया था।

सम्राट्-सम्राज्ञी को लिए हुए जब गाड़ी वाशिंगटन पहुँची तो लोगों का उत्साह चरम-सीमा पर था।

वाशिंगटन में हमारे साथ पहली बार खाना खाने के बाद एक मोटर में

मेरे पति और सम्राट् तथा दूसरी मोटर में सम्राज्ञी और मै वाशिंगटन में निकले। हमारा रास्ता पहले से ही तय किया जा चुका था ताकि जनता को सम्राट्-सम्राज्ञी के दर्शन करने का अवसर प्राप्त हो सके हालाँकि इसका मतलब था कि हम लोगों को आपस मे बात करने को तभी मौका मिल सकता था जहाँ कि सड़क की पटरियों पर लोग खड़े न हो सकते थे। एक जगह अचानक सम्राज्ञी ने मुझसे कहा : "मैंने अखबार में पढ़ा था कि डब्ल्यू० पी० ए० के मजदूरो की एक सभा मे भाग लेने के कारण आपकी कड़ी आलोचना हुई थी। मुझे इस आलोचना पर आश्चर्य होता है क्योकि लोगो को अपने दु:ख को व्यक्त करने का अवसर देना कही अच्छा है और विशेषतः यदि वे अपना दु:ख उस व्यक्ति के सामने व्यक्त कर सकें जो कि वे समझते हैं कि उनसे सहानुभूति रखता है और जो उनके दु:खों को देश के शासक के पास पहुँचा सकता है तो और भी अच्छा है।"

हम लिंकन-स्मारक, सेण्ट पीटर और सेण्ट पोल के गिरजाघर, रॉक क्रीक पार्क और देखने लायक अन्य स्थानो में गये। जब हम ह्वाइट-हाउस लौटे तो सम्राट्-सम्राज्ञी के पास इतना समय था कि वे कपड़े बदल सकें। पौने पाँच बजे वे बालचरों की पंक्ति में से होते हुए ब्रिटिश दूतावास पहुँचे जहाँ कि उनके लिए एक उद्यान-समारोह आयोजित किया गया था। उनके जाने के बाद मेरे पति आराम करने लगे।

उद्यान-समारोह के पश्चात् न जाने कब उन लोगों को कपड़े बदलने का समय मिला, लेकिन जब वे रात्रि के भोज में उपस्थित हुए तो ऐसा मालूम होता था मानो उन्हे दिन-भर फुर्सत ही रही है। सम्राज्ञी की पोशाक पर न कभी एक भी शिकन नजर आई और न कभी उनका एक भी केश अपनी जगह से हटा हुआ दिखाई दिया और मैं उन्हें देखकर मुग्ध हो गई। मैं यह समझ नहीं पाती थी कि हमेशा हर वक्त इस विशिष्टता को कायम रखना किस प्रकार सम्भव है। उनके साथ बीते हुए प्रत्येक क्षण में उनके लिए प्रशंसा मेरे हृदय में बढ़ती ही गई।

पोटोमेक से घर लौटते समय हम लोग फोर्ट हण्ट में सिविलियन

कॉनसरवेशन कोर के एक कैंप को देखने रुक गए।

कैम्प के कमाण्डेण्ट के साथ सम्राट् उन लड़कों की ओर बढ़े जो कि झुलसती हुई धूप मे दो पंक्ति बनाए खड़े थे। एक बड़े बोर्ड पर देश में जगह-जगह फैले हुए ऐसे कैम्पों के चित्र लगे थे जिनमे युवकों द्वारा किये गए विभिन्न कार्यों को दिखाया गया था लेकिन सम्राट् उनको देखने के लिए नहीं रुके।

लड़कों की लम्बी लाइन से गुज़रते हुए सम्राट् हर दूसरे लड़के से सवाल पूछते जब कि उससे पहले लड़के से सम्राज्ञी बातें करती। मैं सम्राज्ञी के साथ ही थी। पहली पंक्ति के अन्त में कमाण्डेण्ट दूसरी पंक्ति में जाने के लिए तैयार न था लेकिन सम्राट् अपने-आप मुड़कर आगे चलने लगे। उनके पूछे हुए सवाल दरअसल अच्छे थे जैसे कि उन्हें जो खाना मिलता है उससे उन्हें सन्तोष है या नही, वे क्या काम सीख रहे हैं और क्या उन्हें उम्मीद है कि इससे उन्हें काम पाने में मदद मिलेगी, और अन्त में, वे कितना रुपया कमा लेते हैं।

जब हम लड़कों की दूसरी पंक्ति के अन्त में पहुँचे तो कमाण्डेण्ट ने सम्राट् से कहा : "लड़कों ने अपनी बारकें आपके मुआयने के लिए तैयार कर रखी हैं लेकिन चूँकि आज का दिन गरम है इसलिए अगर आप इस धूप में मैदान पार करना ठीक न समझें तो ठीक ही है।" सम्राट् ने उत्तर दिया : "अगर वे चाहते हैं कि मैं जाऊँ तो मैं ज़रूर चलूँगा।" अपने पद द्वारा प्राप्त अनिवार्य कर्तव्यों के प्रति ऐसी जागरूकता मैंने अपने यहाँ के अधिकारियों मे कम ही पाई है जिनके साथ मैंने सी० सी० सी० और एन० वाई० ए० के कैम्पों तथा अन्य कार्यों का निरीक्षण किया है।

तेज़ धूप में सम्राज्ञी के साथ मैं पीछे-पीछे चली और मैंने एक ऐसा सम्पूर्ण निरीक्षण किया जो कि कम ही करने को मिलता है। उन्होंने उन आलमारियो को देखा जिनमें खाने की चीजें रखी थीं और जब उन्हें मालूम हुआ कि अपने काम की सब चीजें लड़के खुद बनाते हैं तो उन्होंने मेज़ों को उलटवाकर देखा कि वे कैसी बनी हुई हैं; चूल्हे पर रखे हुए बर्तनों और

खाने की सूची को उन्होंने देखा; और जब वे वहाँ से निकले तो शायद ही कोई ऐसी चीज बची हो, जो वे न जानते थे। सोने की बारको में सम्राट् ने गद्दो को छूकर देखा और सावधानी के साथ जूतों और कपड़ों का निरीक्षण किया।

दिन के समय मुझे सम्राज्ञी को यह बताने का अवसर मिला कि आठ वर्षीया बालिका डायना हॉपकिन्स, जिसके पिता से वह मिल चुकी थीं, बहुत उद्दीप्त है, क्योंकि जिस रानी के बारे में वह जानती है वह सिर्फ परियों की कहानियों में ही मिलती है इसलिए उसका खयाल है कि यह रानी भी परियों की रानी ही होगी। सम्राज्ञी ने तुरन्त ही कहा कि डायना को बुलाया जाय और वह सम्राट् के साथ भोजन करने चली गईं। डायना की आँखें मानो सम्राज्ञी के लिए ही बनी हों, जो कि श्वेत उज्ज्वल वस्त्रों में रत्न-जटित मुकुट पहने सचमुच परियों की रानी दिखाई देती थीं। डायना ने झुककर सम्राज्ञी का अभिवादन किया और वह उन्हें देखने में इतनी लवलीन हो गई कि सम्राट् का अभिवादन करना भूल गई। कुछ मिनटों के बाद मैंने हैरी हॉपकिन्स को उसकी विस्मित कन्या सुपुर्द कर दी जो कि मैं समझती हूँ कभी यह न भूलेगी कि परियों की रानी सचमुच कैसी होती है।

सम्राट्-सम्राज्ञी के चले जाने के बाद हम लोग रेल से हाइडपार्क पहुँचे ताकि सम्राट्-सम्राज्ञी के वहाँ पहुँचकर चौबीस घंटे बिताने से पूर्व हमें एक दिन तैयारी के लिए मिल जाय। मेरे पति को हमेशा से उन लोगों को अपने घर ले जाना अच्छा लगता था जिन्हें कि वह चाहते थे। मेरा खयाल है कि वह यह महसूस करते थे कि ऐसे लोगों को हाइड-पार्क में ले जाकर वह उन्हें ज्यादा अच्छी तरह समझ सकेंगे। जब सम्राट्-सम्राज्ञी वहाँ पहुँचे तो मैंने उनका दरवाजे पर स्वागत किया और उन्हें उनके कमरों तक पहुँचाया। शीघ्र ही वे वस्त्र बदलकर लाइब्रेरी में आ पहुँचे। जैसे ही सम्राट् उस मेज की ओर बढ़े, जिस पर तरह-तरह की शराबें रखी हुई थीं, तो मेरे पति ने उनकी ओर देखते हुए कहा : "मेरी माँ को यह मिली हुई शराबें पसन्द नहीं हैं और उनका खयाल है कि आपको चाय का एक प्याला

पीना चाहिए।" सम्राट् ने उत्तर दिया : "मेरी माँ को भी पसन्द नहीं हैं," और उन्होंने यह कहकर शराब पी ली।

संध्या का कार्यक्रम शीघ्र ही समाप्त हो गया और चूँकि हम लोग थके हुए थे इसलिए प्रधान मन्त्री मेकनजी किंग और सम्राट् को फ्रैंकलिन से बातें करने के लिए छोड़कर हम लोग चले आए। इतनी देर के बाद वे लोग रात को ऊपर अपने कमरो मे आये कि मुझे उनके लिए दुःख हुआ, लेकिन दूसरे दिन मैकेनजी किंग ने मेरे पति को बताया कि रात को सम्राट् ने उनके कमरे के दरवाजे को खटखटाकर उन्हें बातें करने के लिए बुलाया; सम्राट् ने उनसे यह पूछा कि : "मेरे मन्त्री मुझसे उस प्रकार क्यो नही बातें करते जिस प्रकार कि आज रात को प्रेसीडेण्ट ने की थी? मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मानो मेरे पिता ही मुझे बहुत सोच-समझकर सलाह दे रहे हैं।"

जाते वक्त सम्राट्-सम्राज्ञी ने सबसे विदा ली और जब कि वे रेल में बैठने ही वाले थे कि सम्राज्ञी ने मेरे पास लौटकर कहा : "वह आदमी कहाँ है जिसने सम्राट् की मोटर चलाई थी? मैं उसे धन्यवाद देना चाहती हूँ।" मैंने अपने पति के मोटर-ड्राइवर मोण्टी स्नाइडर को उनके सामने पेश किया और सम्राज्ञी ने सावधानी से मोटर चलाने के लिए उसे धन्यवाद दिया।

सम्राट्-सम्राज्ञी का जोड़ा चलती गाड़ी मे सामने खड़ा रहा और हडसन नदी के तट और चट्टानों पर एकत्रित लोग अचानक एक स्वर में उनके सम्मान में गीत गाने लगे। यह दृश्य न जाने क्यों बड़ा ही हृदयग्राही बन गया—संध्या के धूमिल प्रकाश में नदी और एक-साथ इतने लोगो का यह गीत गाना और विदाई में हाथ हिलाते हुए उस यौवनपूर्ण पति-पत्नी के जोड़े का उस चलती गाड़ी में खड़ा रहना। विपत्ति के काले बादलों और उनकी भावी चिन्ताओं का विचार करके लोग भारी दिल के साथ उस स्थान से लौटे।

सात

अमरीकन यूथ कांग्रेस इस अस्थिर काल की युवकों की एक प्रमुख संस्था थी। इसकी शाखाएं देश में सब जगह फैल गईं और यह अन्य युवक-संस्थाओं के साथ सहयोग से काम करती थी जैसे कि दक्षिणी युवक-परिषद् और नीग्रो युवक-कांग्रेस।

वाशिंगटन में आयोजित अपनी एक सभा के दौरान मे अमरीकन यूथ कांग्रेस (ए० वाई० एफ०) के नेता मुझसे मिलने आए और उन लोगों ने मुझे बताया कि वे लोग किन कामों को करने की कोशिश कर रहे हैं। क्रमशः मैं उन लोगों के साथ काम करने लगी, क्योंकि युवक क्या करते है और वे क्या सोचते हैं इस बारे मे जानने का यह मैंने अच्छा तरीका समझा। उन्होंने अपने लिए मुझसे बहुत-से काम करने के लिए कहे और बहुत-से प्रश्नों पर मेरी राय जाननी चाही। मैं उनकी सभाओं के लिए वक्ताओं का प्रबन्ध करती और खुद उन सभाओं मे भाग लेती तथा मैंने रुपये से भी उन लोगों की मदद की।

समय के साथ उनमें से कई लोगों को मैं बहुत अच्छी तरह जानने लगी। मुझे सब युवक अच्छे लगते हैं और अमरीकन यूथ कांग्रेस में काम करने वाले युवक आदर्शवादी और उद्यमी थे। मुझे यह कभी नहीं मालूम हुआ कि वे युवक आरम्भ से ही कम्युनिस्टों से प्रेरणा पाते थे या नहीं।

कुछ समय तक इन लोगों के साथ मेरे काम करने के बाद जब इन पर अभियोग लगाये जाने लगे तो मैंने इनके कुछ नेताओं को ह्वाइट-हाउस के अपने उठने-बैठने के कमरे में इकट्ठा किया। मैंने उनसे कहा कि क्योंकि मैं उनकी संस्था मे सक्रिय भाग ले रही हूँ इसलिए उनके राजनीतिक विचारों का मेरे लिए जानना जरूरी है।

मैंने उन एकत्रित युवकों से कहा कि यदि उनमें से कोई कम्युनिस्ट है तो मै इस बात को समझ सकती हूँ। क्योंकि मैं जानती हूँ कि वे ऐसे मुश्किल जमाने में बड़े हुए हैं कि उनके द्वारा ऐसी किसी भी विचार-धारा को अंगीकार करना सम्भव था जो कि स्थिति सुधारने की आशा प्रदान करती थी। लेकिन मैं यह जरूरी समझती हूँ कि मुझे सच्ची बात बताई जाय। अगर हम लोगों को साथ-साथ काम करना है तो मेरे लिए यह जानना जरूरी है कि किन बातों पर हमारा एकमत और किन पर मतभेद है। मैंने उनमें से हरेक युवक से बारी-बारी से कहा कि वह अपने विचारों को ईमानदारी के साथ व्यक्त करे। उनमे से हरेक ने यही कहा कि कम्युनिस्टों से उसका कोई सम्बन्ध नहीं कि उसने कभी किसी कम्युनिस्ट-संस्था मे भाग नहीं लिया और और कम्युनिस्ट-विचार-धारा में उसे कोई दिलचस्पी नही। मैंने उनकी कही हुई बात स्वीकार करना तय किया क्योंकि मैं जानती थी कि कभी-न-कभी सचाई जाहिर हो ही जायगी।

जब फ्रैंकलिन का प्रथम सम्पर्क अमरीकन यूथ कांग्रेस से हुआ उससे पूर्व ही मेरा यह विश्वास होता जा रहा था कि इस संस्था में कम्युनिस्टों का प्राधान्य बढ़ता जा रहा है। उनके भाषणों और कार्यों में कम्युनिस्टों की पार्टी-नीति झलकती थी और कई एक बातों से मेरा सन्देह बढ़ गया था। साधारणतया फ्रैंकलिन के पास व्यक्तियों तथा विशेष समूहों के लिए समय देने का अवकाश न था। लेकिन कभी-कभी मेरे कहने से वह किसी खास विषय पर उनमें से कुछ लोगों से बातचीत करने के लिए तैयार हो जाते थे। १० फरवरी १९४० को वाशिंगटन में अमरीकन यूथ कांग्रेस ने एक सभा तथा एक परेड का आयोजन किया और मैंने इस सभा में फ्रैंकलिन को

भाषण देने की राय देना ठीक समझा। यह तय हुआ कि ह्वाइट-हाउस के दक्षिणी बरामदे में खड़े होकर वह बोलेंगे। उस रोज़ सारे दिन पानी बरसता रहा था और दक्षिणी मैदान मे पानी से भीगे हुए युवक शायद इस उम्मीद को लिये हुए तकलीफ मे खड़े थे कि प्रेसीडेण्ट उनके कार्यों की सराहना करेंगे। लेकिन फ्रेंकलिन ने उन्हें कुछ ऐसी तथ्य की बाते बताईं जो कि अप्रिय होते हुए भी उनके विचार में उन लोगों को सुननी चाहिए थी ताकि वे जान सके कि उनसे सहानुभूति रखने वाले व्यक्ति भी उनकी कार्रवाइयों के बारे में क्या सोचते हैं। सहानुभूति और समझदारी से पेश आने की फ्रेंकलिन की कोशिश जाहिर थी, लेकिन उन युवकों के उत्तरदायित्व और जीवन के प्रति उनके विचारों के बारे में वाध्य होकर उन्हें कुछ कड़े शब्द कहने पड़े।

लेकिन वे युवक चेतावनी, चाहे वह कितनी भी सहानुभूति के साथ दी गई क्यों न हो, सुनने के लिए तैयार न थे और शोर मचाकर वे प्रेसीडेण्ट की कही हुई बातों पर असन्तोष प्रगट करने लगे। हालाँकि उस अवसर पर उन युवकों की भावना मैं समझती थी, लेकिन फिर भी उनके बुरे व्यवहार और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रेसीडेण्ट के प्रति असम्मान ने मुझे उद्विग्न बना दिया। इस सबका सामना मेरे पति ने शान्ति के साथ किया। एक मृदु मुस्कान के साथ उन्होंने मुझसे कहा : "हमारे युवक कब क्या कर बैठें, कुछ कहा नहीं जा सकता। क्यों ठीक है न ?"

अमरीकन यूथ कांग्रेस ने "साम्राज्यवादी युद्ध" और युद्ध की सब तैयारियों का बड़ी प्रबलता से विरोध किया और जब रूस की जर्मनी से संधि हो गई तो शान्ति के लिए उनका प्रचार अति प्रचण्ड हो गया। फलतः उनकी एक सभा के बाद मैंने उनके नेताओं को बुलाकर कहा कि परराष्ट्र-नीति पर प्रत्यक्षतः हमारे रास्ते भिन्न हैं। जर्मनी के विरुद्ध युद्ध करने वाले देशों की सहायता का उन्होंने विरोध किया था।

कुछ दिनों के बाद एक रात को हाइड-पार्क में उनके कुछ नेताओं को बुलाकर मैंने उनसे साफ-साफ कहा कि अब मैं उनकी संस्था में काम करने से असमर्थ हूँ। लेकिन खेती के काम से बेकार हुए लोगों के लिए किये गए

कामों में प्रति मास कुछ आर्थिक सहायता देने को मैंने वादा किया।

उनसे अलग हो जाने के मेरे इस निर्णय के बाद अमरीकन यूथ कांग्रेस के युवकों ने मेरे ऊपर दोषारोपण किया कि मैं पूँजीवादियों द्वारा खरीदी जा चुकी हूँ और युवक-दल के कुछ लोगों ने तो ह्वाइट-हाउस के सामने धरना तक देकर अपने असन्तोष का प्रदर्शन किया।

लेकिन जब यह खबर मिली कि जर्मनी ने रूस पर हमला कर दिया है तो यूथ कांग्रेस ने एक सम्मेलन बुलाकर रूस के साथ सहयोग करने तथा अधिकाधिक युद्ध की माँग की। यहाँ तक कि उन्होंने मुझे एक तार द्वारा सूचित किया : "अब हम लोग एक-साथ फिर काम कर सकते हैं।" अब अचानक युद्ध का रूप बदल गया वह साम्राज्यवादी युद्ध न रहा और ह्वाइट-हाउस के सामने धरना देने वाले युवकों को हटा लिया गया।

लेकिन मैंने यूथ कांग्रेस के साथ फिर कभी काम न किया। मैं अब उन पर यह विश्वास न कर सकती थी कि वे मेरे साथ ईमानदारी से काम कर सकते हैं।

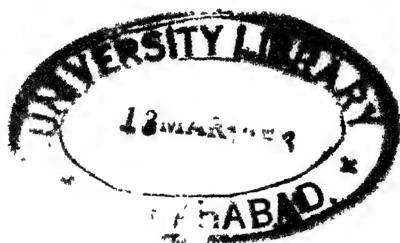
मैं यह स्पष्ट कर देना चाहती हूँ कि इन युवकों से मुझे बहुत सहानुभूति थी, हालाँकि इनकी हरकतों से अक्सर मैं चिढ़ जाती थी। इस बात को भूलना नामुमकिन था कि किन बेहद मुश्किलों मे वे बड़े हो रहे थे। इन युवकों के प्रति मैंने कभी भी लेश-मात्र कटुता अनुभव नहीं की और सच तो यह है कि इनके सम्पर्क से प्राप्त अनुभव के लिए मैं बहुत आभारी हूँ। मुझे कम्युनिस्ट चालों का ज्ञान हुआ। मैंने खुद यह देखा कि कम्युनिस्ट किसी संस्था में किस प्रकार घुसते हैं। मैंने यह जाना कि महत्वपूर्ण स्थानों का कम्युनिस्ट किस तरह खुद हासिल करते हैं। सभाओं में आपति और विलम्ब के उनके तरीके मैंने देखे कि किस प्रकार वे लोगो को थका देते और जब कि उनके विरोधी थककर घर चले जाते वे अपना बहुमत करके अपने हक में फैसले करवा लेते। अब मैं इन चालों से अच्छी तरह परिचित हूँ। मैं जानती हूँ कि हार कभी आखिरी हार नहीं होती। मेरा खयाल है कि अमरीकन यूथ कांग्रेस के साथ मेरे सम्पर्क से उन चालों को समझाने का मुझे बहुमूल्य अनुभव प्राप्त हुआ जिनका कि सामना बाद में मुझे संयुक्त राष्ट्र-संगठन में करना पड़ा।

आठ

जब पोलैण्ड मे हिटलर की फौजो के घुस जाने का समाचार मिला तो फ्रैंकलिन ने मुझे हाइड-पार्क मे बुलाया। सुबह के करीब पाँच बजे थे। उन दिनो मेरी एक पुरानी मित्र श्रीमती जॉर्ज एस० हंटिगन हमारे यहाँ ठहरी हुई थीं। मै, वह और कुमारी थॉमसन अपने ऊपर एक भावी खतरे का अहसास करके फिर सोने न जा सके। हमे जिस बात का खतरा था वह आ ही गया और एक तरह से हम सब जानते थे कि जल्दी ही या देर में हमे भी अन्य यूरोपीय देशों के साथ इस सघर्ष मे भाग लेना होगा।

मैं यह न जानती थी कि इस युद्ध का क्या परिणाम होगा। हमारे सब बेटे युद्ध में सक्रिय भाग लेने की उम्र के थे लेकिन ऐसा प्रतीत होता था कि जब कि यह युद्ध चलता रहेगा मै आराम से वाशिगटन मे बैठी होऊँगी। यह सोचकर मन में एक तरह का विद्रोह होता है कि जब आप के प्रियजन खतरे में हों आप अपने घर में आराम से हाथ पर हाथ धरे बैठे हों। लेकिन बहुत काफी वक्त बाद असली बातें होनी शुरू हुई। हमारे यहाँ अभी एक चुनाव और होना था और हमें शत्रु के कब्जे में किये हुए देशों से आये शरणार्थियों को अपने यहाँ स्थान देना था; हम सबको व्यक्तिगत रूप में अन्य देशों में छिड़े हुए युद्ध की यथार्थताओं का आदी होना था और धीरे-धीरे खुद अपनी दुर्गति के लिए भी तैयार होना था।

ह्वाइट-हाउस में हमारे लिए और ग्रेट ब्रिटेन की जनता के लिए डनकिर्क की दुर्घटना बड़ी दुःखपूर्ण और व्याकुल बनाने वाली सिद्ध हुई। लड़ाई का मैदान बने हुए उस द्वीप की जनता की वीरता तथा ब्रिटिश वायु-सेना ने जिस प्रकार अपने देश की रक्षा की कि जब पूरी कहानी मालूम हुई तो संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रत्येक व्यक्ति का हृदय उनके लिए प्रशंसा से भर गया।



नौ

प्रेसीडेण्ट के पद के लिए फ्रेंकलिन के तीसरे चुनाव के बारे मे इतना अधिक कहा जा चुका है कि मैं इस विषय में सिर्फ अपने विचारो को व्यक्त कर सकती हूँ। मैंने कभी भी फ्रेंकलिन के राजनीतिक ध्येयों के सम्बन्ध मे उनसे पूछ-ताछ नहीं की। चूँकि मैं आरम्भ से ही उनका वाशिंगटन में रहना पसन्द नहीं करती थी अतः इस कारण मैं इतनी सतर्क थी कि इस विषय में उनके निर्णय पर अपनी इच्छा लादने का मैंने लेश-मात्र भी प्रयत्न नही किया।

मुझे पूरा विश्वास है और इस बात के लिए मेरे पास प्रमाण मौजूद हैं कि मेरे पति इस चुनाव में खड़े होना नही चाहते थे। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता जाता अधिकाधिक व्यक्ति मुझसे आकर कहते कि मेरे पति को फिर चुनाव में खड़ा होना चाहिए, कि युद्ध के बादल क्षितिज पर छाये हुए हैं और अन्य किसी व्यक्ति को इस संकट से पार होने का न तो इतना ज्ञान ही है और न उसके प्रति इतनी श्रद्धा ही हो सकती है।

मैं इस बात से बहुत चिन्तित थी कि मुझे कोई भी फ्रेंकलिन की जगह लेने के लिए दरअसल तैयार नजर नही आता था और इसीलिए कई बार मैंने उनसे पूछा कि क्या वह यह नही सोचते कि इस काम के लिए उन्हें किसी व्यक्ति को तैयार करने का प्रयत्न करना चाहिए। फ्रेंकलिन हमेशा

मुस्कराकर कहते कि उनके खयाल में लोगों को खुद अपने-आपको तैयार करना पड़ता है, कि वह लोगों को अधिक-से-अधिक अवसर प्रदान कर सकते हैं और फिर उस अवसर का लाभ उठाना उनका काम है।

मेरे कहने का यह अर्थ नहीं कि फ्रेंकलिन अपने उत्तराधिकारी की बात न सोचते हों क्योंकि प्रेसीडेण्ट का पद प्राप्त करने की आकांक्षा का वह प्रत्येक व्यक्ति को अधिकारी समझते थे।

वस्तुतः कन्वेन्शन के आरम्भ होने से पूर्व ही यह प्रत्यक्ष था कि फ्रैंकलिन को ही प्रेसीडेण्ट के पद के लिए नियुक्त किया जायगा और फिर उन्हीं को चुनाव में खड़ा होना होगा और मेरा खयाल है कि उनको इस बात के लिए तैयार कर लिया गया कि अगर उन्हें चुनाव मे खड़े होने के लिए नियुक्त किया गया तो फिर वह इन्कार नही कर सकते। मेरा विश्वास है कि वह वास्तव में नियुक्त होना नही चाहते थे। अगर उनकी नियुक्ति न होती तो उन्हे पूरी तरह सन्तोष होता और वह सुख के साथ अपनी जिन्दगी जी सकते थे; लेकिन फिर भी अगर आप अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के केन्द्र में हों तो इसके प्रति कुछ ऐसा आकर्षण-सा बना रहता है कि आप सोच नहीं सकते कि इसके अतिरिक्त आपके लिए कोई दूसरा जीवन भी हो सकता है। मेरा खयाल है कि उनके मस्तिष्क में एक महान् संघर्ष छिड़ा हुआ था: एक ओर उनकी अपनी थकावट और अपने घर में रहकर निजी जीवन व्यतीत करने की उनकी इच्छा थी; और दूसरी ओर अपने सारे जीवन के कार्यों तथा तैयारियों की पराकाष्ठा के रूप मे प्राप्त सार्वजनिक जीवन के लिए एक अत्यधिक सम्मोहन था और उस संकट-काल में विश्व की समस्याओं में हाथ बटाने की एक इच्छा थी।

फ्रेंकलिन ने ग्रेट ब्रिटेन के साथ इस समझौते की घोषणा की कि न्यूफाउण्ड लैण्ड और वेस्ट इंडीज में जल तथा हवाई अड्डों के लिए स्थान-प्राप्ति की एवज में हम पचास विध्वंसक जलयान ब्रिटेन को देंगे। और दो हफ़्ते बाद ही १६ सितम्बर को फ्रेंकलिन् ने सेलेक्टिव सर्विस एक्ट पर हस्ताक्षर किये। और तब मैं समझने लगी कि युद्ध हमारे बहुत समीप आ

गया है। व्यक्तिगत रूप में यह हमारे पहले ही समीप आ चुका था, क्योंकि एलियोट सेना मे भर्ती हो चुका था। उसे हवाई जहाज चलाने की शिक्षा मिल चुकी थी अतः उसे वायु-सेना में भर्ती होने की आशा थी। उसकी आँखे बहुत खराब थी लेकिन गर्व के साथ उसने मुझे बताया कि उसे एक ऐसा चश्मा मिला है कि जिसके कारण वह हवाई जहाज उड़ा सकता और उतार सकता है और नागरिक पायलट का लाइसैन्स तो उसके पास है ही।

कुछ समय बाद उसे कप्तान का पद देकर राइट फील्ड भेज दिया गया। १६४० के चुनाव मे उस पर इसलिए आक्षेप किया गया क्योकि उसे कप्तान बनाया गया था। फ्रैंकलिन को हराने के लिए विरोधी दल ने यह भी एक सवाल खड़ा किया था। मैंने इसे हमेशा सम्पूर्णतया अनुचित समझा है कि एलियोट को अपने पिता के चुनाव मे खड़ा होने के कारण नुकसान उठाने पड़े, लेकिन राजनीतिक चालो में औचित्य का कोई स्थान नही। फ्रैंकलिन और मैं बहुत पहले से ऐसे व्यक्तिगत आक्षेपों को सहन करना सीख चुके थे लेकिन एलियोट के मन मे बहुत कटुता थी, क्योकि उसने अन्य व्यक्तियों को अपने-जैसे पद पर आसानी से नियुक्त होते देखा, जिनमें से अधिकांश की पृष्ठ-भूमि और योग्यता उससे कम थी।

एलियोट और अपने बच्चो के लिए इस प्रकार की आलोचना से मुझे रोष हुआ, किन्तु मैं अपने-आपको यही समझाती रहती थी कि यही चीजें अगर सही तरीके से बर्दाश्त की गईं तो व्यक्ति को शक्ति प्रदान करती हैं। साथ ही मुझे अपने ऊपर किये गए आक्षेपो से मनोरंजन होता था, विशेषतः जब कि स्त्रियाँ चुनाव के दिनों मे वे बड़े-बड़े बटन लगाए निकलतीं जिन पर लिखा रहता था "हमे एलेनर की आवश्यकता भी नहीं है।"

हमेशा की तरह हमने चुनाव का दिन हाइड-पार्क में बिताया। फ्रैंकलिन को हमेशा अपनी सफलता पर काफी विश्वास रहता था हालाँकि वह कहते थे कि जब तक वोट न गिन लिये जायं कोई भी पूरे विश्वास के साथ कुछ नही कह सकता, लेकिन इस चुनाव मे जीतने की उन्हे सबसे कम आशा थी सिर्फ इसलिए नहीं कि मिस्टर विलकी एक ताकतवर उम्मीदवार

थे बल्कि इसलिए भी कि लगातार तीसरी बार प्रेसीडेण्ट बनना उनके लिए बाधास्वरूप सिद्ध होगा। हमेशा की तरह मैं उनकी जीत ही चाहती थी क्योंकि वह भी यही चाहते थे और अगर वह हार गए होते तो मुझे उनके लिए बहुत दुःख होता। लेकिन मैं यह अच्छी तरह जानती थी कि अगर वह हार भी जाते तो भी वह एक सुखी एवं सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करते, क्योंकि जैसा कि मैं कह चुकी हूँ कि उनमें एक ऐसी दार्शनिकता थी कि कु भी क्यों न हो वह उसको खुशी के साथ अंगीकार कर सकते थे।

१९४१ का प्रारम्भिक भाग हमेशा की तरह बीता।

अगस्त के शुरू में कई भेद-भरे सलाह-मशविरों के बाद मेरे पति ने मुझे बताया कि वह कुछ समय के लिए केप कोड नहर में सैर करने जाना चाहते है और वहाँ मछलियों का शिकार करने की उनकी इच्छा है। यह कहकर वह मुस्करा दिए और मैं समझ गई कि जो-कुछ वह करना चाहते है वह मुझे बताना नही चाहते।

जब तक कि वह खुद न बताते मैं उनसे सवाल न पूछती थी—यह आदत मेरी पहले से ही थी और युद्ध-काल मे तो यह निरन्तर चलती रही। मुझे इस बात का मान था, क्योकि मैं बहुत-से लोगो से मिलती रहती थी इसलिए हो सकता था कि शायद मेरे मुँह से वे बातें निकल जायं जो कि मुझे नही कहनी चाहिए, अतः अपने पति से मेरी विनती थी कि वह मुझे गुप्त बाते न बताया करें। कई बार यह न जानना असम्भव हो जाता था कि क्या होने वाला है, लेकिन अगर मैं उस बात को जानने की कोशिश न करती तो उस बारे मे मेरा ज्ञान प्रायः अपूर्ण ही रह जाता था।

केप कोड की इस सैर के शुरू के कुछ दिनो में फ्रैंकलिन अपने साथ कुछ दोस्तों को ले गए अतः समाचार-पत्रों द्वारा शुरू के समाचार मिलते रहते थे। नहर के किनारे इकट्ठी हुई भीड़ ने उनको जाते देखा लेकिन इसके बाद उनके समाचार आने बन्द हो गए। बाद में उन्हें खुद यह बताना अच्छा लगता था कि किस प्रकार प्रेसीडेण्ट के बजट से उन्होने 'ऑगस्टा' नामक जलयान में प्रवेश किया, जो कि अर्जेण्टा नामक बन्दरगाह मे जाकर रुका,

जहाँ कि उनकी प्रधान मन्त्री चर्चिल से मुलाकात हुई ।

इस मुलाकात का वर्णन कई बार किया जा चुका है और फ्रेंकलिन जूनियर और एलियोट, जो कि वहाँ थे, इसका वर्णन मुझसे कहीं अच्छी तरह कर सकते हैं ।

जब कि प्रधान-मन्त्री चर्चिल और फ्रेंकलिन के बीच एटलांटिक-चार्टर पर वार्ता हो रही थी, एलियोट उन दिनो उसी इलाके मे था और इसलिए उसे अगस्त के महीने मे अर्जेण्टिया जाने का हुक्म मिला । एलियोट समझ न पाया था कि क्यो उसे एक काम से हटाकर अर्जेण्टिया भेजा जा रहा है और जब वह वहाँ पहुँचा तो बन्दरगाह में खड़े हुए अनेक जहाजो को देखकर वह बहुत अचम्भित हुआ।

ऐसा ही अचम्भा फ्रेंकलिन जूनियर को भी हुआ । वह जल सेना में युद्ध से पहले ही था और उसका काम इंगलैंड जाने वाले व्यावसायिक जहाजों की रक्षार्थ एक विध्वंसक जलयान पर काम करना था जो कि एक बहुत ही अप्रिय कार्य था । उत्तरी अटलांटिक सागर में बाद की सर्दी और शुरू की बसन्त ऋतु में अक्सर बहुत ज्यादा ठण्ड होती है इसलिए वह परिवार के सब लोगों से गरम कपड़े भेजने की दुआ करता रहता था और बताता रहता था कि किस प्रकार पोर्टलैंड, मेन मे उनका जहाज प्रायः हिमाच्छादित पहुँचता था । अपनी इस ड्यूटी के कारण उसके जहाज को प्रेसीडेण्ट और प्रधान मन्त्री की सुरक्षा का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अर्जेण्टिया मे पहुँचते ही उसे हुक्म मिला कि 'अमुक' जहाज पर उसे कमांडर-इन-चीफ के सामने हाजिर होना है । वह काफी घबराया हुआ था और सोच रहा था कि 'अब मैंने क्या किया है ?' वह यह न जान सका कि कमांडर-इन-चीफ एडमिरल किंग नही हैं और इसलिए जब उसने जहाज पर अपने पिता को पाया तो वह बहुत खुश हुआ और उसे राहत मिली ।

इस वर्ता से लौटने के बाद फ्रेंकलिन खुश नजर आते थे क्योंकि अटलांटिक चार्टर पर समझौता हो चुका था और उसकी घोषणा की जा चुकी थी, और इसके अलावा उन्हें इस बात की खुशी भी थी कि मिस्टर चर्चिल और

उनको आपस में एक-दूसरे को समझने और चाहने का भी अवसर प्राप्त हुआ था। मिस्टर चर्चिल से वह पहले भी मिल चुके थे लेकिन अच्छी तरह चर्चिल को समझ न पाए थे। उन्होंने महसूस किया कि इस मुलाकात के बाद आपस की दीवार टूट चुकी थी और वह चर्चिल को अच्छी तरह जान पाए थे, जो कि उनके विचार में जॉन बुल का सच्चा स्वरूप था, एक ऐसा व्यक्ति जिसके साथ वह सचमुच काम कर सकते थे।

अर्जेण्टिया से लौटने के बाद फ्रैंकलिन अधिकाधिक व्यस्त रहने लगे; लेकिन सौभाग्यवश सितम्बर ४ को अन्त होने वाले सप्ताह में उन्होंने हाइड-पार्क जाना तय किया जहाँ कि उनकी माँ बहुत बीमार पड़ी हुई थी जो कि कैम्पोबेलो से लौटकर बीच में ठीक होने लगी थीं और शुरू में जिन्हें मामूली-सा जुकाम ही था। ७ सितम्बर को उनका देहान्त हो गया। मेरे पति को इससे बहुत दुःख पहुँचा। उनका अपनी मां के साथ बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध था हालाँकि आखिरी वर्षों में सार्वजनिक समस्याओं पर उनका आपसी मत-भेद बढ़ता जाता था।

जिस रात मेरी सास का देहान्त हुआ उसी रोज़ मेरे भाई जी० हॉल रूज़वेल्ट बहुत बीमार पड़ गए, जो कि हाइड-पार्क के हमारे मकान के पास ही एक छोटे मकान मे रहते थे। हम उन्हे पोकीपसी के वेसार नामक अस्पताल में ले गए और अपनी सास के मातम के दिन मैंने अपने भाई को वाशिंगटन के वाल्टर रीड अस्पताल में पहुँचाया।

अपनी सास की अन्त्येष्टि क्रिया करके हम शीघ्रता से ह्वाइट-हाउस लौटे और अगले कुछ हफ़्तों में मैंने अपने भाई का देहान्त होते देखा। वह इतने तन्दुरुस्त थे कि उनके हृदय की गति तब तक चलती रही जब कि अधिकांश व्यक्ति ऐसी दशा में चेतना खो बैठते हैं, और जब मैं उनके कमरे में जाती तो वह कभी-कभी मुझे पहचान लेते थे। २५ सितम्बर को उनका देहान्त हुआ और उनके अन्तिम कर्म इत्यादि ह्वाइट-हाउस में ही किये गए।

दुःख स्वयं ऐसी चीज है जिसे बर्दाश्त करना मुश्किल है और जब किसी प्रियजन की मृत्यु के कारण दुःख होता है तो उसे बर्दाश्त करना और

भी मुश्किल हो जाता है। मेरा खयाल है कि शायद इसी भावना का दमन करने के लिए मैंने उस पतझड़ के मौसम में नागरिक सुरक्षा के कार्यालय मे खूब मेहनत के साथ काम किया।

अपने भाई हॉल की मृत्यु से कुछ दिन पूर्व २२ सितम्बर को मैंने नगर-पिता लागार्डिया की ओर से उन कार्यों का भार अपने ऊपर ले लिया जो कि सम्पूर्णतः सुरक्षा-कार्य तो नही थे लेकिन सुरक्षा-कार्यों से सम्बन्धित थे और जो नागरिक जनता की सुरक्षा के लिए आवश्यक भी थे। शुरू के हफ़्ते में तो मैं अधिक उपयोगी सिद्ध न हो सकी लेकिन अपने भाई की अन्त्येष्टि के बाद मैं दिल लगाकर काम मे लग गई। शीघ्र ही मुझे पता लगा कि नगर-पिता लागार्डिया ने उन सब कामों को मेरे ऊपर लाद दिया था जो कि वह अपने प्रोग्राम मे शामिल करना नही चाहते थे।

मैं नागरिक-सुरक्षा-कार्यालय मे प्रतिदिन कई घण्टों तक काम करती थी और अपना काम घर लाकर रात को देर तक करती रहती थी। ह्वाइट-हाउस में प्रति घण्टे कोई-न-कोई यह देखता रहता है कि सब ठीक-ठाक तो है। एक दिन सुबह मेरे पति ने कहा : "यह मैं क्या सुन रहा हूँ ? कल रात तुम बिलकुल नही सोईं ?" उस रात मैं अपनी डाक देखने में इतनी व्यस्त थी कि मुझे समय का खयाल न रहा और जब अचानक मैंने देखा कि दिन निकल आया है तो फिर मैंने सोना ठीक नही समझा। ह्वाइट-हाउस में रात को रखवाली करने वाले ने मेरे कमरे से रोशनी आती देखी, मेरे चलने-फिरने की आवाज़ सुनी और यह बात मेरे पति तक पहुँची। लेकिन बहुत कम ही ऐसे मौके होते थे कि जब मुझे ऐसा करना पड़ता था।

पर्ल हारबर का दिन शान्तिपूर्वक आरम्भ हुआ। उस दिन हमारे यहाँ बहुत-से लोग दिन के खाने पर आने वाले थे, लेकिन जब खाने से थोड़ी देर पहले फ्रैंकलिन ने कहलवा भेजा कि वह हम लोगों का साथ देने मे असमर्थ हैं तो मुझे आश्चर्य तो नहीं हुआ लेकिन निराशा अवश्य हुई। पिछले कुछ दिनों से वह अधिकाधिक चिन्तित रहते थे और अक्सर ऐन मौके पर मुझसे कहते कि वह उस भोज मे सम्मिलित न हो सकेंगे जो कि

होने वाला होता था। स्वभावतः लोग उनकी बात सुनना चाहते थे लेकिन वह अपने मस्तिष्क में इतनी गुप्त बातें छिपाये रखते थे कि उन्हे हरेक बात बड़ी सतर्कता से कहनी होती थी और यह खुद एक थकावट पैदा करने वाली बात थी। इसके अलावा चिन्ता और नमी के कारण उनकी नाक के ऊपर की नली मे खराबी हो गई थी और हर रोज़ उनकी नाक का इलाज किया जाना जरूरी हो गया था।

खाना खतम होने तक पर्ल हारबर पर आक्रमण का समाचार आ गया था लेकिन हमें यह समाचार ह्वाइट-हाउस के एक कर्मचारी से तब ही मालूम हुआ जब कि हम ऊपर पहुँचे। इस समाचार को सुनकर हम ऐसे हतप्रभ हुए कि सब बोलना-चालना बन्द हो गया और बाद के काम हमने ऐसे किये मानो हमारे अन्दर-बाहर एक रिक्तता समा गई हो। मैंने अपने मेहमानों को विदा किया और यह प्रतीक्षा करने लगी कि कब फ्रेंकलिन अपने कमरे मे अकेले हो ताकि मैं उनसे जाकर सारा हाल जान सकूँ, लेकिन बाद में मैंने सोचा कि इस समय वह अपना सारा ध्यान इस बात पर लगा रहे होंगे कि अब क्या करना है। और जो-कुछ हो चुका है उस पर वह तब तक बात करना पसन्द न करेंगे जब तक कि पहला गुबार खतम न हो जाय। अतः मैं लौटकर अपने काम मे लग गई।

यह एक अद्‌भुत बात है कि ऐसे मौकों पर जब कोई उन सब बातों की बाबत सोचता है, जो कि हो चुकी है या होने वाली हैं, तो उसकी निजी चिन्ता और देश के लिए उसकी चिन्ता मिलकर एक हो जाती हैं। एक स्त्री के लिए चिन्ता का निजी पहलू अधिक उग्र होता है। लेकिन ह्वाइट-हाउस में रहते हुए मैं जानती थी कि निजी पहलू को दबना पड़ेगा।

दोपहर बीतती गई और हालाँकि मैं अपने कमरे में बैठी हुई चिट्ठी-पत्री देखती रही लेकिन मेरा एक कान उन लोगों की ओर लगा था जो कि मेरे पति के कमरे से आ-जा रहे थे। दोपहर बाद वह अपनी नाक का इलाज कराने डॉक्टर के कमरे में गये। और शाम को उन्होने फिर खाना अपने कमरे में ही खाया।

अगले दिन हम सब लोग काम में लगे हुए थे। मैं हमेशा की तरह नौ बजे नागरिक-सुरक्षा कार्यालय मे गई लेकिन बारह बजने से पहले ही ह्वाइट-हाउस लौट आई ताकि अपने पति के साथ कैपीटल जाकर कांग्रेस के सम्मिलित सदनों को दिये जाने वाले उनके सन्देश को सुन सकूं। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं एक बार फिर वह दिन देख रही हूँ जब कि प्रेसीडेण्ट विलसन ने प्रथम महायुद्ध में हमारे भाग लेने की घोषणा की थी। इस बार संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रेसीडेण्ट मेरे पति थे और अपने जीवन में दूसरी बार मैं प्रेसीडेण्ट के मुख से युद्ध की घोषणा सुन रही थी। मैं अत्यधिक दुखी हो उठी। मुझे अपने पति और भाई के लिए प्रथम महायुद्ध के आरम्भ की चिन्ताएं याद आईं; और अब सैनिक-आयु प्राप्त किए हुए मेरे चार पुत्र थे।

पौने छः बजे मैं घर लौटी और सात बजकर दस मिनट पर मैं और कुमारी थॉमसन वाशिंगटन के हवाई अड्डे पर नगर-पिता लागार्डिया के साथ पश्चिमी तट की ओर जाने के लिए तैयार थे। जाते वक्त मुझे एलियोट की एक झलक-भर मिली थी जो कि ह्वाइट-हाउस में एक रात बिताने आया हुआ था। एलियोट वायु-सेना में पथदर्शी (नेवीगेटर) की शिक्षा पा रहा था और शिक्षा में उत्तीर्ण होने से पूर्व वह अपनी अन्तिम उड़ान पर आया था। युद्ध के कारण शिक्षण-अवधि कम कर दी गई थी और पूरे समय से दो सप्ताह पूर्व ही परीक्षा हो जाती थी। इसके तुरन्त बाद ही एलियोट को पश्चिमी तट पर रक्षा के निमित्त वायुयान द्वारा चक्कर लगाने को भेज दिया गया।

इस दौरे पर जाने से पूर्व मैंने श्रीमती नेसबिट से ह्वाइट-हाउस में ऐसे परदे लगाने के लिए कह दिया था कि जिनमें से प्रकाश बाहर न निकले ताकि हवाई हमलों से रक्षा हो सके। हवाई हमलों से बचने के लिए तुरन्त ही कोष-विभाग के तहखानों में सुरक्षा-स्थान बनाया जाने लगा; विषैली गैसों से बचने के लिए हरेक को एक नकाब (गैस मास्क) दिया गया और हवाई हमलों से बचने का अभ्यास आरम्भ हो गया। इन बातों से बचने में मैं

खुश थी। सुरक्षा स्थान के बारे में मेरे पति मिस्टर मोरगेनथू से मजाक करते हुए कहते थे : "हैनरी, मैं सुरक्षा-स्थान में तब तक न जाऊँगा जब तक कि तुम मुझे अपने खजाने के सारे सोने से पोकर (ताश का एक खेल) न खेलने दोगे।"

१५ दिसम्बर को दिन के करीब दो बजे मैं वाशिंगटन लौट आई। सात दिन के लिए मैं बाहर थी और इन दिनों मैं काम में और सफर में लगातार लगी रही।

मै यह सोचे बिना न रह सकी कि 'न्यू डील' के सामाजिक उद्देश्यों ने ही हममें वह भावना प्रेरित की है कि जिससे हमारे लिए युद्ध लड़ना सम्भव हो सका है और यह मेरा विश्वास था कि जनता में इस भावना का समावेश करना अति आवश्यक है कि हम युद्ध लड़ते हुए इन्हीं उद्देश्यों के लिए सचमुच लड़ रहे है। यह स्पष्ट था कि यदि संसार पर हिटलर का अधिकार हो गया तो स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्रवाद कायम न रह सकेगा। मैं युद्ध को चलाने के लिए और युद्ध के बाद के लिए यह जरूरी समझती थी कि अल्पमत के अधिकारों के लिए संघर्ष चलता रहे। मैं चाहती थी कि स्वास्थ्य-सम्बन्धी हमारी समस्या का क्षेत्र सामरिक औषधियों तक ही सीमित न रहे बल्कि इससे बच्चों और युवकों को भी लाभ पहुँचाया जा सके। मेरा विचार था कि युद्ध के पश्चात् एक बृहत् स्वास्थ्य योजना की नींव डाली जाय।

पर्ल हारबर पर आक्रमण होने के बाद से ह्वाइट-हाउस में किये हुए सब कार्य युद्ध की तैयारी के निमित्त किये जाते थे। फ्रैंकलिन अब अधिकाधिक सेना-विभाग के लोगों से या श्रीमती अन्ना रोजनबर्ग-जैसे लोगों से मिलते थे जिनका श्रमिकों से बहुत अधिक सम्पर्क था। युद्ध की तैयारी मे सामरिक कार्यों के बाद श्रम का स्थान अति महत्वपूर्ण था।

जब हमें मालूम हुआ कि २२ दिसम्बर को मिस्टर चर्चिल आने वाले हैं तो सब जल्दी-जल्दी तैयारी करने लगे। २२ दिसम्बर के उस स्मरणीय दिन मेरे पति रूसी, चीनी और डच राजदूतों से मिलने के अतिरिक्त बहुत-से अन्य लोगो से मिले। शाम को छः बजे से कुछ समय पूर्व वह ब्रिटिश

प्रधान मन्त्री से मिलने गए और वे सब साढ़े छः बजे ह्वाइट-हाउस में आये।

मैं उस रोज सुबह न्यूयार्क से रात की गाड़ी से आई थी और दिन का अधिक समय मैंने नागरिक सुरक्षा-कार्यालय में बिताया था। मैं सालवेशन आर्मी और कैथोलिक दान-संस्था की क्रिसमस पार्टियो में गई और ऐली क्रिसमस-वृक्ष-प्रोग्रामो में मैंने भाग लिया और इस प्रकार मैंने दिन के सरकारी कार्यक्रम के अतिरिक्त और भी बहुत-से काम किये। मुझे याद है कि उस दिन शाम को अपने मेहमानों के साथ बातें करते हुए मुझे नीद आने लगी थी।

क्रिसमस का यह पहला ऐसा अवसर था कि जिसमे मेरी सास न थी और मुझे अपने पति की खातिर इस बात का बहुत दुःख था; लेकिन अचानक एक-साथ इतने मेहमानों के आ जाने से और काम की अधिकता के कारण निजी दुःख का खयाल करना उनके लिए प्रायः असम्भव-सा हो गया था। क्रिसमस से एक दिन पूर्व मै हमेशा की तरह गरीब बच्चो की पार्टी में गई, और कुछ घण्टों के लिए ओ० सी० डी० और फिर 'अमरीका के स्वयं-सेवकों' के यहाँ गई। दिन के चार बजे पूर्वी कमरे मे मैंने और मेरे पति ने अपने घर के कर्मचारियों और उनके परिवारो का स्वागत किया। नार्वे के युवराज अपनी पत्नी और बच्चों सहित तथा मिस्टर ओस्टगार्ड अपनी पत्नी के साथ और उनके यहाँ रहने वाले मिस्टर ऐडेल हमारे मेहमान थे और घरेलू पार्टी के बाद हम सब ह्वाइट-हाउस के दक्षिणी मैदानों में क्रिसमस-वृक्षों की रोशनी देखने गए। फ्रैंकलिन ने हमेशा की तरह दक्षिणी बरामदे से कुछ शब्द कहे और हमेशा के गीत और प्रार्थनाएं ब्राडकास्ट की गईं, लेकिन हमारे दिलों में खुशी न थी। सर्दी से हम जकड़े जा रहे थे और जब घर में लौटकर हमें एक-एक प्याली चाय मिली तो राहत मिली।

उस दिन सन्ध्या के भोज में वर्नार्ड बारुच भी आये जो कि मिस्टर चर्चिल के पुराने मित्रों मे से हैं। खाने के बाद हमे छोड़कर वे लोग फिर अपने काम में लग गए। मैंने क्रिसमस के उपहार मोजों में भरे हालाँकि

इस बार उपहार कम ही थे, क्योंकि हमारे पोते-पोती हमारे साथ न थे और इसके बाद हमेशा की तरह मै कुमारी थॉमसन के साथ सेण्ट थॉमस के गिरजे मे अर्धरात्रि की पूजा करने गई।

क्रिसमस के दिन हम अपने सब अतिथियों सहित फाउण्डरी मैथोडिस्ट चर्च मे गये। सरकारी अतिथियों के अतिरिक्त हमारे साथ हैरी हॉपकिन्स और डायना, श्रीमती जे० आर० रूजवेल्ट और हैरी हूवर थे। दिन के भोजन के समय हम लोग उन्नीस व्यक्ति थे। दोपहर में सैनिक मंडल अपने प्रधान अधिकारियों से मिला, लेकिन हम साढ़े चार बजे अपने क्रिसमस-वृक्ष का उत्सव मनाने लगे और नार्वेजियन शाही परिवार ने हमारा साथ देकर बच्चों की संख्या बढ़ा दी। उस रात का क्रिसमस-भोज हमारे किसमस-भोजों में सबसे बड़ा था—साठ व्यक्ति एक साथ खाने बैठे, और भोज के उपरान्त सिनेमा और क्रिसमस-गीतो का प्रोग्राम हुआ, लेकिन मेरे पति के साथी फिर काम में लग गए और रात के एक बजे के बाद तक काम करते रहे।

१९४२ के हमारे अतिथियों में प्रधान-मंत्री मैकेनजी किंग, प्रेसीडेण्ट और मैडेम क्यूजोन आदि थे। मई के महीने मे परराष्ट्र मंत्री मलोतोफ अपने दुभाषिये श्री पावलॉव के साथ आये। जिस समय वह आये थे मैं घर पर नहीं थी इसलिए उनके भोज में केवल पुरुष थे, लेकिन दूसरे दिन सुबह श्री मलोतोफ श्री पावलॉव के साथ मेरे कमरे में मुझसे बातचीत करने आये। उन्होंने अपने देश और मेरे देश के सामाजिक सुधारों की चर्चा की और आशा प्रगट की कि शीघ्र ही किसी दिन मुझे सोवियत रूस जाना होगा। मुझे एक मनोरंजक घटना की सूचना पहले ही मिल चुकी थी। व्हाइट-हाउस का एक नौकर श्री मलोतोफ का एक बेग खोलते वक्त अचम्भे में पड़ गया जब कि उसे बेग में एक बड़ी काली रोटी, मसालेदार गोश्त और एक पिस्तौल मिला। गुप्त विभाग के अधिकारी बाहर से आये हुए मेहमानों के पास पिस्तौल का रहना पसन्द नहीं करते थे लेकिन इस मौके पर कुछ न कहा गया। यह जाहिर था कि श्री मलोतोफ ने सोचा होगा कि उन्हें अपनी रक्षा करनी होगी और शायद उन्हे भूखा भी रहना पड़े।

१० जून को हमारे साथ यूनान के राजा थे, और १४ तारीख को ह्वाइट-हाउस के खाने के कमरे मे शान के साथ 'फ्लेग डे'-उत्सव मनाया गया जिसमे सेक्रेटरी ऑफ स्टेट के अलावा २७ देशों के कूटनीतिक प्रतिनिधि उपस्थित थे।

उस वर्ष की वसन्त-ऋतु मे मेरा अधिकांश समय न्यूयार्क नगर में अपना और श्रीमती जेम्स रूजवेल्ट का मकान खाली करने मे बीता। हम लोग उन मकानो में १६०८ से रह रहे थे और अन्दाजा लगाया जा सकता है कि इतने वर्षों मे कितना सामान इकट्ठा हो गया होगा। मेरी सास कभी कोई चीज न फेंकती थी, इसलिए यह काम आसान न था।

इन दोनों मकानो में मेरे पति १६३२ के बाद न गये थे लेकिन फिर भी वह यह बता सकते थे कि कौन-सी चीज कहाँ रखी है और किस चीज की उन्हे जरूरत है। उस वसन्त-ऋतु मे उन्होने यह देखने मे दो घटे बिताये कि सब चीजें हटाई जा चुकी हैं या नहीं। उदाहरण के लिए उन्होने फौरन मुझसे उस चित्र के बारे मे पूछा जो कि उनकी माँ की लाइब्रेरी में लगा हुआ था और जिसे कि मैंने फ्रेंकलिन जूनियर को दे दिया था।

२१ जून से २५ जून तक मिस्टर चर्चिल फिर हमारे साथ रहे। जब-जब मिस्टर चर्चिल हमारे यहाँ आये, मेरे पति और उनके बीच मे मैत्री और पारस्परिक स्नेह बढ़ता ही गया, जो कि सरकारी सम्पर्क से बिलकुल भिन्न था। यह प्रत्यक्ष था कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका और ग्रेट ब्रिटेन को मिलकर एक साथ काम करना ही होगा, लेकिन युद्ध को लाभदायक तरीके से चलाने के लिए मिस्टर चर्चिल और मेरे पति की व्यक्तिगत मैत्री द्वारा दोनो राष्ट्रों को एक सूत्र मे बाँधा जा सकता था। युद्ध के प्रमुख प्रश्न के अतिरिक्त दोनों व्यक्तियों के बीच बहुत-सी समान बातें थी। उन दोनो को समुद्र और जल-सेना से प्रेम था। वे दोनों इतिहास के अच्छे ज्ञाता थे और दोनों की साहित्यिक अभिरुचि भी एक-सी ही थी। जब मिस्टर चर्चिल लीयर की 'नॉनसेन्स राइम्स' के पद्यांश सुनाते तो मेरे पति को बहुत आनन्द मिलता था, क्योंकि यह पुस्तक फ्रेंकलिन की प्रिय पुस्तकों में से थी। दोनों ने जीवन-चरित्रों का खूब अध्ययन

कर रखा था। मेरे पति को कला से उतनी दिलचस्पी नहीं थी; लेकिन दोनों को बाहर के जीवन—शहर या देहात—में आनन्द आता था। मेरा खयाल है कि एक-दूसरे की योग्यता का आदर करने के कारण उनकी मैत्री बढ़ती गई। वे लोग हर विषय पर एक-दूसरे से सहमत नहीं होते थे; मैंने अपने पति को ऐसी बातें कहते सुना जो कि कुछ मौकों पर चिढ़कर और अक्सर यथार्थवादी दृष्टिकोण से समस्याओं को देखने के कारण कही गई थीं।

मुझे वह दिन याद है जिस दिन तोब्रुक पर दुश्मन का कब्जा हुआ। जब यह खबर आई मिस्टर चर्चिल हमारे साथ थे और हालाँकि वह घबराये हुए थे लेकिन उनकी तात्कालिक प्रतिक्रिया थी यह कहना : "अब क्या करना है ?" इन दोनों व्यक्तियों में से कोई भी किसी नई स्थिति का सामना करने मे कभी असमर्थ नहीं हुआ। मैंने उनमें से किसी को यह कहते कभी नहीं सुना कि अन्त में हमारी जीत नहीं होगी। इसका दूसरों पर भी प्रभाव पड़ता था और उनके साथ के व्यक्तियों को कभी इतना भी कहने का साहस नहीं हुआ कि "मुझको भय है।" मेरा मतलब यह नहीं कि कभी वे दुखी नहीं हुए। मुझे याद है कि खास तौर पर 'डी डे' के दिन बड़े मानसिक तनाव के साथ समाचार की प्रतीक्षा कर रहे थे।

अगस्त मास मे नीदरलैण्ड्स की महारानी विलहैल्मीना प्रथम बार पधारीं। मेरी प्रेस-कान्फ्रेंस में आने वाली स्त्री-पत्रकारो ने उनसे बहुत मिलना चाहा और हालाँकि मुझे सन्देह था कि शायद ही इसका प्रबन्ध किया जा सके लेकिन दूसरे दिन सुबह ही प्रेस-कान्फ्रेंस में वह उपस्थित हुई। पत्रकारों से बातचीत के दौरान मे उन्होंने इस बारे में कुछ कहा कि नात्सियो के अधीन हॉलैण्ड मे तपेदिक बढ़ती जा रही है, लेकिन फौरन ही उन्हे अपने इस वक्तव्य पर दुःख हुआ क्योंकि उन्हें भय था कि नात्सी इस वक्तव्य का बदला लिये बिना न रहेंगे और इससे हालैण्ड-निवासियों को और अधिक हानि उठानी पड़ेगी। अतः मुझे स्त्री-पत्रकारों को पीछे से उन्हें यह समझाना पड़ा कि हालैण्ड मे तपेदिक के बारे मे जो-कुछ रानी ने कहा था उसे प्रकाशित न किया जाना चाहिए। प्रेस-सम्मेलन के बाद मैं

महारानी के साथ कैपीटल गई, वहाँ वह मेरे पति से मिली और इसके बाद हम उस उत्सव मे ग ये जहाँ कि एक अमरीकन सामरिक जलयान नीदरलैण्ड्स जल-सेना को स्थानान्तरित किया गया। प्रेसीडेण्ट और महारानी दोनों ने कुछ शब्द रेडियों पर कहे और महारानी ने जलयान पर जाकर उन हालैण्ड-वासियो से बातें की जो कि जहाज को लेकर जा रहे थे। इसके बाद हम सब 'पोटोमेक' नामक जहाज मे खाना खाने गए और उनमे बैठकर नदी के रास्ते से हम माउण्ट वर्नॅन पहुँचे।

नीदरलैण्ड्स की महारानी से फ्रैंकलिन की यह दूसरी मुलाकात थी। पहली मुलाकात उस समय हुई थी जब कि वह महारानी जूलियाना के साथ मैसाचूसेट्स में हाइड-पार्क से कुछ मील दूर ठहरी हुई थी। युवराज-पत्नी मार्टा उन दिनों हमारे यहाँ ठहरी हुई थीं, वह मेरे पति के साथ नीदरलैण्ड्स की महारानी से मिलने गई थीं। उन्होंने बड़े मनोरंजन के साथ बताया कि फ्रैंकलिन ने महारानी से मिलकर कहा कि उन्हें महारानी से मिलने से पहले बड़ी घबराहट थी क्योंकि उन्होंने सुन रखा था कि सब राजा-रानियों मे वह सबसे अधिक भय उत्पन्न करने वाली हैं। हरेक मुलाकात के साथ महारानी के प्रति उनका आदर बढ़ता ही गया और हम दोनों उनसे स्नेह करने लगे।

गर्मियों से वाशिंगटन में एक अन्तर्राष्ट्रीय छात्र-सैनिक-सम्मेलन हुआ जिनमें अन्य देशों के उन अनेकों युवक-युवतियों ने भाग लिया जो कि युद्ध में काफी अरसे तक भाग ले चुके थे। मैंने युवक अंग्रेज और रूसियों को देखा और वे सब-के-सब मुझे पसन्द आये। अंग्रेजो मे से कुछ को मुझे फिर देखने का मौका मिला जब कि वे संयुक्त-राष्ट्र में तैनात थे; बाकी लोगों से मैं इंगलैण्ड में मिली। लेकिन मुझे सोवियत रूस के युवक-युवतियों के पास से कोई समाचार नही मिला जिनके कि नाम यह थे—लैफ्टिनेण्ट लुदमिला, पावलीच्यैन्को, निकोलाई ग्रासावच्येनचो और व्लादीमीर प्चेलिन्तसेव।

मेरे लिए दूसरी महत्वपूर्ण घटना थी मेरे पति का निर्णय कि मुझे महारानी एलिजाबेथ का निमन्त्रण स्वीकार करके इंगलैण्ड जाना चाहिए और

युद्ध में किये हुए स्त्रियो के कार्य को देखना चाहिए तथा वहाँ गये हुए अमरीकन सैनिकों से मिलना भी चाहिए। मुझे उस समय मालूम न था कि मुझे भेजने के लिए मेरे पति इसलिए विशेषतः इच्छुक थे क्योंकि अमरीकन सैनिक आक्रमण के लिए शीघ्र ही उत्तरी अफ्रीका जाने वाले थे।

जब-जब मिस्टर चर्चिल ह्वाइट-हाउस आते तो मेरे पति के इंगलैण्ड जाने का जिक्र किया करते थे, लेकिन मालूम ऐसा होता था कि मानो वह यह चाहते हैं कि जब थोड़ी या पूरी जीत हो जाय तो मेरे पति को जीत की खुशी मनाने के वक्त इंगलैण्ड जाना चाहिए। मैं नहीं समझती कि कभी मिस्टर चर्चिल ने यह सोचा हो कि लड़ाई के दौरान में मेरे इंगलैण्ड जाने से कुछ लाभ हो सकता है। मेरा खयाल है कि वह यह मान बैठे थे कि जब मेरे पति इंगलैण्ड जायंगे तब ही मैं उनकी पत्नी की हैसियत से उनका साथ दूँगी।

लेकिन मेरे इंगलैण्ड जाने को बाबत महारानी एलिजाबेथ ने सोचा क्योंकि फ्रेंकलिन से पूछा गया कि क्या मैं इंगलैण्ड जाकर ब्रिटिश स्त्रियों के युद्धकालीन कार्यों को देखना पसन्द करूँगी।

जब इस बारे में मेरे पति ने मेरी राय जाननी चाही तो मैने उन्हें आश्वासन दिलाया कि अगर वह समझते हैं कि मेरे जाने से लाभ है तो मैं खुशी-खुशी जाऊँगी। यह जानते हुए कि उत्तरी अफ्रीका का आक्रमण शीघ्र ही आरम्भ होने वाला है उन्होंने कहा कि ब्रिटिश स्त्रियों के कार्यों को देखने के अतिरिक्त वह चाहते थे कि मैं अपने सैनिकों से मिलूँ, और उन्हें प्रेसीडेण्ट का सन्देश दूँ। नागरिक सुरक्षा-कार्यालय के मेरे हाल के अनुभव ने मेरे दिल में यह बात बैठा दी थी कि ह्वाइट-हाउस में रहकर मैं द्वितीय महायुद्ध के लिए कोई विशेष काम नहीं कर सकती। इंगलैण्ड के दौरे ने मुझे कुछ ऐसा काम करने का मौका दिया जो कि लाभप्रद सिद्ध हो सकता था।

जब मेरे पति ने हैरी हॉपकिन्स से कहा कि मैं जाने के लिए राजी हूँ (क्योंकि मेरा खयाल था कि यह सुझाव सबसे पहले हैरी ने ही पेश किया था)

तो इंगलैण्ड से मुझे एक बाकायदा निमन्त्रण मिला। मैं तैयारी में लग गई—एक व्यावसायिक वायुयान में मैंने सीट रिज़र्व करवाई। मैंने किराया अदा किया और हमें बताया गया कि हम अपने साथ कितना सामान ले जा सकते हैं। और २१ अक्तूबर को नियत समय पर मैं लॉन्ग आइलैण्ड के हवाई अड्डे पर पहुँच गई।

इस विचार ने मुझे चिन्तित बना रखा था कि मुझे बकिंघम-पैलेस में जाना होगा, लेकिन मैंने अन्त में अपने-आपको समझाया कि आखिर दो दिन के लिए कैसे भी अजीब अनुभवों का सामना किया जा सकता है। हालाँकि मैं यहाँ सैर करने किसी भी सूरत मे नही आई थी लेकिन फिर भी यह मेरा दृढ़-विचार था कि दिलचस्पी की बातों के लिए मैं जागरूक रहूँगी। हो सकता है कई बातो से मै अपरिचित होऊँ और इस कारण अपनी अयोग्यता महसूस करूँ कि किस मौके पर मुझे क्या करना चाहिए, लेकिन फिर भी मैंने तय किया कि चिन्ता किये बिना भरसक कोशिश करके मैं अपनी जिम्मेदारियों को निभाऊँगी। इतना कुछ सोचने-समझने के बाद भी जब लन्दन करीब आने लगा तो मेरी घबराहट बढ़ने लगी और मैं सोचने लगी कि यहाँ आने की यह मुसीबत मैंने क्यों मोल ली है। मुझे एक 'अति महत्वपूर्ण व्यक्ति' समझा जा रहा था क्योकि मेरे पति संयुक्तराष्ट्र अमरीका के प्रेसीडेण्ट थे।

दस

आखिर हम स्टेशन पर आ पहुँचे। सम्राट्-सम्राज्ञी और हमारे उच्च सैनिक अधिकारी वहाँ मौजूद थे। मैंने निश्चय ही अपनी घबराहट छिपा रखी थी, क्योंकि बाद में टॉमी ने बताया कि अगर मैं इतनी शान्त नज़र न आती तो जरूर ही उसे कॅपकॅपी छूट जाती।

नियमानुकूल अभिवादनों के बाद सम्राट्-सम्राज्ञी मुझे अपनी गाड़ी में ले गए। जब वे अमरीका आये थे तो मैंने उनके बारे मे सोचा था कि यह एक यौवनपूर्ण सुन्दर जोड़ा है जिसे कि शीघ्र ही अति कटु अनुभवो का सामना करना पड़ेगा। यह विचार मेरे मन में फिर आया, क्योंकि इस समय इनको ऐसे ही अनुभवों का सामना करना पड़ रहा था जिन्हें कि मुझे बताने के लिए वे उत्सुक नज़र आते थे। सम्राट्-सम्राज्ञी के साथ मेरे सम्पर्क के कारण मेरे हृदय में उन दोनों के लिए महान् आदर है।

बकिंघम-पैलेस पहुँचकर उन्होने मुझे मेरे ठहरने के कमरे दिखाये और साथ ही यह बताया कि बाहर के प्रतीक्षा-कक्ष में और अन्दर की बैठक में मुझे थोड़ी ही आग मिल सकती है और उन्होंने कहा कि उन्हें आशा है कि आग कम होते हुए भी मुझे ज्यादा सर्दी नही लगेगी। खिड़कियो से उन्होने मुझे गोली के निशान दिखाये। मेरे कमरे की खिड़कियों के सब शीशे टूटे हुए थे और उनकी जगह काठ या एक-दो जगह काँच लगा दिये गए

थे। बाद में सम्राज्ञी ने मुझे वह जगह दिखाई जहाँ कि सम्राट् के कमरों के बीच आकर एक बम गिरा था जिससे कि सम्राट् और सम्राज्ञी दोनों के कमरे ध्वस्त हो गए थे। उन्होंने बताया कि जब रोशनी जलती रहती है तो परदों की कई तह डाले रखना जरूरी होता है; और मेरे दरवाजे के बाहर एक संदेशवाहक होगा जो कि नियत समय पर मुझे भोजन के लिए बुलाने आयगा। इतना कहकर उन्होंने मुझे अपने ऊपर छोड़ दिया।

बकिंघम-पैलेस मुझे बहुत बड़ा नज़र आया। कपड़े रखने की जगह इतनी शानदार थी कि मर्जी होती थी कि ऐसी हमारे यहाँ भी हो, लेकिन क्योंकि ५५ पौंड से ज्यादा सामान लाने की पाबन्दी, थी मेरे थोड़े-से कपड़े इस जगह लटकते हुए बड़े दयनीय दिखाई दे रहे थे। न जाने नौकरानी ने मेरा सन्दूक खोलते वक्त क्या सोचा होगा।

प्रथम रात्रि के भोजन पर प्रधान मन्त्री और श्रीमती चर्चिल, जनरल स्मट्स और उनके पुत्र, कप्तान जेकोब्स स्मट्स, सर पीयर्स ले, लार्ड और लेडी माउण्टबेटन, राजदूत विनएण्ट, काउण्टेस स्पेन्सर, एलियोट और कुमारी थॉमसन थीं।

ग्रेट ब्रिटेन में हरेक चीज उसी तरह होती थी जैसी कि आशा की जाती थी। बिजली, पानी और भोजन-सम्बन्धी प्रतिबन्ध शाही महल में उसी तरह निभाये जाते थे जैसे कि इंगलैंड के किसी दूसरे घर में। मेरे नहाने के टब में एक काली लाइन बनी हुई थी जिससे ऊपर मुझे पानी नहीं भरना चाहिए था। हमें सोने-चाँदी की थालियों में खाना खिलाया गया लेकिन रोटी वही थी जो कि लड़ाई के जमाने में आम तौर पर हर परिवार को मिलती थी और सिर्फ इसके अलावा कि कभी-कभी शाही जंगलात से कोई शिकार आ जाता था, साधारण जनता के और हमारे भोजन में और कोई अन्तर न था।

सम्राट्-सम्राज्ञी के साथ युद्ध की बरबादी का पहला असली नजारा मैंने देखा—ईंट-पत्थरों के ढेर-पर-ढेर लगे हुए थे। पहले हम सेण्ट पाल्स कैथेड्रल में रुके, क्योंकि उस गिरजे की रक्षा करने वालों को सम्राट्-सम्राज्ञी

अपने दर्शन देकर सन्तोष प्रदान करना चाहते थे और साथ ही इसलिए भी कि मैं गिरजे के सामने खड़ी होकर देख सकूँ कि आधुनिक युद्ध में एक महान् नगरी का क्या हाल होता है।

हम शहर के गरीब इलाकों में मीलों तक गये, जो कि अब खाली किये जा चुके थे। कई सड़कों पर बम गिरने के कारण गड्ढों की सचमुच पंक्तियाँ बनी हुई थीं और जिस तरफ भी मैंने निगाह उठाकर देखा बरबादी-ही बरबादी नजर आती थी। जब हम शहर में दाखिल हुए तो प्राचीन प्रथा के अनुसार नगर-पिता सम्राट् से मिलने आये और उन्होंने सम्राट् को नगर मे प्रवेश करने की अनुमति दी—यह प्राचीन प्रथा युद्ध के बावजूद भी अब तक चली आई है। इतनी अधिक बरबादी देखकर मुझे बहुत दुःख हुआ लेकिन अपने चारों ओर बमबाजी का प्रत्यक्ष प्रमाण होते हुए भी हमने नगर-पिता के साथ सही ब्रिटिश तरीके से चाय पी।

सुरक्षा की दृष्टि से मुझे एक गुप्त नाम दिया गया और हास्य की भावना से प्रेरित किसी व्यक्ति ने—मुझे शक है मेरे पति ने—तय किया कि मेरे लिए 'घुमक्कड़' नाम ठीक रहेगा। टॉमी को 'उपघुमक्कड़' नाम दिया गया।

दिन के खाने के बाद हमें एक दिन एलियोट के सैन्य-दल का निरीक्षण करना था जो कि स्टीपल मीर्डन नामक एक स्थान में ठहरा हुआ था, लेकिन क्योंकि हमारा मोटर-ड्राइवर असली ड्राइवर न होकर स्कॉटलैण्ड यार्ड की गुप्त पुलिस का अधिकारी था अतः वह रास्ता भूल गया। हमें किसी ने भी रास्ता नहीं बताया—शायद सुरक्षा की दृष्टि से भी और आखिर संयुक्त राष्ट्र अमरीका के दूतावास में टेलीफोन करके किसी ने कहा "घुमक्कड़ का पिल्ला खो गया है।"

अपने इस दौरे में मैने सब तरह की रेडक्रास-संस्थाओं को देखा। अक्सर किसी अमरीकन रेडक्रास-क्लब में मुझे पोकीपसी या संयुक्त राष्ट्र अमरीका के किसी दूसरे स्थान का रहने वाला युवक मिलता, जिसने कि मुझे अमरीका मे देखा था और क्योकि अब हम युद्ध के समीप परदेश में थे

अतः हम एक ऐसी पारस्परिक घनिष्ठता अनुभव करते जो कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका के किसी भी स्थान में सम्भव न हो सकती थी।

इंगलैण्ड के इस दौरे में मैंने एक नया अभ्यास आरम्भ किया जिसे कि मैं बाद में हमेशा काम में लाती रही। जिन लड़कों से मै बातचीत करती उनके परिवार का नाम पता नोट कर लेती थी ताकि अमरीका लौटकर उनको मैं पत्र लिख सकूँ। अमरीका लौटने से पहले ऐसे बहुत-से नाम पते मैंने जमा कर लिए थे।

हमारा दैनिक कार्यक्रम सुबह आठ बजे आरम्भ होकर आधी रात तक चलता रहता था लेकिन अपने काम मे मेरी इतनी दिलचस्पी थी कि उस समय मैं समझ न पाई कि धीरे-धीरे मैं कितनी थकती जा रही हूँ।

चूँकि प्रत्येक दिन प्रायः एक-सा ही होता था—हालाँकि हरेक दिन काम अलग-अलग होते थे—लेकिन फिर भी हमारे दैनिक कार्यक्रम की रूप-रेखा किसी एक दिन की डायरी पढ़कर समझी जा सकती है। नवम्बर ११ का दिन किसी और दिन की तरह होते हुए भी हमारे दैनिक जीवन की विभिन्नता और समानता को अच्छी तरह चित्रित करता है।

सुबह साढ़े आठ बजे लण्डन-डेरी मे हमने स्त्रियों के सैनिक-संगठन की नारी सैनिकों के साथ नाश्ता किया और साढ़े नौ बजे नाविक अड्डे का मुआयना किया। मरम्मत के कारखाने के काम करने वालों ने मुझे सिगरेट की राख झाड़ने वाली दो प्यालियाँ (एश-ट्रे) उपहार में दीं—एक प्रेसीडेण्ट के लिए जिस पर लिखा हुआ था "मालिक" (बॉस) और दूसरी मेरे लिए जिस पर "घुमक्कड़" (रोवर) शब्द अंकित थे।

दिन के ग्यारह बजे हम लण्डन-डेरी चौक में आर्मिस्टिस-दिवस के उत्सव में भाग लेने के लिए रुके। मैंने सैनिक-स्मारक पर अमरीकन सेना की ओर से माला अर्पित की और प्रथय महायुद्ध में मारे गए सैनिकों की यादगार मे असंख्य लोगो के साथ मैं एक मिनट के लिए शान्त खड़ी रही। मेरे साथ लेडी मोण्टगोमेरी भी खड़ी थीं जिनसे मिलना मैंने अपना सौभाग्य समझा। वह अपने प्रसिद्ध पुत्र "मोण्टी" जैसी ही लगती हैं और उनके मुख की

रेखाओ मे उनके चरित्र की दृढ़ता झलकती है ।

नगरपिता ने मुझसे अपनी नगर-पुस्तक पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा और इसके बाद हम लोग नाविक-अस्पताल देखने चले गए । वहाँ के उत्सव मे प्रेसीडेण्ट के लिए एक पुराने किस्म का डण्डा और एक बेंत उपहार-स्वरूप मुझे भेंट की गई ।

आयरलैण्ड के इस भाग में रहने वालो की अनुशासन की भावना इंगलैण्ड वालों से कहीं कम है । हमारे चारों तरफ भीड़ जमा हो गई और ऐसा मालूम होता था कि पुलिस भीड़ को काबू करने में असमर्थ है जब कि ऐसी स्थिति मे इंगलैण्ड के सिपाही का नम्रता से कह देना ही काफी होता ।

यहाँ के नाविक-अस्पताल का प्रबन्ध अच्छा है जो कि निसेन नमूने का बना हुआ है, जिसमे अफसरों और बहुत बीमार अफसरों के लिए अलग अकेले कमरे हैं । इससे पहले मैं न जानती थी कि इस नमूने के बने हुए मकानो में इतनी छोटी जगह मे रसोई बनाई जा सकती है—जगह ज्यादा न थी लेकिन पर्याप्त थी । आपरेशन के कमरे के लिए भी यही बात लागू होती है ।

इस अस्पताल के डॉक्टर कप्तान डेविस ने मुझसे कहा कि मैं एडमिरल मैक इनटायर से कहूँ कि वह सिर्फ यही चाहते हैं कि उनके काम मे दखल न दिया जाय । उन्हे अपना काम पसन्द है और उनका प्रबन्ध बहुत ही अच्छा है । ऐसा मालूम होता है कि उनके नीचे काम करने वाले सिपाही अच्छे हैं और साथ ही ऐसा भी मालूम होता है कि डॉक्टर को नाविक नर्सें बिलकुल पसन्द नही । उनका कहना है कि सेवा में स्त्रियों का कोई स्थान नहीं होना चाहिए, खास तौर पर लण्डन-डेरी में, जहाँ कि उसे स्त्रियो को रखने के लिए स्थान नही मिलता । उनकी बातों से पता चलता है कि उन्हें स्त्रियाँ पसन्द नही ।

दिन के भोजन के बाद, जिसमें कि मैं डेरी के बिशप के पास बैठी थी, हम लोग फौरन ही हवाई जहाज से प्रेस्टविक, स्कॉटलैण्ड पौने चार बजे चाय के वक्त पहुँचे । फिर हम ग्लासगो के लिए चल दिए; रास्ते में रुक-कर हमने कुछ स्त्रियों की संस्थाएं देखीं । एक स्थान पर स्त्रियो ने मेरे पति

के लिए स्कॉटलैण्ड की बनी हुई खास तरह की कुछ मिठाई दी। (उन स्त्रियों ने मुश्किल से मिलने वाले मेवे इस मिठाई के लिए बचा रखे थे और जब मैंने यह अपने पति को दिया तो यह उपहार अति हृदयस्पर्शी सिद्ध हुआ।)

ग्लैसगो में हम सबसे पहले अमरीकन रेडक्रास पहुँचे और उसका अच्छी तरह निरीक्षण करने के बाद कुछ समय आराम किया, समाचार-पत्र के लिए कुछ लिखा, खाना खाया और फिर कुछ सैनिको के साथ मैने कॉफी पी, सैनिको के साथ यह समय बहुत अच्छा बीता। इसके बाद व्यावसायिक जलयान के कर्मचारियों के लिए अस्पताल के प्रतिष्ठान मे भाग लेने हम गये और इस अवसर पर मैने कुछ शब्द रेडियो पर कहे। मुझे दुःख है कि जिन दो नाविको से बॉब ट्राइट रेडियो पर बात करने वाली था वह न हो सकी, क्योंकि अन्य भाषण बहुत लम्बे थे।

साढ़े नौ बजे तक हम सी० एण्ड जे० वाइर कम्पनी के कारखाने में पहुँच गए और इसे करीब एक घण्टे तक देखने के बाद हम गहरे ब्लैक आउट (हवाई हमले से बचने के लिए अन्धकार) से होते हुए रोल्स के कारखाने पहुँचे। यहाँ ग्यारह बजे तक काम करने वाली करीब साढ़े सात सौ स्त्रियाँ एक कमरे में इकट्ठी थी। कारखाने को देखने के बाद मैंने एक संक्षिप्त भाषण दिया लेकिन मेरे बाद बोलने वाले सज्जन एक-दूसरे की प्रशंसा में इतना समय लेने लगे कि मैंने सोचा कि आज रात को सोने को नहीं मिलेगा। हमें पाँच भाषण सुनने पड़े। अन्त मे करीब बारह बजे हम लॉर्ड वाइर के घर पहुँचे जहाँ कि हम उनके परिवार के कुछ सदस्यों से मिले और कुछ खाना खाया। थोड़ी देर कुछ बातचीत करने के बाद हम सोने चले गए। मैं सोच रही थी कि क्या मै साकेर सुबह उठ भी सकूँगी क्योंकि मैं बेहद थक चुकी थी और ऐसा मालूम होता था मानो मेरी टाँगें अपनी नहीं हैं।

लेकिन फिर भी सुबह जल्दी उठकर मैं तोपखाने के सिपहियों से मिलने गई और इसके बाद नाव पर चढ़कर हम क्लाइड नदी पर गये। यह मानव

द्वारा निर्मित नदी इतनी सँकरी है कि मैं दोनों तटों को खूब अच्छी तरह देख पाती थी जहाँ कि जहाज़ बनाने के काम की चहल-पहल बेहद ज्यादा नज़र आती थी। मजदूरों को हमारे आने की खबर थी और वह मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे, अतः मुझे ठण्ड में खड़े होकर दोनों तरफ हाथ हिलाकर उनका अभिवादन करना पड़ा। मैंने अपनी ज़िन्दगी में इतनी ज्यादा सर्दी पहले कभी महसूस न की थी। आखिर हम ब्राउन के जहाज़ के कारखाने में उतरे जहाँ कि 'क्वीन मेरी' और 'क्वीन एलिज़ाबेथ' नामक जहाज़ बने थे और मैंने हवाई जहाज़ों को ले जाने वाले एक बड़े जहाज़ को देखा जो कि उस समय बन रहा था। इस नदी के किनारे इधर-उधर बमबाजी हो चुकी थी लेकिन फिर भी काम में प्रगति होती जाती थी। मुझे यह देखकर बहुत खुशी हुई कि सर हैरी लॉडर ने हमारे सम्मान में गीत गाया और भाषण सुनने के लिए एकत्रित हुए मजदूरों ने उनका साथ दिया।

यह एक युद्ध-रत राष्ट्र था जो कि अत्यधिक अनिश्चितता और महान् प्रयास के बीच से गुज़र रहा था। लेकिन जिस बात ने अक्सर मुझे प्रभावित किया था वह थी इन लोगों की दृढ़ता और युद्ध में तथा युद्ध के बाद के कठिन जीवन को अंगीकार करने की इनकी योग्यता। यह आश्चर्य की बात न थी, क्योंकि जो-कुछ इन पर बीत चुकी थी उसके बावजूद भी मैं जानती थी कि वे हमेशा जीवित रहेंगे और अपने देश के लिए कार्य करते रहेंगे। बहुत-से प्रश्नों का उत्तर स्कॉटलैण्ड या इंगलैण्ड के लोगों के चेहरों से मिल जाता था।

जब मैं एक ऐसी जगह पहुँची जहाँ कि बमबाजी से पीड़ित लोगों को कपड़े, फर्नीचर और दूसरी चीज़ें दी जा रही थीं तो एक औरत ने प्रसन्नता के साथ मुझसे कहा, जिसका एक बच्चा गोद में था और दूसरा उसकी टाँगों में लिपट रहा था—"यह तीसरी बार हम पर बम गिराये गए हैं लेकिन कुछ सरकार से हमें मदद मिल जाती है और आप लोग अमरीका से कुछ कपड़े भेज देते हैं, इससे हमारा काम चल जाता है—असली बात तो यह है कि अभी तक हमें चोट नहीं पहुँची।"

अमरीका जाने से पूर्व मैं अपनी चाची मॉडग्रे और टॉमी के साथ एक दिन विंडसर कैसल पहुँची, क्योंकि मैं अपने दौरे की रिपोर्ट महारानी एलिजाबेथ को देना चाहती थी। जब कि मैं महारानी से बैठी बातें कर रही थी, सम्राट् बच्चों के साथ वहाँ आ पहुँचे जो कि उसी रोज हमारी हवाई फौजों का निरीक्षण करके लौटे थे। सम्राट् और मुझे दोनों को काफी बुरा जुकाम था और इस कारण हमें अपनी नाकों का विशेष ध्यान रखना पड़ रहा था। विंडसर पैलेस से लौटते समय मेरी चाची ने मुझसे सन्तुभित स्वर में कहा : "आज का जैसा अपमान मेरा पहले कभी नहीं हुआ। तुम अपनी नाक साफ करने के लिए कपड़ो के उन छोटे बदसूरत टुकड़ों को अपने हाथ में लिये हुई थी जब कि सम्राट् के हाथ में कितने बहतरीन खूबसूरत रूमाल थे। उन लोगो ने क्या सोचा होगा।"

एलियोट के अफ्रीका जाने से पूर्व मैं व्यथित हृदय के साथ उसे विदा कर चुकी थी। अन्त में हम लोग १५ नवम्बर के दिन रात की गाड़ी से प्रेस्टविक के लिए रवाना हुए और दूसरे दिन हमने हवाई जहाज पकड़ा।

हमारे साथ दूसरे मुसाफिर कुछ पायलट थे जो कि एक बमबाज हवाई जहाज को यहाँ पहुँचाकर संयुक्तराष्ट्र अमरीका लौट रहे थे। हमारे हवाई जहाज को गरम रखने की मशीन के खराब हो जाने से सब कम्बलों को अपने ऊपर लाद लेने के बाद भी हमें बेहद सर्दी लग रही थी। प्रेस्टविक में दिन के खाने के बाद से रात के दो बजे तक, जब तक कि हम गेण्डर लेक न पहुँचे, हमें खाने को कुछ न मिला। गेण्डर लेक पहुँचकर हमें काफी गरमाई महसूस हुई, हालाँकि जमीन पर काफी बरफ जमी हुई थी। खा-पीकर गरम होकर हम लोग हवाई जहाज से उड़ चले, हालाँकि कुछ देर हवाई जहाज के पंखों पर बरफ जम जाने के कारण हुई थी। लेकिन दूसरे दिन सुबह सही-सलामत हम वाशिंगटन के हवाई अड्डे पर उतरे जहाँ कि मेरे पति मुझसे मिलने आये हुए थे।

जंग का पहला दौरा पूरा हुआ।

ग्यारह

जिस दिन मैं घर पहुँची इक्वेडोर के प्रेसीडेण्ट के लिए एक बड़ा भोज होने वाला था जो कि एक दिन के लिए हमारे अतिथि बनकर रहने वाले भी थे। मैं कम-से-कम एक शाम का वक्त अपने परिवार के साथ बिताना चाहती थी क्योंकि उनसे मिले हुए मुझे कई हफ्ते हो चुके थे, लेकिन सार्वजनिक कार्यकर्ता को यह सौभाग्य हमेशा प्राप्त नहीं होता। भोज का समय न बदलना फ्रैंकलिन के लिए स्वाभाविक ही था क्योंकि इसका प्रबन्ध कई हफ्तों पहले हो चुका था।

थोड़े दिनों बाद ही मैं जान गई कि शीघ्र ही बाहर के दौरे होंगे जिनमें मैं भाग न लूँगी और इसलिए इस बारे में पूछ-ताछ न करना ही मैंने बेहतर समझा। पहला दौरा क्रिसमिस और नये साल की छुट्टियो के बाद ६ जनवरी १६४३ को हुआ जब कि मेरे पति मियामी, फ्लोरिडा गये और वहाँ से १२ तारीख को हवाई जहाज से कैसाब्लान्का को चल दिए। समुद्र के ऊपर हवाई जहाज से यह उनका पहला इतना बड़ा सफर था और मैं चाहती थी कि इस सफर से वह हवाई जहाज द्वारा आना-जाना पसन्द करने लगें लेकिन उन्हें हवाई सफर पहले से भी ज्यादा बुरा लगने लगा।

यह प्रत्यक्ष था कि युद्ध के दिनों में इस प्रकार के सफर में निजी खतरा है लेकिन यह एक ऐसी चीज थी जिसके बाबत फ्रैंकलिन ने कभी न सोचा था।

प्रेसीडेण्ट चाहे कुछ भी करे, उसके लिए हमेशा ही निजी खतरा बना रहता है। बहुत पहले जब मेयर सेरमाक मारे गए थे, फ्रेंकलिन से मेरी इस बारे में बातें हुई थीं और हम लोग इसी नतीजे पर पहुँचे थे कि इस तरह के खतरे के लिए कुछ नहीं किया जा सकता। आप उस आदमी से अपनी रक्षा नहीं कर सकते जो कि इस बात की परवाह नही करता कि वह पकड़ा जायगा या नहीं। लेकिन चूँकि निरन्तर भयभीत तथा सशंकित होकर नहीं रहा जा सकता अतः केवल यही एक तरीका है कि दिमाग से सब तरह के खतरों का खयाल दूर करके अपने काम को, जिस तरह भी ठीक समझा जाय, करना चाहिए।

फ्रेंकलिन के वाशिंगटन से चले जाने के बाद एक दिन सुबह मैं स्टेशन पर एक गाड़ी देखने गई। गाड़ी लेट थी, अतः मैं प्रेसीडेण्ट के प्रतीक्षालय में चली गई जो कि अब सैनिकों के लिए सूचनालय में परिणत किया जा चुका था। सैनिकों की नोटबुकों मे बेशुमार दस्तखत करके और उनसे बात-चीत करने के बाद जब मुझे यह मालूम हुआ कि गाड़ी बहुत लेट है तो मैं उस बुरे मौसम में पैदल घर की ओर चल दी। एक युवक सैनिक ने मेरे साथ चलने की मुझसे अनुमति माँगी। पैनसिलवानिया एवेन्यू पहुँचकर मैंने उससे पूछा कि उसकी गाड़ी कब जाने वाली है, और जब मुझे यह मालूम हुआ कि दोपहर बाद तक उसको फुर्सत है तो मैंने उसे अपने साथ दिन का खाना खाने के लिए आमन्त्रित किया। मैंने इसको कतई अजीब न समझा कि एक बावर्दी आदमी मेरे साथ चला आय, लेकिन जब मैंने ह्वाइट-हाउस पहुँच कर कहा कि वह दिन के खाने के लिए यहाँ रुकेगा तो पहरेदारो और अन्य कर्मचारियों की मुखाकृति से प्रतीत हुआ कि उन्हें यह पसन्द नहीं। वे जानते थे कि मैं इस युवक से भली-भाँति परिचित नहीं थी अतः वे मेरे इस काम को बहुत खतरनाक समझते थे। मैं इसमें कोई भी खतरा न देख पाई। एक तो फ्रेंकलिन थे ही नहीं और न मैं उसको कई महत्वपूर्ण सूचना ही देने वाली थी और न यह सम्भव था कि कि किसी षड्यन्त्र का मैं शिकार हो सकती हूँ।

जब फ्रैंकलिन लौटे तो उनके पास सुनाने के लिए बहुत मसाला था। वह बड़े प्रेम से सुनाते कि जब वह एक जीप में बैठकर सैनिकों का निरीक्षण करने गये तो उन्हें देखकर सैनिकों को बड़ा अचम्भा हुआ और सैनिकों की पीछे की पंक्ति से किसी ने जोर से कहा: "यह देखो प्रेसीडेण्ट!" हालाँकि कमाण्डिंग अफसर को इस बात का बहुत बुरा लगा और उसने इसे अनुशासन भंग करना समझा।

दूसरी बात, जो कि फ्रैंकलिन कहा करते थे, वह थी उन स्थानों के निवासियों की दुर्दशा जहाँ-जहाँ वह गये थे। वह मेरी इस बात से सहमत थे कि लाइबेरिया मे संयुक्तराष्ट्र अमरीका का महान् उत्तरदायित्व है जो कि अभी तक पूरा नहीं किया गया है, और मुझे इस बात की विशेष प्रसन्नता है कि अब एडवर्ड स्टेटिनियस ने लाइबेरिया में उन योजनाओं को कार्यान्वित करना आरम्भ कर दिया है जिनके बारे में उस समय उन्होंने मेरे पति से बातचीत की थी। उन्होंने एक कम्पनी बनाकर उस देश के प्राकृतिक साधनों का विकास आरम्भ कर दिया है—यह एक ऐसा कार्य है जो कि उस समय केवल स्वप्न-मात्र ही था जब कि मेरे पति के कैसाब्लेन्का से लौटकर आने पर उन्होंने/इस बारे में बात की थी।

उस वर्ष फ्रैंकलिन अपना जन्म-दिन न मना सके क्योंकि कैसाब्लेन्का से ३१ जनवरी से पहले वह न लौटे थे। अगले दिन उन्होंने वैदेशिक समिति, उप-प्रेसीडेण्ट तथा सीनेट के नेताओं के सम्मुख अपने सफर का हाल पेश किया। उन दिनों वह बहुत ही व्यस्त रहते थे हालाँकि कभी-कभी एक दिन के लिए हाइड-पार्क जाने का समय वह निकाल लेते थे।

फरवरी के शुरू में मैं पोर्टलैण्ट मेन गई। उसी महीने बाद में मैं हवाई जहाज द्वारा डब्ल्यू० ए० सी० के प्रधान कर्नल ओवेटा हॉबी के साथ डेस मोयन्स, आयोवा और उनके शिक्षण-केन्द्र का निरीक्षण करने गई। वहीं से मैं कुछ समय के लिए कोलम्बिया, मिसौरी के एक कॉलेज में भाषण देने गई और जब लौटी तो मेरे पास इतना समय था कि मैडम

चांग-काई-शेक का अभिवादन कर सकूँ जो कि १७ फरवरी को हमारे यहाँ ठहरने आई थीं।

हमारे यहाँ से जाने के बाद मैडम चांग ने सारे संयुक्त राष्ट्र अमरीका में एक लम्बा दौरा किया। यह दौरा वह काफी उद्यम और कठिनाई के साथ पूरा कर पाई होंगी। लौटकर उन्होने बहुत सोच-सोचकर टॉमी से सवाल पूछे। मैं और टॉमी उनके पीछे-पीछे ही दौरा करते निकले और प्रायः हर उस जगह पहुँचे जहाँ कि वह हमसे कुछ दिन पहले ही पहुँची थी और हर जगह हमने उनकी बाबत सुना। मैडम चांग इस बात से हैरान थीं कि हम दोनों के लिए इतना लम्बा दौरा अकेले ही करना कैसे सम्भव हुआ जब कि उनके साथ चालीस आदमी थे और फिर भी हर जरूरी चीज पूरी तरह न हो पाती थी। उन्होंने टॉमी से पूछा कि हमारा सामान कौन बाँधता था और टॉमी ने बताया कि हम दोनों अपना-अपना सामान खुद बाँधते थे। इसके बाद उन्होने पूछा कि टेलीफोन पर जवाब कौन देता था तो टॉमी ने कहा कि जो भी टेलीफोन के पास होता वही जवाब देता था और कि अक्सर मैं टॉमी की जगह बोलती थी। उन्होने फिर पूछा कि चिट्ठी तार आदि कौन देखता था तो टॉमी ने बताया कि हम दोनों मिलकर देखते थे। उनका अगला सवाल था कि कपड़ों का इन्तजाम कौन करता था। तो टॉमी ने उत्तर में कहा कि अगर किसी पोशाक पर इस्तरी करानी होती थी तो हम उसे होटल के नौकर को दे देते थे। अन्त मे उन्होने मेरी सुरक्षा के बारे में पूछा। टॉमी ने समझाया कि हम 'सुरक्षा' आवश्यक न समझते थे, क्योकि हमारे साथ हरेक भला आदमी था, लेकिन कई शहरों मे हमें स्टेशन पर लेने, पहुँचाने और अगर हम ज्यादा भीड़ में जा रहे होते तो मोटर चलाने आदि कामों के लिए खास लोग तैनात रहते थे—लेकिन यह काम स्थानीय अधिकारियों की इच्छा पर निर्भर होता था।

मैंने अपने सारे भ्रमण मे कभी भी 'सुरक्षा' की माँग न की और न उसकी आवश्यकता ही कभी महसूस की और मेरे साथ कभी कोई अप्रिय घटना भी नही घटी। मुझे देखकर लोग उत्साहित अवश्य हो जाते थे—यह

मेरे प्रति उनकी सद्भावना थी और मेरे पति के प्रति उनके प्रेम का यह प्रदर्शन था। एक बार मेरे गले के रूमाल का एक टुकड़ा बतौर सौगात फाड़ लिया गया था, लेकिन इससे ज्यादा बुरा और कभी कुछ नहीं हुआ।

सुरक्षा की हमारी अनावश्यकता को मैडम चांग के लिए समझना असम्भव था लेकिन अगर चीन की अव्यवस्थित दशा और इतने लम्बे अरसे तक वहाँ युद्ध चलते रहने का खयाल किया जाय तो यह समझना आसान है कि क्यों इस देश के सुरक्षा-प्रबन्धों को समझना उनके लिए कठिन था।

अप्रेल के महीने में मैं फ्रेंकलिन के साथ मैक्सिको के युद्ध-सम्बन्धी कार-खानों का निरीक्षण करने और वहाँ के प्रेसीडेण्ट से मिलने गई। यह सैर मेरे लिए बहुत मनोरंजक साबित हुई, क्योंकि इस देश में आने का यह मेरा पहला मौका था।

मैक्सिन-आतिथ्य-सत्कार और जिस किसी से भी हम मिले उसके सौजन्य ने हम सबको बहुत प्रभावित किया। हम इस भावना को साथ लेकर लौटे कि मैक्सिको एक ऐसा पड़ोसी है जिसकी आत्मा हमारे बहुत निकट है। मेरा खयाल है कि मेरे पति पहले से ही अपने-आपको मैक्सिको के निवासियों के बहुत निकट पाते थे, लेकिन हममें से अधिकांश के लिए यह एक नया अनुभव था।

देश के अन्य परिवारों की तरह हम भी अपने पुत्रों के पत्र पाने के लिए अधीर रहा करते थे। जल-सेना में काम करने वाले हमारे लड़के कभी-कभी तट पर आते और थोड़ी-बहुत देर के लिए हम उनसे मिल पाते थे, लेकिन एलियोट से मिलने का मौका कम था। मेरे पास उसका २३ मई, १६४३ का एक पत्र है जिसे मैं यहाँ इसलिए उद्धृत कर रही हूँ, क्योंकि इसी प्रकार के पत्र अन्य परिवारों के पास आये होंगे। बहुत-से नवयुवकों की तरह वह भी यही समझता था कि कई बातें वह अपने बड़ों से ज्यादा अच्छी तरह जानता है।

प्रिय माँ,

तुम्हारे भेजे हुए मौजे मिले, ये बहुत ही अच्छे हैं और बिलकुल

ठीक साइज के हैं। टॉमी को बहुत-बहुत धन्यवाद देना और मेरी ओर से उसका चुम्बन करना।

मैं जानता हूँ कि तुम दुनिया के विभिन्न भागों में गये अपने बच्चों के लिए चिन्तित रहती हो। मेरे लिए चिन्ता न करो। मैं बहुत ही सुन्दर जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। कुछ दिनों पहले हमारे जहाज पर हमला हुआ लेकिन हम बच गये हालाँकि हवाई जहाज बरबाद कर दिया गया। पाँच मिनट बाद ही जब मैं दूसरे हवाई जहाज को लेकर इंगलैण्ड रवाना हुआ तो उसके पीछे का हिस्सा भी बेकार हो गया। खैर अगर मुझे कुछ हो जाय तो याद रखना कि इससे अच्छे अन्त की और कोई आशा नहीं रखता।

अब हम जर्मनों को पीटने लगे हैं और यह काम अगले डेढ़ साल में पूरा कर देंगे। इसके बाद हम जापानियों को पीट सकते हैं। हमारी हवाई फौज बहुत कमाल की है। सिर्फ एक बात की कमी है और वह यह कि हमारी अलग हवाई फौज नहीं है। मैं जानता हूँ कि पिताजी इस विचार को पसन्द नहीं करते लेकिन उनका सोचना गलत है। ब्रिटिश हवाई फौज और ब्रिटिश सेना अलग अलग होते हुए भी हमारी सम्मिलित सेना से उनमें कहीं अधिक पारस्परिक सहयोग है। भूमि-सेना की सहायता के कारण या यह कहना अधिक ठीक होगा कि इस सहायता के बावजूद भी जनरल स्पाट्ज बहुत कमाल का काम कर रहे हैं। वह सचमुच महान् सामरिक योग्यता रखने वाले जनरल हैं।

मेरा खयाल है, मैं बहुत दिनों तक घर न आ सकूँगा इसलिए पत्र लिखती रहना। मुझे तुम्हारे पत्र और उनमें दी हुई खबरें बहुत अच्छी लगती हैं।

तुम्हारा प्रिय पुत्र
एलियोट

और यह है फ्रेंकलिन जूनियर का पत्र :

जनयान यू० एस० एस०
'अलबर्ट एम० मूर'
२७ मई, १९४५.

प्यारी माँ,

समुद्र पर इस काम में लगे हुए आज हमारा ६९वाँ दिन है और मेरे नाविकों को थकान आने लगी है और मेरा खयाल है कि उनके 'नेता' को भी। पाँच घंटे की बाधा-रहित नींद के लिए मैं कुछ भी देने को तैयार हूँ। मशीनों के कल-पुरजे पूरी सफाई और पूरी देख-भाल न हो पाने के कारण बिगड़ते जा रहे हैं और मेरी चिन्ताएं और समस्याएं बढ़ती जा रही हैं; और खाद्य-समस्या भी बड़ी संकटमयी हो गई है (अंडे और गोश्त तो बिलकुल खतम हो चुका है)। अतः तुम समझ सकती हो कि इतने लम्बे अरसे तक एक विध्वंसक जलयान को समुद्र पर रखना खासा मुश्किल काम है। लेकिन इस बात की अच्छी सम्भावना है कि दो-तीन हफ्तों में हम किसी अग्रिम अड्डे पर पहुँचकर आराम कर सकेंगे और अपने जहाज की मरम्मत करा सकेंगे अग्रिम अड्डे पर पहुँचने वाला हमारा अपने दस्ते का आखरी जहाज होगा और तब तक मुझे विश्वास है कि 'मूर' विध्वंसक जलयानों में समुद्र पर सबसे अधिक समय तक रहने का रिकार्ड कायम कर चुका होगा। कितनी समानता है उन प्राचीन जलयानों की गाथाओं से जो कि 'पचासी दिन में महाद्वीप के एक छोर तक' हो आते थे—केवल अन्तर इतना ही है कि उन्हें इन 'कटखनी बिल्लियों' (आत्मघात करने वाले जापानी वायुयानो को दिया हुआ हमारा नाम) की चिन्ता न करनी पड़ती थी। जो राष्ट्र मानव-जीवन को इतना सस्ता समझता है उसका मानव-जाति के लिए क्या मूल्य है—यह सोचना बड़ा दिलचस्प काम है।

बहुत-बहुत प्यार—

फ्रैंकलिन, जूनियर।

मैं सोचती हूँ कि प्रत्येक माता ने मेरी ही तरह अपने बच्चों को युद्ध के लिए विदा करते समय सोचा होगा। मेरे मन में यह भाव उठा था कि

शायद मैं अन्तिम विदा कर रही हूँ। यह सम्भवतः एक प्रकार की भूमिका थी कि अगर आपके बच्चे मारे गए और फिर कभी न लौट पाए तो आपको कैसा अनुभव होगा।

१९४३ का मई का महीना व्यस्तता में बीता। बोलिविया के प्रेसीडेण्ट तथा उनके परराष्ट्र-मंत्री दो विभिन्न अवसरों पर ह्वाइट-हाउस में ठहरे। जैकोस्लोवाकिया के प्रेसीडेण्ट बेनस और प्रधान मंत्री मैकन्जी किंग दोनों ने हमारे साथ एक रात बिताई और बाद में लाइबेरिया के प्रेसीडेण्ट तथा निर्वाचित प्रेसीडेण्ट हमारे यहाँ आये।

जुलाई के महीने में एक दिन सुबह-सवेरे मुझे अचानक टेलीफोन पर बुलाया गया और बड़ी सावधानी के साथ मुझे बताया गया कि एक लड़ाई में फ्रेंकलिन जूनियर के जहाज पर बम गिराये गए है। यह भी कहा गया कि खयाल किया जाता है कि वह जहाज सही-सलामत पालेरमों पहुँच रहा है। इससे अधिक और कुछ न बताया गया। मैंने अपने पति के कमरे में जाकर उनसे पूछा कि क्या उन्हें इस बारे में मुझसे कुछ ज्यादा खबर है। उन्होंने कहा कि उन्हें भी सिर्फ उतनी ही बात बताई गई थी और कि वह दिन मे इस बारे में पता लगाने की कोशिश करेंगे। बहुत काफी देर बाद मुझे पूरी खबर मालूम हुई। बमबाजी के बाद जहाज को पालेरमो ले जाया गया, लेकिन वहाँ भी उस पर बीच-बीच में गोलियों की बौछार हो रही थी। एक दूसरे जहाज से इस जहाज को बाँध दिया गया और दोनों जहाजो के नाविक जख्मी हो चुके थे। फ्रेंकलिन जूनियर पर घायल नाविक को अपने ऊपर लादकर दूसरे जहाज के डॉक्टर तक ले जाने में सफल हुआ। उस समय उसने नही देखा था कि खुद उसके कन्धे पर चोट लग चुकी है लेकिन आज भी उसके लगी हुई गोली के टुकड़े उसे उस समय की याद दिला देते है।

कई हफ्तों बाद उसने मुझे उस युवक की बाबत बताया जिसने उसे बचाया था, लेकिन जो कि अपनी टाँग खो चुका था। वह युवक उन दिनों बैथेसडा नाविक अस्पताल में था। हमने उसे एक दिन खाने पर अपने यहाँ बुलाया हमने उसे बहुत-ही भला और बहादुर युवक पाया।

बारह

मुझे यह याद नहीं कि कब मेरे पति ने पहले-पहल मुझे यह सलाह दी कि मुझे सद्भावना के प्रचारार्थ प्रशान्त महासागर के क्षेत्र की यात्रा करनी चाहिए, हालाँकि मुझे यह याद है कि इस सलाह का एक कारण यह था कि वह महसूस करते थे कि सुदूर-स्थित आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड बाहर से आने वाले अतिथियों के मामले में उपेक्षित रहे हैं। यह दोनों देश युद्ध के क्षेत्र में थे और शत्रु द्वारा इन पर आक्रमण किया जा सकता था, अतः इनदेशों की जनता को सतत प्रयत्न और निरन्तर चिन्ता में रहना पड़ रहा था। हम यहाँ बहुत बड़ी मात्रा में अपने सैनिक भेज चुके थे—इस कारण उन लोगों पर और जोर पड़ रहा था जिनके अपने आदमी ज्यादातर अफ्रीका और इटली मे लड़ रहे थे। मेरी यात्रा का दूसरा कारण था कि न्यूजीलैण्ड और आस्ट्रेलिया की स्त्रियों ने मुझे लिखा था कि चूँकि मैंने ग्रेट ब्रिटेन की स्त्रियों का कार्य देख रखा है इसलिए शायद मै इन सुदूर स्थित देशों की स्त्रियों का कार्य देखना भी पसन्द करूँ।

मैंने तुरन्त ही माँग पेश की कि मुझे ग्वाडलकेनाल और अन्य द्वीपों पर स्थित अपने सैनिकों को देखने की अनुमति दी जाय। मैं पश्चिमी तट के अस्पतालों को काफी देख चुकी थी, जिनमें युद्ध के आरम्भ मे जख्मी हुए सैनिक ग्वाडलकेनाल से और प्रथम नाविक आक्रमण दल (जिसमे जिमी

काम करता था) से लौटे थे; और मैंने अपने पति से साफ-साफ कहा कि प्रशान्त महासागर क्षेत्र में जाकर उन स्थानो में न जाना मेरे लिए कठिन होगा जहाँ कि हमारे सैनिक जख्मी हुए थे या कि उन्होने अपना स्वास्थ्य खोया था। अन्त में मेरे पति ने मेरी बात स्वीकार कर ली और उन्होंने मुझे कमारिंडग जनरलों और एडमिरल हैलसी के नाम पत्र दिये जिनमें लिखा था कि "यदि मेरे आने से युद्ध-कार्य में बाधा न पहुँचे तो मेरे ग्वाडल केनाल जाने की उनकी ओर से अनुमति है।"

कर्नल होडसन ने बाद में मुझे बताया, (जिन्होने मेरे साथ संयुक्त राष्ट्र-संगठन में काम किया है, लेकिन जो कि उस समय मेरी आस्ट्रेलिया की यात्रा का प्रबन्ध कर रहे थे,) कि फ्रैंकलिन ने आस्ट्रेलियन प्रधान मन्त्री तथा एडमिरल हैलसी से कहा था कि चाहे फ्रैंकलिन कुछ भी लिखें या कहें, मुझे ग्वाडलकेनाल जाने की आज्ञा नही मिलनी चाहिए जो कि उनके खयाल में खतरे से खाली जगह न थी।

मुझे यह नही मालूम कि इन सज्जनों ने दो परस्परविरोधी सन्देश पाकर क्या सोचा होगा, लेकिन मैंने अपने पत्र इन्हें दिखाये।

फ्रैंकलिन १७ तारीख को क्यूबेक के सम्मेलन में भाग लेने जा रहे थे और उसी दिन मैं सानफ्रेंसिसको के लिए रवाना हो रही थी लेकिन हम दोनों ने कुछ समय साथ-साथ हाइड-पार्क मे बिताया। यह तय हो चुका था कि मेरी यात्रा गुप्त रखी जायगी अतः मैं हमेशा की तरह अपने दैनिक कार्यों में लगी रही। प्रधान मन्त्री चर्चिल, जो कि उन दिनों हमारे यहाँ ठहरे हुए थे, अब भी कई बार कहते हैं कि जब मैंने एक रात खाना खाते वक्त उनसे साधारण तरीके से कहा कि अगले दिन मैं दक्षिण-पश्चिमी प्रशांत महासागर की यात्रा करने वाली हूँ तो उन्हें कितना आश्चर्य हुआ। वह अचम्भे में पड़ गए और उन्होने पूछा: "आपने अपनी यात्रा का क्या प्रबन्ध किया?" मैंने कहा कि सारी योजना बन चुकी है और कार्यक्रमानुसार हमारा काम भी हुआ।

जैसे ही मेरी यात्रा निश्चित हो चुकी, मैं अमरीकन रेडक्रास के प्रधान

नॉरमैन डेविस से मिलन गई और और मैंने उनसे पूछा कि क्या रेडक्रास के अड्डों और कठिन स्थानों का मेरे द्वारा निरीक्षण किये जाने से उन्हें कुछ सहायता मिल सकेगी। मैं इस तरह से यह दिखाना चाहती थी कि मैं एक महत् कार्य में लगी हुई हूँ न कि फिजूल ही इधर-उधर दौड़कर परेशानी पैदा कर रही हूँ। उन्होंने बड़ी तत्परता के साथ कहा कि मैं बहुत ही लाभ-दायक सिद्ध हो सकती हूँ क्योंकि वह रेडक्रास-कार्य का निरीक्षण करने किसी-न-किसी को भेजने ही वाले थे। जिस-जिस इलाके में मैं गई मैंने बड़ी सतर्कता से दिल लगाकर रेड्क्रास के हरेक कार्य का निरीक्षण किया।

मैं एक व्यावसायिक वायुयान में सानफ्रांसिस्को पहुँची और हावाई के लिए रवाना होने से पूर्व वहाँ एक दिन ठहरी।

प्रातःकाल मैंने हावाई की पहली झलक देखी। हावाई के बाद हमें उन द्वीपों में जाना था जो कि मेरे पति के अनुसार 'हमारे रसद के रास्तों की रक्षा करते हैं।' यहाँ हमारे सैनिकों को निरन्तर पहरे पर तैनात रहना पड़ता था लेकिन चूँकि यहाँ कभी कुछ नहीं दिखाई दिया अतः सैनिकों के लिए अपने काम में दिलचस्पी बनाये रखना कठिन था।

खतरे से खाली काम युवक सैनिकों को पसन्द नहीं आता। खाली बैठे रहने से ऐसा मालूम होता था कि सैनिकों पर बहुत जोर पड़ रहा है। डॉक्टरों का काम बहुत अच्छा था। वे पूरी तरह शारीरिक निरीक्षण करके शारीरिक दोषों को दूर करने का पूरा प्रयत्न करते थे और रेडक्रास के कार्य-कर्ता आमोद-प्रमोद के नये साधन निकालने की कोशिश में लगे हुए थे लेकिन फिर भी यह अस्वाभाविक जीवन था। इस अस्वाभाविक जीवन का पहला प्रमाण मुझे क्रिसमस द्वीप पर मिला, जहाँ कि सबसे पहले हम ठहरे थे। युवक लैफ्टीनेण्ट कर्नल ने मेरी ओर देखकर कहा : "आप पहली गोरी स्त्री हैं जिसे कि मैंने दस महीनों में देखा है।"

इस यात्रा में बार-बार मैंने चाहा कि काश किसी जादू से मैं इन लोगों की माँ या प्रेयसी या पत्नी या बहन बन जाऊँ जिसे कि यह लोग देखना

चाहते थे। अपने-आपको यह समझाना एक अलग बात है कि तुम एक प्रतीक हो और तुम्हें देखकर इन लोगों को सन्तोष प्राप्त होगा कि इनके प्रधान सेनानायक को इन लोगों में इतनी दिलचस्पी है कि उन्होंने अपनी पत्नी के हाथों इन्हें सन्देश भेजा है लेकिन यह भली भाँति जानते हुए कि सैनिकों को जिस चीज़ की ज़रूरत है और तुम उसे देने में असमर्थ हो फिर भी अच्छा महसूस करना बिलकुल दूसरी बात है।

क्रिसमस द्वीप पर खटमलों से मेरा पहली बार सामना हुआ। जिस युवक अफ़सर ने मुझे अपनी रहने की जगह दी थी उससे मैं यह पूछना भूल गई कि इस द्वीप पर किन जानवरों से सावधान रहना चाहिए। जब रात को खाने के बाद मैं अपने कमरे में पहुँची और मैंने बत्ती जलाई तो देखा कि सारा फ़र्श लाल खटमलों से भरा हुआ था। मैं चीख पड़ी और प्रायः स्वयं को मैंने अपमानित कर दिया था, लेकिन फिर यह सोचकर कि सारे द्वीप में मैं अकेली औरत हूँ और मेरी चीख से लोग घबरा जायंगे, मैंने फ़र्श पर पैर पटकना शुरू किया और वे छोटे-छोटे खटमल दरारों में से होकर फ़र्श के अन्दर घुस गए।

मैंने उस द्वीप पर और अन्य द्वीपों पर सैनिकों द्वारा किये हुए हर कार्य को देखा। शुरू से ही मैंने अपने लड़कों की सलाह मानी, क्योंकि आखिर वे भी अफ़सर थे। उन्होंने कहा था : "माँ, हमेशा अफ़सरों के साथ खाना मत खाना। एक बार छोटे अफ़सरों के साथ खाना और उन्हीं को अपने साथ लेकर मोटर में बाहर जाना और एक बार सैनिकों के साथ नाश्ता करना।" आखिरी सलाह पूरी करने के लिए सुबह छः बजे से पहले सैनिकों के बीच नाश्ता करने जाना ज़रूरी था। जब-जब मैं ऐसा कर सकी मुझे उनसे बातचीत करके लाभ ही हुआ। शुरू-शुरू में लज्जा-शरम के कारण बातचीत न खुल पाती थी लेकिन एक बार बात आरम्भ होने के बाद मुझे संयुक्त राष्ट्र अमरीका के बहुत-से नागरिकों के जीवन को निकट से देखने को अवसर प्राप्त हुआ।

प्रायः सभी द्वीपों पर जिन्दगी का एक खास ढर्रा बन चुका था। हर रात सिनेमा होते और यहाँ तक कि जब उष्ण कटिबन्धों में बरसात की झड़ी

लगी होती और अगर सिनेमा की मशीन ढकी होती तो लोग अपने-आपको बरसाती कोटों से ढककर सिनेमा देखते रहते थे। आमोद-प्रमोद के अन्य साधन अधिकतर विशेष विभाग और रेडक्रास के लोगो की सूझ पर निर्भर थे और जब मैं घर लौटी तो अपने साथ सिनेमा की मशीनें आदि की माँग लेकर लौटी थी। प्रशान्त महासागर में जहाजों द्वारा सामान पहुँचाने में हमेशा मुश्किल होती थी; और जब रेडक्रास या किसी दूसरी संस्था पर अयोग्यता का अभियोग लगाया जाता तो उनका उत्तर होता कि सैनिक अधिकारियो द्वारा उनके सामान के लिए जहाजों पर पर्याप्त स्थान नहीं दिया जाता।

सानफ्रांसिसको से चलते समय मैं जानती थी कि कहीं रास्ते मे मुझे अपनी बाँह जकड़ जाने का इलाज कराना होगा। पहले सब इलाज मैंने इतनी आसानी से करवा लिये थे कि मैं बोरा बोरा के नाविक-अस्पताल में इस बार भी इलाज कराने के बाद इस बारे मे सब भूल चुकी थी। लेकिन मेरी बाँह सूजने लगी और कई दिनों तक तकलीफ बनी रही। लेकिन चूँकि इस बारे में कुछ किया न जा सकता था, मैंने अपनी तकलीफ भूलने की भरसक कोशिश की, क्योंकि मेरा कार्यक्रम बन चुका था और मुझे उसके अनुसार आगे बढ़ना था। और इस कार्यक्रम के पूरा होने से पहले ही मैं सत्रह द्वीपों का निरीक्षण कर चुकी थी। इसके अलावा मैंने न्यूजीलैण्ड की राजधानी तथा अन्य स्थान देखे, आस्ट्रेलिया के पूर्वी तट के बड़े नगर और उत्तरी भाग के कई कैम्प और अस्पताल भी देखे।

नोमिआ पहुँचकर मैंने एडमिरल हैलसी को अपने पति के दिये हुए पत्र पेश किये। एडमिरल ने मुझे बताया कि उन्होंने मेरे आने की खबर पाकर मेरे लिए कितना ज्यादा खतरा महसूस किया था। मुझे खुद अपने लिए बहुत खतरा था, लेकिन मैं पक्का इरादा कर चुकी थी कि अगर ग्वाडल-केनाल जाना सम्भव हो सके तो मैं वहाँ अवश्य जाऊँगी। एडमिरल ने इस विषय में अपने निर्णय का मुझे जरा भी पता न होने दिया और स्पष्ट शब्दों में कहा कि मुझे पहले न्यूजीलैण्ड और आस्ट्रेलिया जाना होगा और

मेरे लौटकर आने पर ही वह मेरे ग्वाडल केनाल जाने के बारे में तय करेंगे। मेरा खयाल है कि मेरे चलने से पहले उनके रुख में कुछ परिवर्तन हुआ क्योंकि शायद. अस्पतालों और जिन दूसरी जगहों में मैं गई थी वहाँ से अच्छी रिपोर्टें आ रही थी।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका में आर्थिक संकट के वर्षों में किये हुए मेरे दौरों से मुझे एक अनजाना लाभ हुआ जो कि मेरे इन अस्पतालों के दौरों में प्रत्यक्ष हुआ। अक्सर जब कभी मैं किसी बहुत ही बीमार युवक से बात करती होती तो वह कहता कि पिछली वार उसने मुझे अपने स्कूल के उत्सव या किसी और अवसर पर देखा था; और अगर मुझे उस युवक के शहर के बारे में कुछ याद आ जाता तो खुशी से उसका चेहरा चमक उठता और मैं समझती कि दिन-प्रतिदिन मेरा लगातार चलते-फिरते रहना सफल हुआ।

न्यूज़ीलैण्ड मे मैंने माओरी जाति का निवास-स्थान रोटोरुआ देखा। माओ-रियों ने हमारे सैनिकों का बहुत सत्कार किया था। मुझे घुमाने-फिराने वाली रांगी नामक स्त्री अति चतुर और सम्माननीय थी—दर-असल वह बहुत ही कमाल की औरत थी। गरम पानी के झरनो और तालाबों का यह इलाका एक छोटा येलोस्टोन पार्क-जैसा लगता है। एक जगह तो गरम पानी के तालाबों पर खाना पकाया जाता है, खाने के बर्तन पानी पर रख दिए जाते हैं। मेरा यह पूछना मूर्खता थी कि क्या ऐसा करना गलत नही है और कि क्या बच्चे दूसरों के बर्तनों से खाना नहीं चुरा लेते। गर्व के साथ रांगी ने उत्तर दिया कि उसके यहाँ के बच्चों को सिखाया जाता है कि चोरी नहीं करनी चाहिए। यह एक ऐसी झिड़की थी जो कि मुझे मिलनी चाहिए थी। मेरी यह कामना थी कि काश हमारे बच्चों की शिक्षा भी सर्वदा इतनी सफल हो सके, क्योकि जहाँ तक मोआरियों का सम्बन्ध है सफलता उनके लिए एक पूर्व-निर्धारित फल है जो कि उन्हें अवश्य मिलना ही चाहिए।

जब मैं आस्ट्रेलिया पहुँची तो कर्नल होडसन, लैफ्टीनेण्ट जनरल आर० एल० आइचल वर्गर और उनके सहकारी ब्रिगेडियर जनरल सी० ई० बायर्स मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे और उन्होंने कहा कि मेरे दौरे की इस वक्त

ज़रूरत थी। कुछ समय के लिए केनबेरा में मैं गवर्नर जनरल और उनकी पत्नी लॉर्ड और लेडी गॉरी के साथ ठहरी जो कि सहृदयता की साक्षात् प्रतिमा थे। श्रोताओं की बड़ी संख्याओं से मैंने बातें की, कई अस्पताल, नर्सों के लिए आरामगाह और हमारे सैनिकों के लिए आमोद-प्रमोद के केन्द्रों का मैंने निरीक्षण किया। एक के बाद एक सैनिक ने मुझे बताया कि आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड के घरों में उन्होंने कितना सत्कार पाया है।

हमारी बहुत-सी नर्सें ऐसे अस्पतालों में काम कर रही थीं कि जहाँ कई बार पानी मिलना प्रायः असम्भव हो जाता था; हरेक रोगी को सिर्फ एक प्याला जल हाथ-मुँह धोने और पीने को मिल पाता था। कई बार कीचड़ इतनी ज्यादा हो जाती थी कि अमरीकन फौजी जूते पहनकर भी चलना मुश्किल हो जाता था। लेकिन इस बारे मे मैंने कभी किसी को शिकायत करते नहीं सुना।

उत्तरी आस्ट्रेलिया मे मैंने जंगल के युद्ध की शिक्षा पाते हुए सैनिकों को देखा। मुझे इस प्रकार के युद्ध की शिक्षा में खास तौर पर इसलिए दिलचस्पी थी, क्योंकि यहाँ आने से पहले मुझे एक स्त्री का रोषपूर्ण पत्र मिला था, जिसका पुत्र लुइसाना की दलदलों में किसी खास प्रकार की सैनिक शिक्षा पा रहा था, जो कि उसकी माँ को अमानुषिक और अनावश्यक प्रतीत होती थी। आस्ट्रेलिया के जंगलों में सैनिको को स्थिर रहने की, स्वयं को छिपाने की और शत्रु को ढूँढ़ने आदि की शिक्षा दी जा रही थी। छल से सैनिक को फन्दे में फांसने की कोशिश की जाती और यदि सैनिक प्राप्त आदेशों के अनुसार पूरी तरह सतर्क न रहता तो वह फन्दे मे फँस जाता और उसे 'मरा हुआ' करार दे दिया जाता था। काश उस माँ के पत्र का उत्तर देने से पूर्व मैं यह सब देख चुकी होती तो मैं उसे समझा सकती कि लुइसाना की दलदलों में उस लड़के की शिक्षा उसके अपने भविष्य के बचाव के लिए है।

यह बात सुनी जा चुकी है—और यह सच है—कि अमरीका लौटने के बाद मैंने वाशिंगटन में एक लड़की को टेलीफोन पर बताया कि मैं कौन

हूँ और मैं उसके लिए उसके प्रेमी के पास से सन्देश लाई हूँ। उसने कहा—"मजाक मत करो। तुम किसे बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रही हो?" और जब तक मैंने उसे पत्र द्वारा सूचित नहीं किया उसे मेरी बात पर विश्वास न आया।

आस्ट्रेलिया में अन्तिम रात्रि को मैंने श्रीमती डगलस मैकार्थर के साथ भोजन किया लेकिन मैं जनरल मैकार्थर से न मिल पाई; वह उस समय न्यूगिनी में थे और मैं जानती थी कि खतरे के कारण मुझे वहाँ न जाने दिया जायगा।

नोमिआ लौट आने के बाद भी मुझे यह पता न चला कि मुझे ग्वाडल-केनाल जाने की इजाज़त मिलेगी या घर वापस लौटना होगा। एडमिरल हैलसी द्वारा बनाये गए अपने दैनिक कार्यक्रम के अनुसार मैं सारे दिन काम करती रही और जब मेरे लिए नोमिआ की अन्तिम संध्या हुई तो एडमिरल हैलसी ने शान्ति के साथ मुझे बताया कि कल सुबह आठ बजे मुझे इफेट जाने के लिए तैयार रहना होगा। मुझे यह भी बताया गया कि इस द्वीप का काम मुझे न लेना होगा, क्योंकि जापानियों ने कभी इस पर बम न बरसाये थे और हमारे सबसे बड़े कुछ अस्पताल यहीं थे। एडमिरल हैलसी का खयाल था कि जापानियों को यह नहीं मालूम था कि इस द्वीप पर हम थे। इफेट से एसपिरूटू सेण्टो और एसपिरूटू सेण्टो से ग्वाडल केनाल मुझे जाना था। आप विश्वास रखिये दूसरे दिन सुबह नियत समय पर मैं जाने के लिए तैयार थी।

अगले कुछ दिनों के लिए चूँकि मैं सबसे अधिक व्यस्त रही और एक तरह से मेरी सारी यात्रा के यह सबसे अच्छे दिन थे अतः उन दिनों की अपनी डायरी को यहाँ उद्धृत करना अनुचित न होगा :

सुबह छः बजे हम ग्वाडल केनाल पहुँचे, हवाई अड्डे पर ही कमाण्डिंग अफसर के साथ हमने नाश्ता किया।

मुझे लेने सेना के अफसर पहुँचे और जब मैं उनके साथ मोटर में जा रही थी तो हवाई अड्डे पर काम करने वाले सैनिक लारियों में भरकर आ

रहे थे। मैंने और कॉलेटा रयान ने ओट से झुककर उनकी ओर हाथ हिलाये। आरम्भ में सैनिकों के चेहरों पर आश्चर्य अंकित दिखाई दिया और तब एक युवक बड़े जोर से बोल उठा, "यह देखो, यह तो एलनर है।" मैं नहीं कह सकती कि इसे बधाई समझा जाना चाहिए था या मुझे शर्मिन्दा होना चाहिए था, लेकिन वे सैनिक स्त्रियों को देखकर इतने प्रसन्न थे कि हमें हँसते हुए हाथ हिलाते रहना पड़ा। मेरे प्रति इस प्रकार के व्यवहार से कमाण्डिंग अफसर को बहुत रोष हुआ अतः मैंने यह दिखाने की कोशिश की कि उक्त शब्द मेरे सम्मान मे कहे गए थे।

इस द्वीप के हमारे कब्जे मे आ जाने के बाद से किये गए सब सुधारों का मैंने निरीक्षण किया। खयाल किया जाता है कि इस द्वीप की दूसरी ओर अभी भी कुछ जापानी हैं और हवाई हमले भी होते रहते हैं।

ग्वाडल केनाल में देखी हुई एक चीज मैं कभी न भूलूँगी—उस जगह का कब्रिस्तान। ग्वाडल केनाल-निवासियो ने वहाँ एक छोटा-सा गिरजाघर बनाकर सैनिकों को दे रखा था। गिरजे को तरह-तरह के चित्रों से सजा रखा था; ये चित्र उनके लिए एक विशेष अर्थ रखते थे जैसे कि तरह-तरह की मछलियों के चित्र, जो कि दीर्घ जीवन या अनन्त जीवन आदि के द्योतक थे। कब्रों के बीच से गुजरते हुए यह सोचकर हृदय बहुत प्रभावित होता था कि धर्म और पृष्ठभूमि की विभिन्नता के बावजूद भी इन मृत युवकों में कितनी एकता थी। कब्र पर युवक सैनिक का बेग या टोप टँका होता, जिस पर किसी मित्र द्वारा उसके धर्म का चिह्न अंकित दिखाई देता। दिल से निकले हुए शब्द कब्रों पर खुदे होते; जैसे कि "यह बहुत का कमाल आदमी था" या "यह हरेक का सबसे अच्छा मित्र था।"

कब्रिस्तान की देख-भाल बहुत अच्छी तरह से होती है; घास पर जगह-जगह गड़े हुए झण्डे फहराते रहते हैं। गिरजे के पादरी ने बताया कि वह कब्रों के चित्र संयुक्त राष्ट्र अमरीका के शोकाकुल परिवारों को भेज देता था।

अस्पतालों और कब्रों के चित्र ने मेरे दिल और दिमाग पर इतना असर

डाला, यहाँ तक कि हृष्ट-पुष्ट युवकों से बात करते समय भी वह चित्र मेरी आँखो के सामने आ जाता है।

ग्वाडल केनाल और अन्य स्थानो को देखकर मैने अपने हृदय मे ईश्वर से प्रार्थना की कि मानवता का विकास हो ताकि भविष्य में पारस्परिक झगड़ो को सुलझाने के लिए हिंसा का प्रयोग न किया जाय।

हवाई को लौटते समय हम फिर क्रिसमस द्वीप के रास्ते से आये, क्योंकि जिस रास्ते से हमने आना तय किया था वहाँ उस समय लड़ाई छिड़ी हुई थी और मेरा उस रास्ते से निकलना ठीक न समझा गया। क्रिसमस द्वीप में मेरे पास अवकाश कम था और मैं सिर्फ एक युवक से मिल सकी जिसके बारे मे डॉक्टर बहुत चिन्तित था। मैंने उससे वायदा कराया कि अगर वह स्वयं अच्छे होने का प्रयत्न करेगा तो मैं अमरीका लौटकर उसकी माँ से मिलने की कोशिश करूँगी। मैं उसकी माँ से मिली और सौभाग्यवश वह भी अच्छा हो गया और अमरीका लौटने पर वह मुझसे मिलने आया।

अन्त में घर लौटने का समय आया। हमारा हवाई जहाज जब कैलीफोर्निया के हवाई अड्डे पर उतरा तो सब दरवाजे-खिड़कियां बन्द करके रोग के कीटाणु मारने के लिए हमारे ऊपर दवाइयाँ छिड़की गई।

मैं निम्न लिखित स्थानों की यात्रा करके लौटी थी : हवाई, क्रिसमस द्वीप पेनरिन द्वीप, बोरा-बोरा, आइटूटाकी, टुटीला, सामोआ, फिजी, न्यू कैलेडीनिया; न्यूजीलैण्ड में ऑकलैण्ड, वेलिंगटन और रोटोरुआ; ऑस्ट्रेलिया मे सिडनी, केनेबैरा, मेलबोर्न, रॉकहैम्पटन, केयर्नस् और ब्रिसबेन; इफेट, एसपिरूटू सेण्टो, ग्वाडल केनाल और वालिस।

युद्ध का दूसरा दौरा समाप्त हुआ।

उस पतझड़ में, ९ नवम्बर १९४३ को व्हाइट-हाउस के पूर्वी कमरे में एक उत्सव मनाया गया जिससे मेरे पति ने बहुत गौरव महसूस किया। वह प्रमुख अवसरों के आयोजन में कुछ नाटकीयता का होना पसन्द करते थे और जब यू० एन० आर० आर० ए० के समझौते पर ४४ राष्ट्र हस्ताक्षर करने वाले थे तो उन्होंने इस अवसर को शान-शौकत और आडम्बर से परिपूर्ण

बनाया। मुझे विशेषतः यह देखकर प्रसन्नता थी कि एक महान् संस्था का जन्म हो रहा है जो कि अपना अन्त होने से पूर्व असंख्य लोगों की सहायता करेगी। इस संस्था के प्रथम प्रशासक न्यूयार्क के भूतपूर्व गवर्नर हरवर्ट एच॰ लेहमैन थे जिनकी योग्यता पर फ्रेंकलिन को पूरा विश्वास था, क्योंकि इनके साथ वह कई वर्षों तक काम कर चुके थे। श्री लेहमैन ने जिस प्रकार इस संस्था का संगठन किया और उसका कार्य चलाया उससे उनकी संगठन-शक्ति और अटूट धैर्य का प्रमाण मिलता था।

११ नवम्बर को फ्रेंकलिन युद्ध के अपने दूसरे दौरे पर चल दिए। काहिरा में उन्हें जनरलिस्सिमो और मैडम चांग से भेंट करनी थी। यह जनरलिस्सिमो से उनकी पहली मुलाकात होने वाली थी, जिसमे कि मैडम चांग दुभाषिये का काम करने वाली थीं। काहिरा में मिस्टर चर्चिल फ्रेंकलिन से मिले और इनकी वार्ता सफल रही।

चूँकि उस समय सोवियत रूस का जापान के साथ युद्ध नहीं हो रहा था अतः मार्शल स्तालिन चीनी सरकार के प्रधान से मिलने के हक में न थे। और जब काहिरा की वार्ता पूरी हुई तो मिस्टर चर्चिल और फ्रेंकलिन मार्शल स्तालिन से मिलने तेहरान पहुँचे। यह मेरे पति और मार्शल स्तालिन के बीच पहली मुलाकात थी। फ्रेंकलिन इस दृढ़ विश्वास के साथ मिलने गये थे कि अगर संभव हो तो पारस्परिक सद्भावना को बढ़ाया जायगा। जब इस यात्रा से पूर्व वह इसके बारे में बातें करते थे तो उन्हे मार्शल स्तालिन से मिलने के विचार ने उलझन में डाल रखा था। यह जानते हुए कि सोवियत रूस के सरकारी प्रतिनिधि हमेशा कितने सशंक रहते हैं वह इस मुलाकात को एक चुनौती समझते थे। यह जानकर कि मार्शल स्तालिन पर स्वयं अपनी सेनाओं के नेतृत्व का भार और युद्ध की सामरिक चालो का उत्तरदायित्व है उनके तेहरान से अधिक दूर न आने के विचार को फ्रेंकलिन ने अनमने मन से स्वीकार किया। और हालाँकि इस बारे में उन्होने कुछ न कहा लेकिन मैं जानती थी कि वह मार्शल स्तालिन का विश्वास प्राप्त करने के लिए और यदि संभव हुआ तो दोनों सरकारों के बीच सुखद सम्बन्ध स्थापित करने का भरसक प्रयत्न करेंगे।

बाद में मेरे पति ने मुझे बताया कि उन्होने महसूस किया कि जब वे पहली बार मिले तो मार्शल स्तालिन की ओर से अविश्वास की भावना बहुत दिखाई देती थी और जब मुलाकात के बाद वह लौटे तो कह न सकते थे कि इस अविश्वास को किसी हद तक हटाने में वह सफल हुए हैं या नहीं। उन्होंने यह भी कहा कि वह अपने दिये हुए वचनो का अक्षरशः पालन करना चाहते थे। उन्हें आशा थी कि ग्रेट ब्रिटेन भी अपने वचनों का पालन करने में समर्थ होगा, और उन्होने कहा कि इस दिशा मे वह ग्रेट ब्रिटेन को जितनी मदद दे सकेंगे जरूर देंगे। उनका विश्वास था कि अपने वचनो का पालन करके हम उस महान् नेता के हृदय में विश्वास जमा सकेंगे जो युद्ध में हमारी ओर से भाग लेते हुए भी हम पर पूरी तरह विश्वास नहीं करता। सोवियत रूस को उस सहायता की आवश्यकता थी जो कि हम अपनी महान् उत्पादन-शक्ति द्वारा उसे दे सकते थे, जब कि हमें केवल इसी बात से संतोष था कि रूस के युद्ध में इतने अधिक जर्मन फौजी दस्ते लगे हुए हैं।

मेरे पति को स्तालिन के साथ प्रथम सम्पर्क से प्रसन्नता प्राप्त हुई। ऐसे नये लोगों से मिलना हमेशा उनके लिए चुनौती था जिन्हे कि अपने दृष्टिकोण से उन्हें सहमत करना होता था, और यह मुठभेड़ तो विशेषतः महत्त्वपूर्ण थी। घर लौटकर वह स्तालिन का वर्णन बड़ी सावधानी से करते हुए कहते थे कि वह नाटा, भारी आदमी शक्तिशाली है और वह जितना बड़ा दिखाई देता है उससे दरअसल अधिक बड़ा है।

इन वार्ताओं के बाद रूसी नेताओं द्वारा दी गई आवश्यक खर्चीली दावतों का वर्णन फ्रेंकलिन हमेशा किया करते थे; खाने और शराब की बहुतायत ने उन्हें विशेषतः प्रभावित किया।

फ्रेंकलिन १७ दिसम्बर को एक नई ताजगी, नई आकांक्षाएं लेकर वाशिंगटन लौटे और उनका स्वास्थ्य भी पहले से अच्छा दिखाई दे रहा था। प्रत्येक यात्रा का उन पर ऐसा ही असर होता था, क्योंकि वह हर देखी हुई चीज में बेहद दिलचस्पी लेते थे।

तेरह

१९४३-४४ की सारी सर्दियो में पति को बीच-बीच में हलका-सा बुखार रहने लगा था। हमने सोचा या तो उन्होंने रास्ते में कहीं बीमारी के कीड़े पाल लिये थे या उन्हें शायद हाइड-पार्क की गायों का बुखार लग गया था। कुछ भी हो, यह विचार बहुत भयंकर था लेकिन ऐसी स्थिति में मेरा खयाल है कि सब सम्भावनाओं पर विचार करना जरूरी हो जाता है जब कि कोई यह नहीं बता पाता है कि विशेष प्रकार के लक्षण बार-बार क्यों दिखाई देते हैं। फ्रैंकलिन की दशा बड़ी दयनीय प्रतीत होती थी और अगर यह खयाल किया जाय कि कितने वर्षों से वह कार्य के भार से दबे हुए थे तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं। आखिर उन्होंने ९ अप्रैल को तय किया कि वह जार्जटाउन, दक्षिणी केरोलीना में बर्नार्ड बारुच के होबर्को स्थित बगीचे में रहेंगे। श्री बारुच ने फ्रैंकलिन के साथ जाने वाले सब लोगों के ठहरने का प्रबन्ध कर रखा था।

होबर्को फ्रैंकलिन के लिए उपयुक्त स्थान था क्योंकि उन्हें देहात और देहाती जीवन से प्रेम था। एक दिन मैं और अन्ना हवाई जहाज में बैठकर दिन का खाना खाने होबर्को पहुँचे, हमारे साथ आस्ट्रेलिया के प्रधान मन्त्री तथा उनकी पत्नी भी थीं। मैं इस विचार के साथ लौटी कि फ्रैंकलिन का होबर्को जाकर ठहरना उनके लिए सबसे अच्छी चीज थी। श्री बारुच द्वारा

फ्रैंकलिन के आराम के लिए किये गए इस प्रबन्ध के कारण मैं उनकी हमेशा आभारी रहूँगी।

६ जून १९४४ का दिन चिरस्मरणीय रहेगा। यह तो हमें बहुत पहले से मालूम था कि हमले की तैयारियाँ की जा रही है लेकिन इस दिशा में किये गए सब काम पूर्णतया गुप्त रखे गए थे। और जब समय आया फ्रैंकलिन ने रेडियो पर 'डी डे' का सन्देश दिया और उस समय हमारा दिल समुद्र के तट पर फैले हुए अपने सैनिको के साथ था। धीरे-धीरे खबरें आने लगी। हमारे दुःख और कई परिवारों की क्षति के बावजूद भी यह जानकर हमे बहुत राहत मिली कि हमारी सेनाएं शत्रु के इलाके मे उतर चुकी हैं। और यूरोप की मुक्ति का युद्ध वास्तव में आरम्भ हो चुका है।

१९४४ के पतझड़ में एक दूसरा चुनाव होने वाला था। मैं बिना अपने पति से पूछे ही यह जानती थी कि जब तक युद्ध चल रहा है। और अगर उनका स्वास्थ्य कुछ ठीक है तो यह निश्चित है कि वह अवश्य चुनाव मे फिर खड़े होंगे। कई डॉक्टरों को बुलाया गया और अच्छी तरह उनके शरीर की जाँच की गई। चूँकि इस खास मौके पर अपना काम किसी दूसरे को सौंपना बहुत कठिन था इसलिए यह तय किया गया कि यदि वह डॉक्टरो के आदेशो का पालन करना स्वीकार करें तो वह फिर अपना काम कर सकते हैं।

मेरा खयाल है कि हम सब जानते थे कि फ्रैंकलिन का स्वास्थ्य काफी खराब है, लेकिन हममे से किसी ने कभी भी इस बारे में कुछ नही कहा, क्योंकि हम महसूस करते थे कि अगर वह प्रेसीडेण्ट के पद पर रहना अपना कर्तव्य समझते हैं तो हमारे लिए सिर्फ उनके इस कर्तव्य-पालन में सहायता पहुँचाने के अलावा और दूसरा रास्ता नहीं है।

१५ जुलाई से १७ अगस्त तक फ्रैंकलिन प्रशांत महासागर के दौरे पर रहे। यूरोपीय इलाके में वह कई बार हो आए थे और अब वह प्रशांत महासागर के इलाके के अफसरों से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करके उनकी युद्ध की योजनाओं का निरीक्षण करना चाहते थे। फलतः हवाई मे एक सम्मेलन

की आयोजना की गई। हवाई से वह अलास्का और एलूशियन्स पहुँचे।

१० सितम्बर को हम सब क्यूबेक में होने वाले युद्ध-सम्मेलन में भाग लेने पहुँचे। श्रीमती चर्चिल अपने पति के साथ वहाँ पहुँचने वाली थीं और मेरे पति ने भी मुझे अपने साथ चलने के लिए कहा।

१८ तारीख को फ्रेंकलिन मिस्टर चर्चिल और उनकी पत्नी के साथ हाइड-पार्क लौट आए। हाइडपार्क में उन्हें आराम करने को बहुत कम समय मिला, क्योंकि १९४४ के चुनाव का तैयारियाँ शुरू होने वाली थी।

चुनाव की तैयारियों का उद्घाटन फ्रेंकलिन ने वाशिंगटन में टीमस्टर्स यूनियन के भोज मे प्रथम भाषण देकर किया।

इस भोज के उपरान्त चुनाव-कार्य आरम्भ हो गया, लेकिन मैं कई ऐसे कामों मे व्यस्त थी जो कि चुनाव से बिलकुल सम्बन्धित न थे। ह्वाइट-हाउस में ४ और ५ अक्टूबर को ग्रामीण शिक्षा-सम्बन्धी एक सम्मेलन हुआ।

अपने जन्म-दिवस के कुछ समय बाद ही मैं हमेशा की तरह रेडक्रास को अपना रक्त-दान करने गई। रेडक्रास के कार्यालय में काम करने वाली युवती को मुझे देखकर बहुत अकुलाहट हुई, क्योंकि मैं साठ वर्ष की हो चुकी थी और इस उम्र से ऊपर के व्यक्ति का रक्त स्वीकार नहीं किया जाता। मुझे कुछ क्षोभ हुआ, क्योंकि मैं यह समझने मे असमर्थ थी कि कुछ हफ्तों में ही मेरा रक्त कैसे बदल गया है; लेकिन मैं जानती थी कि आखिर कहीं-न-कहीं तो सीमा होनी ही चाहिए, अतः मुझे भान हुआ कि ११ अक्तूबर १९४४ को मैंने सचमुच वृद्धावस्था मे पदार्पण किया।

डॉक्टर मैकुइण्टायर को चुनाव-कार्य की बाबत चिन्ता थी, लेकिन मैं उन्हें पतझड़ के आरम्भ में ही बता चुकी थी कि मेरे पति जनता से अपने सम्पर्क से शक्ति प्राप्त करते हैं। जिस दिन हम लोग न्यूयार्क नगर पहुँचे मैंने महसूस किया कि मेरा सोचना ठीक था क्योंकि मैने अपने पति का स्वास्थ्य चुनाव कार्य आरम्भ होने से अब ज्यादा अच्छा पाया।

उस रात, २१ अक्तूबर को परराष्ट्र-नीति एसोसियेशन में मेरे पति ने भाषण दिया। बाद में मैंने लोगो को कहते सुना कि उस रात वह बहुत

अस्वस्थ दिखाई दे रहे थे लेकिन इसमे मुझे ताज्जुब नहीं हुआ क्योंकि मैं जानती थी कि वह बहुत थके हुए थे। चुनाव के लिए हम लोग हाउस-पार्क गये और जब चुनाव के नतीजे से यह मालूम होने लगा कि उनकी जीत निश्चित है तो हमेशा की तरह बरामदे मे जाकर उन्होने उन लोगों का स्वागत किया जो कि उन्हे बधाई देने आए थे।

थैंक्स-गिविंग-दिवस पर फ्रेंकलिन वार्म स्प्रिंग्स पहुँचे और करीब तीन हफ्ते तक वहीं रहे। जब कभी उनका वहाँ जाना सम्भव हुआ मुझे खुशी होती थी क्योंकि उन्हें रोगियों से, विशेषतः युवक रोगियों से मिलकर बहुत सन्तोष प्राप्त होता था। मेरा खयाल है कि उनके विचार में जो-कुछ वह अपने-जैसे पीड़ित व्यक्तियों के लिए कर पाए थे, वार्म स्प्रिंग्स उसी का प्रतीक था।

इस वर्ष फिर क्रिसमस का त्यौहार हमने हाइड-पार्क में मनाया। थोड़े दिनों बाद ही फ्रेंकलिन याल्टा की तैयारियाँ करने लगे। मुझे याद है कि इस काम में वह इतने व्यस्त थे कि क्रिसमस के उपहारों को उन्होंने जनवरी के महीने में जाकर खोला। वह अपने उपहारों को खोलने न देते थे और जब एक रात को, खाने के बाद उन्होने धीरे-धीरे अपने उपहार खोले तो उन्हें देखकर वह बहुत प्रसन्न हुए।

जनवरी के आरम्भ मे यह अच्छी तरह जानते हुए कि यह उनका अन्तिम प्रतिष्ठान-दिवस था और इस कारण भी कि शायद उन्हें यह आभास हो चुका था कि अब वह ज्यादा दिनों तक हम लोगों के बीच न रह पायंगे, उन्होने इस बात पर जोर दिया कि उनका प्रत्येक पौत्र तथा पौत्री २० तारीख के करीब कुछ दिनो के लिए ह्वाइट-हाउस में आकर रहे। मैं तीन से लेकर सोलह वर्ष की उम्र वाले तेरह पौत्र-पौत्रियों के साथ आने के विचार से कुछ अनमनी थी, क्योकि मुझे चेचक या खसरे का भय था। लेकिन उन्हें बुलाने के लिए मेरे पति का इतना आग्रह था कि मुझे राजी होना पड़ा।

प्रतिष्ठान-दिवस के बाद यह प्रत्यक्ष दिखाई देने लगा कि फ्रेंकलिन का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। लेकिन फिर भी वह याल्टा जाने के लिए आमादा

थे और जब वह किसी काम करने का फैसला कर लेते थे तो फिर मुश्किल से ही उस विचार को छोड़ते थे। इन यात्राओं से उन्हें प्रसन्नता होती थी, विशेषतः तब जब कि सारे रास्ते सामरिक जलयान द्वारा जाने का अवसर हो।

फ्रैंकलिन को इस बात की बहुत आशा थी कि इस मुलाकात में वह मार्शल स्तालिन और अपने बीच के व्यक्तिगत सम्बन्ध को मज़बूत बना सकेंगे। वह बार-बार कहा करते थे कि शान्ति-काल में जब कि युद्ध-काल से अधिक कठिन समस्याओं का सामना करना होगा तब इस पारस्परिक मैत्री का बहुत महत्व होगा। उन्होंने मुझे यह भी बताया कि कुछ अरबों से मिलकर फिलस्तीन समस्या को शान्तिपूर्वक सुलझाने का उनका इरादा है।

मेरा खयाल था कि इस यात्रा से फ्रैंकलिन को अवश्य लाभ पहुँचना चाहिए चूँकि उन्हें निश्चित ही अच्छे परिणामों की आशा थी, विशेषतः मार्शल स्तालिन से अच्छे सम्बन्ध कायम करने के बारे में। लेकिन रास्ते में जनरल वाटसन की तबियत बहुत खराब हो गई, जो कि इस यात्रा पर जाने के बहुत ही इच्छुक थे और मैं जानती थी कि इस बात ने मेरे पति को बहुत ही चिन्तित बनाया होगा। भूमध्य सागर पार करने से पूर्व ही जनरल वाटसन का देहान्त हो गया। इस यात्रा में हैरी हॉपकिन्स की तबियत भी बहुत खराब हो गई और वह रास्ते मे माराकेच में विश्राम के लिए उतर गए। ऐसा प्रतीत होता था कि उस जलयान पर काले बादल छाये हैं और मैं सचमुच बहुत ही चिन्तित हो गई। लेकिन जब फ्रैंकलिन जहाज़ से उतरे तो दुःखी होते हुए भी स्वस्थ थे और उन्होंने अपने चित को इतना प्रसन्न बना रखा था कि घर लौटकर वह मनोरंजक किस्से सुना सकें क्योंकि, किस्से सुनाने उन्हें हमेशा से पसन्द थे।

याल्टा के समझौते में संयुक्त राष्ट्र अमरीका द्वारा अपने हितों का 'आत्म-समर्पण' किये जाने के बारे में बहुत-कुछ कहा जा चुका है। एडवर्ड स्टैटिनियस की नई पुस्तक में इन अभियोगों का अधिकृत रूप से उत्तर दिया गया है और मुझे आशा है कि हरेक ऐसा व्यक्ति इस पुस्तक को पढ़ेगा जिसने कि एक क्षण के लिए भी यह सोचा हो कि फ्रैंकलिन के

विचारो मे सर्वदा सबसे प्रथम स्थान संयुक्त राष्ट्र अमरीका के हित के बारे मे नही रहता है। उनका यह विश्वास था कि हमारा हित अन्य देशों के हितो से इस तरह सम्बन्धित है कि उसे पृथक् करके नही देखा जा सकता, अतः उनका विश्वास था कि हमारे लिए अन्य देशो की मैत्री आवश्यक है। लेकिन वह सौदा तय करने मे चतुर थे और पोकर के अच्छे खिलाड़ी थे और उन्हे मध्यस्थ बनने की कला प्रिय थी। मेरा विश्वास है कि याल्टा-सम्मेलन में भी उन्हे इस बात से प्रोत्साहन मिला कि उन्हे अपने चातुर्य का अन्य व्यक्तियों की बुद्धि से मुकाबला करना था, चाहे कई मौको पर वह कितने ही थके हुए क्यो न होते थे।

फ्रेंकलिन द्वारा सोचे हुए समस्या के अंतिम हल के निमित्त याल्टा-सम्मेलन एक कदम था। वह जानते थे कि यह आखिरी कदम नही है। उन्हे मालूम था कि अभी कई और वार्ताएं और मुलाकातें करनी होगी। वह शांति-युग की कामना किया करते थे लेकिन वह अच्छी तरह जानते थे कि शांति को एक दिन मे प्राप्त नहीं किया जा सकता कि दिन-प्रति-दिन, वर्ष-प्रति-वर्ष शांति के निमित्त हमे सतत प्रयत्न करते रहना होगा।

यद्यपि याल्टा से लौटते समय फ्रेंकलिन का विश्वास था कि वह स्तालिन के साथ सहयोग करने मे समर्थ होगे, लेकिन घर लौटने के कुछ समय बाद ही वह महसूस करने लगे कि मार्शल स्तालिन अपने वचनों का पालन नही कर रहे है। यह एक ऐसी चीज थी जिसे वह भुला नहीं सकते थे और भी मेरा खयाल है कि उन्होने स्तालिन को इस बारे में कई सख्त चिट्ठियाँ भेजी। मेरा खयाल है कि वह अब भी यही सोचते थे कि स्तालिन द्वारा उनके अपने वचनों का पालन कराया जाना सम्भव है, क्योंकि स्तालिन, चर्चिल और उन्होंने एक-साथ मिलकर युद्ध लड़ा है और एक-दूसरे के प्रति हरेक के हृदय में इतना आदर है कि अब भी मिलकर एक-साथ काम किया जा सकता है।

पहली मार्च को फ्रेंकलिन ने कांग्रेस के सम्मुख भाषण दिया और जब उन्होंने यह भाषण बैठकर ही देना स्वीकार कर लिया तो मैं जान गई कि

उन्होंने अपनी शारीरिक दुर्बलता को किसी हद तक स्वीकार कर लिया है। मैंने देखा कि अब वह लोगों से मिलना कम पसन्द करते थे और अब उन्हें दिन के वक्त भी आराम की जरूरत होती थी। वह छुट्टी चाहते थे और जब उन्होंने वार्म स्प्रिंग्स जाना तय किया तो मुझे खुशी हुई, क्योंकि, जैसा कि मैं बता चुकी हूँ, उन्हे वार्म स्प्रिंग जाने से हमेशा स्वास्थ्य और शक्ति-लाभ होता था।

पहली अप्रैल को; ईस्टर के इतवार के दिन मैं हमेशा की तरह टॉमी के साथ सूर्योदय की पूजा में भाग लेने गई और बाद के दिनों में अपने दैनिक कार्यक्रम मे हमेशा की तरह लगी रही; वार्म स्प्रिंग्स से मुझे नित्य टेलीफोन द्वारा खबर मिलती रहती थी। हमेशा खबर अच्छी ही मिलती थी, लेकिन १२ अप्रैल की दोपहर को लॉरा डेलानो ने टेलीफोन करके मुझे बताया कि फ्रैंकलिन जब कि अपना चित्र खिंचवा रहे थे, कुरसी पर बैठे-बैठे बेहोश हो गए और उन्हें उठाकर बिस्तरे पर ले जाना पड़ा। मैंने डॉक्टर मैकिन-टायर से बात की, लेकिन वह घबड़ाये नहीं और उस शाम को हमने वार्म स्प्रिंग्स जाना तय किया। डॉक्टर मैकिनटायर ने सलाह दी कि मुझे अपने दिन के काम पूरे करने चाहिएं नहीं तो उन कामों को छोड़कर मेरे अचानक वार्म स्प्रिंग्स चले जाने से बड़ी खलबली मचेगी।

जब कि मैं वाशिंगटन की सलग्रेव-क्लब के एक उत्सव में भाग ले रही थी मुझे अचानक टेलीफोन पर बुलाया गया। स्टीव अर्ली ने घबराये हुए स्वर में मुझे फौरन घर आने के लिए कहा। मैंने उससे उसकी घबराहट का कारण तक न पूछा। मैं दिल में जानती थी कि कोई भयंकर बात घटी है। लेकिन तो भी उस उत्सव को पूरा करना था अतः मैं दुःख प्रगट करके कि ज्यादा देर न रुक सकूँगी, घर चली आई। मैं मोटर में आ बैठी और व्हाइट-हाउस तक मुट्ठी भींचे बैठी रही। मेरा दिल जानता था कि क्या हो चुका है। स्टीव अर्ली और डॉक्टर मैकिटायर ने मुझे खबर सुनाई। उन्हें वार्म स्प्रिंग्स से डॉक्टर बुएन द्वारा खबर मिली कि पहले फ्रैंकलिन को लोहू-स्राव हुआ और बाद में उनका देहान्त हो गया। मैंने उसी शाम को डॉक्टर

मैकिनटायर और स्टीव के साथ वार्म स्प्रिंग्स जाने का प्रबन्ध किया।

जब उप-प्रेसीडेण्ट मुझसे मिलने आये तो इससे अधिक मैं कुछ न कह सकी कि मुझे उनके लिए कितना दुःख है, कि हमसे जिस तरह भी बन पड़ेगा हम उनकी मदद करेंगे और कि मुझे इस बात का भी दुःख है कि देश की जनता ने अपने नेता और मित्र को उस समय खोया जब कि युद्ध पूरी तरह जीता न गया था।

इसके बाद मैंने अपने लड़कों को तार भेजा : "तुम्हारे पिता का देहान्त हो गया। उन्हे आशा थी कि तुम अपने काम में लगे रहोगे और उसे पूरा करके ही छोड़ोगे।"

हम सारी रात हवाई जहाज में चलते रहे और वार्म स्प्रिंग्स में हमारा दूसरा दिन अति हृदय-विदारक दिवस था। यह एक भीषण प्रहार होते हुए न जाने क्यों इसे निजी दुःख समझने का अवसर न था। यह व्यक्ति जो मृत पड़ा था और जो कि मेरा पति था, असंख्य लोगों के लिए शक्ति और दृढ़ता का प्रतीक था अतः आज इन सब लोगों के दुःख का दिन था।

अन्त में रेल के स्टेशन की ओर जलूस धीरे-धीरे चलने लगा और हम गाड़ी में बैठकर वाशिंगटन की ओर रवाना हुए। गाड़ी के पिछले भाग मे, जहाँ अक्सर फ्रेंकलिन बैठा करते थे, अब वहाँ उनके शव के चारों ओर खड़े सैनिक पहरा दे रहे थे। मैं सारी रात एक पटरी पर लेटी हुई बाहर के उस दृश्य को देख रही थी जो कि फ्रेंकलिन को प्रिय था। मैने उन लोगो को भी देखा जो कि रास्ते के स्टेशनों पर रात-भर मेरे पति को अन्तिम श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने आये थे।

फ्रेंकलिन की अन्त्येष्टि क्रिया का उसी प्रकार प्रबन्ध किया गया जिस प्रकार कि वह चाहते थे। एक बार हमने एक प्रमुख व्यक्ति के शव को खुला ले जाते देखा जो कि हमे पसन्द न था और हम यह तय कर चुके थे कि हम ऐसा कभी न होने देंगे। मैंने कहा कि शव को पूर्वी कमरे में रखकर एक बार खोला जाय ताकि मैं एकान्त में कुछ फूल चढ़ा सकूँ। फ्रेंकलिन यह चाहते थे कि लोग उनको उसी तरह याद करें जैसे कि जीवित अवस्था में

स्मरण करते थे अतः उनके मित्र मृत आत्मा के लिए प्रार्थना करने पूर्वी कमरे में इकट्ठे हुए।

मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि केवल मेरे तीनों पुत्रो के अतिरिक्त सारा संसार पूर्वी कमरे मे इकट्ठा है। एलियोट सौभाग्यवश समय पर पहुँच पाया क्योंकि उसे उस हवाई जहाज में जाने का हुक्म मिला था जो कि श्री बारुच और अन्य व्यक्तियो को लन्दन से वापस लाया था। जिमी न्यूयार्क देर से पहुँचा जब कि हाइड-पार्क मे अन्त्येष्टि-क्रिया समाप्त हो चुकी थी, अतः उसने हमारे वाशिंगटन जाते समय रेल मे हमारा साथ दिया। फ्रैंकलिन जूनियर और जॉनी उस समय प्रशान्त महासागर के क्षेत्र में थे।

वाशिंगटन मे क्रिया-कर्म पूरा करके हम हाइड-पार्क लौटे। रास्ते मे कोई भी न सो पाया, अतः हम उन लोगो को देखते रहे जो सारे रास्ते हमारे सम्मान और समवेदना मे खड़े थे। मुझे उन लोगो का आना बड़ा हृदय-स्पर्शी प्रतीत हुआ जो कि अलस सुबह अपने घर छोड़कर हाइड-पार्क में समवेदना प्रगट करने आये थे।

मुझे पूरा विश्वास है कि फ्रैंकलिन ने जीवन की तरह मृत्यु को भी स्वीकार कर रखा था। उनमें धार्मिक भावना की प्रबलता थी और उनका धर्म एक अत्यन्त व्यक्तिगत धर्म था। मेरा खयाल है कि वस्तुतः वे ऐसा अनुभव करते थे कि ईश्वर से पथ-प्रदर्शक की प्रार्थना कर उसे पाया जा सकता है। इसी कारण उन्हें बाइबिल का २३वाँ स्रोत तथा प्रथम कॉरेन्थियन्स का १३वां अध्याय प्रिय था। वह अपने धर्म और धार्मिक विश्वासों का कभी उल्लेख नहीं करते थे और ऐसा प्रतीत होता था कि उन्हें अपने विश्वास के लिए कभी किसी बौद्धिक कार्रवाई का सामना नहीं करना पड़ा।

जो-कुछ उनके सामने आता था उसे हमेशा वह खुले दिमाग से देखने और समझने के लिए तत्पर रहते थे लेकिन उनके अपने विश्वास एक बालक के विश्वास की भाँति थे जिन्हें सामान्य प्रभावों द्वारा प्रौढ़ता प्राप्त हुई थी। उनका यह मूल विश्वास था कि धर्म एक बहुत बड़ा सहारा है और शक्ति तथा पथ-प्रदर्शन का स्रोत है, अतः मेरा विश्वास है कि मरते समय उसी

शान्ति और धैर्य से उन्होने अपना अन्त देखा था जिस प्रकार कि वह जीवन की अन्य घटनाओं को देखा करते थे।

अतीत की ओर देखते हुए मुझे खयाल होता है कि फ्रेंकलिन के माता-पिता ने अनजाने ही उन्हें अच्छी शिक्षा दी थी और अपने माता-पिता के सम्पर्क तथा विदेश-भ्रमण और देश-विदेश के रीति-रिवाजों के ज्ञान ने उनको उन परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए तैयार कर दिया था जिनका कि उन्हें अपने सार्वजनिक जीवन मे सामना करना पड़ा था। उनके माता-पिता यह कभी न चाहते थे कि वह राजनीति में भाग लें, लेकिन उनकी दी हुई शिक्षा ने फ्रेंकलिन को अपने कार्यों को पूरा करने के लिए अधिक सुयोग्य बना दिया था।

तथाकथित 'न्यू डील' अपनी आर्थिक व्यवस्था को कायम रखने के प्रयत्न के अतिरिक्त और कुछ न था। आज संसार को देखकर मैं कई बार सोचती हूँ कि अगर अन्य देशों में भी 'न्यू डील'-जैसा कोई प्रयोग हुआ होता तो शायद द्वितीय महायुद्ध में वे देश अधिक आत्म-विश्वास और सुरक्षा की भावना के साथ खड़े हो सकते थे। इन दो गुणो के पुनर्निर्माण के कारण ही युद्ध के प्रारम्भिक वर्षों में संयुक्त राष्ट्र अमरीका में इतना अधिक उत्पादन सम्भव हो सका और हम अपने इतिहास के सबसे भयंकर युद्ध में भाग लेकर उसे जीत सके। अतः जिन दो संकटो का मेरे पति को सामना करना पड़ा उनका वास्तव में एक-दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध था। यदि वह पहले संकट का सफलतापूर्वक सामना न कर पाते तो दूसरे संकट का सामना करने में भी वह असफल रहते, क्योकि यदि जनता किसी नेता का साथ नहीं देती तो वह नेता कुछ नहीं कर सकता।

यह बात तब और स्पष्ट हुई जब कि फ्रेंकलिन की मृत्यु के बाद मेरे पास सहानुभूति प्रदर्शित करने के लिए असंख्य पत्र आये। वे सब पत्र आज फ्रेंकलिन डी० रूजवेल्ट-लाइब्रेरी मे सुरक्षित रखे हुए हैं। उन पत्रों में बड़े ही हृदय-स्पर्शी शब्दों मे लोगों ने अपनी सम्पूर्ण कथा कह सुनाई है। उन्होंने बताया है कि किस प्रकार मेरे पति की बनाई हुई योजनाओं और

नीतियों के कारण उन लोगों के जीवन में सुधार हुआ। कई अवसरों पर तो फ्रैंकलिन ने उन्हें सम्पूर्णतया नष्ट हो जाने से ही बचाया था।

फ्रैंकलिन की तरह वाशिंगटन में रहकर निजी दोस्ती कायम रखना सबके लिए असम्भव है। एक ऊँचे सार्वजनिक पद पर रहकर कोई भी व्यक्ति साधारण अर्थों में न पति, न पिता और न मित्र रह सकता है; लेकिन मैं इस नतीजे पर पहुँची हूँ कि लोग फ्रैंकलिन को इसलिए याद करेंगे कि उनमें ऐतिहासिक आवश्यकताओं को समझने का महान् ज्ञान था और इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उन्हें अपने कर्तव्यों का भी भान था।

जब मैं उन लोगों के बारे में सोचती हूँ कि जिन्होंने फ्रैंकलिन की मदद की तो उन बहुत-से लोगों का चित्र मेरे सामने आ जाता है, जो कि उन लोगो से भिन्न थे, जिन्होंने उन्हें बौद्धिक सहायता दी और जो कि कई तरीकों से उनके प्रति अपने प्रेम और श्रद्धा को दरसाते थे। उनके दैनिक जीवन में घनिष्ठतम थे उनके सेक्रेटरी—लुई हौवे, जनरल वाटसन, [redacted] अर्ली, मार्विन मैकिनटायर, बिल हैसट, मार्गरेट लेहलैण्ड और ग्रेस टेली। डॉक्टर मैकिनटायर उनसे नित्य मिलते थे और उनके विश्वसनीय मित्र थे।

कई लोगों ने उनके भाषण-सम्बन्धी कार्यों मे अत्यन्त उल्लेखनीय सहायता दी थी। सैम रोसनमैन उनकी मृत्यु तक उनके साथ रहा था, जिसने न सिर्फ भाषण-सम्बन्धी कार्यों में ही बल्कि विशेष कार्यों में भी उनकी मदद की थी और बाब शेरवुड के साथ जो उनका सम्पर्क मित्रता में परिणत हो गया था। उनके कानूनी कार्य-सम्बन्धी भूतपूर्व साथी बेसिल ओ-कोनर उन कई बातों में उनका साथ देते थे जो कि उन्हें बहुत पसन्द थीं। उनके मन्त्रि-मण्डल के कई सदस्य तो केवल उनके काम मे ही साथ नहीं देते थे, बल्कि वे उनके सचमुच ही गहरे मित्र बन चुके थे।

सारांश यह है कि उन वर्षों में व्यतीत हुआ मेरा जीवन अवैयक्तिक था। ऐसा प्रतीत होता था कि मैंने अपने से बाहर किसी और व्यक्ति का निर्माण कर रखा है जो कि प्रेसीडेण्ट की पत्नी है। और जो मैं स्वयं थी वह अपने दिल की गहराइयों में कहीं खो चुकी थी। ह्वाइट-हाउस छोड़ने

तक मैंने इस भावना के साथ काम करके जीवन व्यतीत किया।

जिन लोगों के साथ कोई रहा हो और जिन्होंने उसकी अच्छी सेवा की हो, ऐसे व्यक्तियों से बिना हृदय व्यथित हुए विदा लेना आसान नहीं है, लेकिन यह भी पूरा हो गया। अब मैं एक बार फिर आत्म-निर्भर बन गई।